रक्षा सम्पदा संगठन
Defence Estates Organisation

सम्पदा भारती

14वां अंक

रक्षा सम्पदा महानिदेशालय

आज़ादी का अमृत महोत्सव

'सम्पदा भारती' पत्रिका में प्रकाशित लेख, कविता, कहानी आदि में प्रस्तुत विचार रचनाकारों का सृजन–क्षेत्र है। उनसे किसी प्रकार की समानता संयोग मात्र है।

<u>संपर्क सूत्र</u>

राजभाषा अनुभाग, रक्षा सम्पदा महानिदेशालय

रक्षा सम्पदा भवन, उलान बाटर मार्ग

दिल्ली छावनी – 110010

दूरभाष: 011 – 25674970

फैक्स: 011 – 25674965

ई–मेल: rajbhasha-dgde@gov.in

सम्पदा भारती

14वां अंक

प्रधान संरक्षक
अजय कुमार शर्मा
महानिदेशक, रक्षा सम्पदा

संरक्षक
इंद्रजीत कौर
वरिष्ठ अपर महानिदेशक

परामर्शदाता
विभा शर्मा
अपर महानिदेशक (राजभाषा)

संपादक
चारू तिवारी
सहायक निदेशक (राजभाषा)

संपादन सहयोग
श्री विक्रम सिंह, कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी

विशेष आभार
समस्त राजभाषा अनुभाग

साज-सज्जा एवं प्रकाशन
श्री प्रदीप मिश्र, प्रोग्रामर (सूचना प्रौद्योगिकी अनुभाग)

संबोधन : महानिदेशक, रक्षा सम्पदा

रक्षा सम्पदा संगठन के पूरे परिवार को 'हिन्दी दिवस' की हार्दिक बधाई।

मित्रो,

भाषा एक बुनियादी सरोकार है। यह प्रगति और सुधार के पक्षकारों का वो मंच है जिसके माध्यम से सांस्कृतिक, राजनीतिक और सामाजिक चेतना में सबकी भागीदारी परिलक्षित होती है। भाषा जितनी सरल, सहज होगी उसकी संप्रेषणशीलता का दायरा उतना ही बढ़ जाएगा। सरकारी कार्यालयों की भूमिका भी राजभाषा हिन्दी के प्रयोग के संबंध में बड़ी महत्वपूर्ण है। राजभाषा की प्रगति, समृद्धि में इनका योगदान अनेक स्तरों पर दिखलाई पड़ता है। कार्यालय में गृह पत्रिका के माध्यम से राजभाषायी दायित्व निर्वहन में यह प्रयास और उभरकर सामने आता है।

मौजूदा समय में इलेक्ट्रॉनिक पद्धति का दायरा काफी बढ़ा है। डिजिटलीकरण का उपयोग समाज के हर पहलू में बढ़ रहा है। इस पत्रिका का ई–वर्जन भी उसी दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है। मुझे खुशी है कि सरकार की डिजिटलीकरण नीति को लागू करने के प्रयासों के तहत 'सम्पदा भारती' पत्रिका के ई–वर्जन का प्रकाशन किया जा रहा है। परस्पर संवाद और सम्प्रेषण के लिए ऑनलाइन माध्यम एक सरल त्वरित उपाय है इसमें संदेह नहीं।

'सम्पदा भारती' पत्रिका रक्षा सम्पदा संगठन के विस्तृत कार्यक्षेत्र का प्रतिनिधित्व करती है। अन्य कार्यालयों की गृह पत्रिका की भाषा, विन्यास मुख्यतः कार्यालय विशेष तक सीमित होता है किन्तु इसका विन्यास, भाषा, रचना प्रयोगता पूरे भारत वर्ष में विस्तीर्ण कार्यालयों को मुखर मंच उपलब्ध कराती है।

इसमें कोई दो राय नहीं है कि पत्रिका में प्रकाशित लेख, कहानियां, कविताएं रचनाकारों की संवेदना एवं उनकी रचनाधर्मिता पाठकगण के समक्ष लाने में सफल रहे हैं। ये रचनाएं जीवन जीने के अलग परिदृश्य प्रस्तुत करती हैं, इनसे पाठक नयी उर्जास्विता से सराबोर हो पुनः विकट परिस्थितियों का सामना करने का साहस जुटा पाते हैं। संक्षेप में, पूर्व अंकों की भांति इस अंक में भी ये आयाम पत्रिका के प्रकाशन उद्देश्य को व्यापक और महत्त रूप प्रदान करेंगे।

अंत में, मैं 'सम्पदा भारती' के प्रकाशन अवसर पर संपादक मंडल एवं रचनाकारों के प्रयासों की सराहना करता हूँ, उन्हें बधाई देता हूँ।

जय हिन्द!

अजय कुमार शर्मा

एक संवाद : वरिष्ठ अपर महानिदेशक

हमारे लिए प्रसन्नता की बात है कि गृह पत्रिका 'सम्पदा भारती' के 14वें अंक का ई–विमोचन माननीय महानिदेशक महोदय द्वारा हिन्दी दिवस के अवसर पर किया जा रहा है।

'सम्पदा भारती' के माध्यम से महानिदेशालय अपने राजभाषायी दायित्वों का निर्वहन तो बखूबी करता ही है, साथ ही अपने कार्मिकों की लेखनी द्वारा रक्षा सम्पदा संगठन का परिचय भी विस्तृत कार्य क्षेत्रों को करा पाता है। मेरा हमेशा से यह मानना है कि भावों की जितनी सहज अभिव्यक्ति अपनी भाषा में हो सकती है वह अन्यत्र उतनी सहज नहीं है।

हम सभी जानते हैं कि भाषा मूल रूप से सम्प्रेषण का साधन है। यह निरंतर गतिशील है, जो भाषा हम आज बोल, लिख रहे हैं जरूरी नहीं है कि आने वाले 50 वर्षों में भी उसका यही स्वरूप रहे। सभ्यता, संस्कृति, धर्म और प्रशासन के उद्भव तथा विकास में भाषा का महत्वपूर्ण स्थान है। बदलते विश्व पटल के परिप्रेक्ष्य में हिन्दी की भूमिका के समीकरण भी परिवर्ती हो गए हैं। अब भारतीय संस्कृति और भाषाओं के प्रति लोगों की सोच एवं रुचि लगातार बढ़ रही है। वैसे भी संपर्क का दायरा जितना बढ़ेगा, भाषा का स्वरूप भी उतना ही नएपन की ओर प्रवृत्त होगा।

हिन्दी का बेहतरीन गुण इसका लचीलापन है। इसमें नए शब्दों के निर्माण, अन्य भाषाओं के शब्दों को आत्मसात करने का प्रबल आग्रह है। इसकी शैली में विशाल शब्दकोश को गढ़ने (नई तकनीक, नए आविष्कार, नई शब्दावली) की क्षमता है। विज्ञान की अनंत उपलब्धियों और संभावनाओं को हिन्दी में प्रभावी रूप से व्यक्त किया जा सकता है। हाल ही में ऑक्सफोर्ड ने हिन्दी के दस हजार शब्दों को अपने शब्दकोश में स्थान दिया है। समाहित करने की इस प्रक्रिया से भाषा शिथिल नहीं होती, उसका सशक्तिकरण ही होता है।

भाषा के मूल भाव के संरक्षण का दायित्व सरकारी कार्यालयों के लिए औपचारिकता मात्र नहीं है। उन्हें अपनी गृह पत्रिका रूपी मंच पर सृजनात्मक प्रतिभा को उभारने का अवसर प्राप्त होगा। यह आवश्यक भी है कि कार्यालयीन कामकाज से हटकर सृजन क्षेत्र में कलम चलाने के लिए भाषा विशेष में थोड़ा गहरा उतर कर सामग्री खंगालने में भाषा–ज्ञान का मंतव्य सिद्ध होता है।

अंत में, मैं पुनः सभी को उनकी भागीदारी के लिए सराहते हुए अपनी बात खत्म करती हूँ।

जय हिन्द!

इन्द्रजीत कौर

एक संवाद : अपर महानिदेशक (राजभाषा)

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि महानिदेशालय की गृह पत्रिका 'सम्पदा भारती' के 14वें अंक का ई–विमोचन किया जा रहा है। परंपरागत विधियों के स्थान पर आधुनिकतम तकनीकी पद्धतियों का प्रयोग निश्चय ही स्वागत–योग्य है। इससे न केवल बदलते माहौल के साथ सामंजस्य बिठाना सुगम होगा, बल्कि बहुमूल्य पर्यावरण का प्रभावी संरक्षण भी सिद्ध होगा।

पिछले दशकों में हिन्दी का महत्व न केवल राष्ट्रीय अपितु अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी बढ़ा है। ई–प्लेटफार्म व्यवस्था ने अनुवाद और कम्प्यूटर क्षेत्र में हिन्दी के नए, सुगम और प्रचलित रूप का जनाधार बढ़ाया है। यह सही है कि सरकारी कार्यालयों में मानक शब्दावली युक्त भाषा का प्रयोग स्वीकार्य है किन्तु निरंतर प्रयोग से यह मानक रूप भी लोकप्रिय हो सकता है। आवश्यकता इस कार्य में निरन्तरता बनाए रखने की है। साथ ही, मानक शब्दावली के अलावा लोक प्रचलित सरल शब्दों के प्रयोग से भाषा के प्रचार एवं प्रसार में और प्रगति हो सकती है।

मैं इस बात से आश्वस्त हूँ कि गृह पत्रिका जैसे सशक्त मंच पर अपनी रचनाओं के माध्यम से रक्षा सम्पदा संगठन के कार्मिक राजभाषा हिन्दी के प्रगामी प्रयोग क्षेत्र में अपना योगदान इसी भांति देते रहेंगे। पत्रिका के ई–वर्जन प्रकाशन से यह कार्य और सरल हो गया है।

मैं पत्रिका प्रकाशन से जुड़े संपादक मंडल और रचनाकारों की सराहना करते हुए उन्हें हार्दिक शुभकामनाएं और बधाई देती हूँ।

जय हिन्द!

विभा शर्मा

संपादकीय

'सम्पदा भारती' पत्रिका का नया अंक सुधी पाठकों के समक्ष प्रस्तुत है। पाठकगण इस बात से सहमत होंगे कि इस निरंतर बदलते माहौल में दृढ़संकल्प से कार्य करना महत्वपूर्ण हो गया है। सृजनशीलता की इसमें काफी बड़ी भूमिका है। पहले से भी ज्यादा खुद एवं परिवार का ध्यान रखते हुए खुद को मसरूफ़ रखकर हम अपनी मनोस्थिति बेहतर बना सकते हैं। वैसे भी कहा गया है 'खुद का ध्यान बेहतर, बाकी सब अपने आप हो जाता है।

'सम्पदा भारती' का 14वां अंक प्रस्तुत करते हुए एक *Sense Of Relief* महसूस हो रहा है। यह सही है कि कार्यालय की गृह पत्रिका का प्रकाशन साल भर में होने वाली अनेक राजभाषा दायित्वों की अनुशृंखला की एक कड़ी है, किन्तु इसके द्वारा साहित्यिक एवं कार्यालयी भाव–लालित्य, भाषा शैली, वाक्य विन्यास, पद बंध एवं शब्द पहचान सभी का परिचय आसानी से कार्यालय को करा पाते हैं। ये पत्रिका एक खुला वातायन है। इसके प्रकाशन में छोटे–छोटे मुद्दे भी काफी महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। पत्रिका में लेख, कहानी, कविता, संस्मरण देने के ख्याल मात्र से हमारे कार्मिक सृजन लेखन की ओर प्रवृत होते हैं, इससे राजभाषा क्षेत्र में गतिविधियां अनिवार्य रूप से बढ़ जाती हैं। अपनी कल्पनाशीलता को विस्तार देने एवं 'रचनाकार' के पद पर पहुंचने के लिए कार्मिक हिन्दी से जुड़ी अनेक साम्रगियों से रुबरु होते हैं, उन्हें खंगालते हैं। यही पत्रिका के प्रकाशन ध्येय को सार्थक बनाता है। पत्रिका प्रकाशन हिन्दी के प्रचार–प्रसार का प्रतीकात्मक न होकर विशुद्ध व्यावहारिक पक्ष है।

साथियो, रचनाकार के सार्थक प्रयास पत्रिका में अर्थवत्ता लाते हैं। उनका जितना दायित्व अपने रचना, कौशल के प्रति है, उतना ही महत्वपूर्ण परिवेश से जुड़कर उसे अभिव्यक्ति देना भी है। हमारे अनेक रचनाकारों ने इसी तथ्य पर काम करते हुए बेहतरीन कहानियाँ, कविताएं प्रस्तुत की हैं। उनके पूरे सरोकार आशावादी संकल्पना से अभिभूत हो छोटी–छोटी मुकरी रूप में जिस तरह से उभरे हैं वह देखते ही बनता है।

पिछले प्रयासों के अनुक्रम में इस बार भी हमने थोड़ा अलग करने की कोशिश की है। हमने अपने एक स्तम्भ 'स्वर्णाक्षर' में मूर्धन्य कवियों की प्रसिद्ध किन्तु बिसरा दी गयी कविताओं से पाठकों को जोड़ने का काम किया है। यह कितना सफल है आपकी प्रतिक्रियाएं ही बता पाएंगी। 'साहित्य मंजूषा' स्तम्भ में हमने प्रसिद्ध साहित्यकार के जीवन से जुड़े कुछ पल पाठकों के साथ साझा किए हैं। एक अन्य स्तम्भ 'साहित्य वीथि' प्रेरणास्पद और अनुभूतिपूर्ण है। इसमें प्रस्तुत रचना के मुख्य पात्र के जरिए हमने पाठक को निवर्तमान समय में ले जाकर उस समय के जीवन को देखने की कोशिश की है।

अंत में इस प्रकाशन से जुड़े सभी साथियों एवं रचनाकारों का हार्दिक धन्यवाद। महानिदेशालय के अधिकारियों का भी धन्यवाद जिनकी प्रेरणा, प्रोत्साहन और मार्गदर्शन से 'सम्पदा भारती' का यह रूप सामने आया।

चारू तिवारी
सहायक निदेशक (राजभाषा)

छावनियों के लिए 'ई-छावनी' पोर्टल का लोकार्पण

ई–छावनी पोर्टल लोकार्पण के अवसर पर माननीय रक्षा मंत्री का आगमन

माननीय रक्षा मंत्री और रक्षा सचिव द्वारा सीडीएस की मौजूदगी में महानिदेशक महोदया के सहयोग से दीप प्रज्ज्वलन

माननीय अतिथियों का स्वागत

माननीय रक्षा मंत्री का संबोधन

रक्षा मंत्री उत्कृष्टता पुरस्कार - 2020

कोविड प्रबंधन क्षेत्र में कुशल भागीदारी के लिए छावनी अस्पताल, पुणे और देवलाली को पुरस्कार

वर्चुअल पुरस्कार वितरण के अवसर पर उपस्थित अधिकारीगण

माननीय रक्षा मंत्री द्वारा वेबीनार के माध्यम से छावनी क्षेत्रों के कोरोना योद्धाओं के लिए सामूहिक जीवन बीमा योजना का शुभारंभ

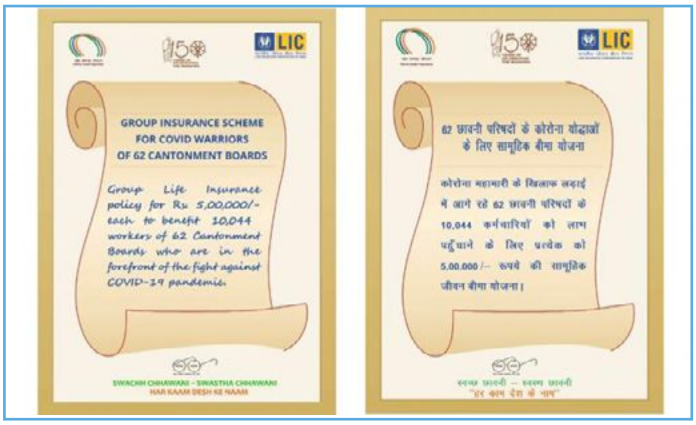

अनुक्रमणिका

क्र सं.	रचना		रचनाकार	पृष्ठ संख्या
1.	श्रद्धा (लेख)		शरयू एस पारेकर	8
2.	ग्रामीण समुदाय में परिवर्तन (लेख)		विक्रम सिंह	10
3.	अशक्तता (दिव्यांगता) : रक्षा सम्पदा संगठन एवं छावनी परिषद की भूमिका (लेख)		विजय राज शंकर	13
4.	देश की आन 'हिन्दी' (लघु कविता)		मनीष कुमार श्रीवास्तव	15
5.	जीवन और गुलाब (लेख)		मनीष कुमार श्रीवास्तव	15
6.	मेरी कलम (कविता)		पूनम जैन	16
7.	बच्ची की पुकार (कविता)		सुनंदा तगवाले शुक्ल	16
8.	बेटियाँ (लघु कविता)		दिलीप कुमार सेन	17
9.	पापा याद बहुत आते हैं.... (कविता)		विनीत कुमार राठौर	17
10.	कोरोना : एक वैश्विक महामारी (लेख)		संजय कुमार	18
11.	अपनापन (संस्मरण)		संजय प्रभाकर शिरोडे	19
12.	बचपन (कविता)		दुलीचंद कोरी	21
13.	यादें : बस छलक–छलक जाएं (साहित्य मंजूषा)		राजभाषा अनुभाग	22
14.	जो बीत गई (कविता)	स्वर्णाक्षर	राजभाषा अनुभाग	26
15.	निर्माण (कविता)	स्वर्णाक्षर	राजभाषा अनुभाग	26
16.	आशा का दीपक (कविता)	स्वर्णाक्षर	राजभाषा अनुभाग	27
17.	मेरा घर (कविता)	स्वर्णाक्षर	राजभाषा अनुभाग	28
18.	एक जवान याद (कविता)	स्वर्णाक्षर	राजभाषा अनुभाग	28
19.	लॉकडाउन निवाला (कहानी)		राहुल कुमार पटेल	29
20.	अंतिम सूर्यास्त (कहानी)		निशात शेख	30
21.	रंगचर्चा (लघु लेख)		राजभाषा अनुभाग	31
22.	सिल्वर वेडिंग (साहित्य वीथि)		राजभाषा अनुभाग	32
23.	प्रकृति (लघु कविता)		नरेश कुमार	45
24 .	चुप्पी लाई तन्हाई (लघु कविता)		दक्षिता सिंह	45

क्र सं.	रचना		रचनाकार	पृष्ठ संख्या
25.	महंगाई एक डायन (लघु लेख)		शिव कुमार 'धाकड़'	45
26.	समय (कविता)		संजय शंकर चौरे	46
27.	मानव से कोरोना वायरस का वार्तालाप (कविता)		नरेंद्र चौहान	46
28.	एक–सा रहता नहीं वक्त (कविता)		चन्दन कुमार चौधरी	47
29.	स्त्री विमर्श : पुरातन मान्यताएं (लेख)		शिव कुमार	48
30.	शिलांग यात्रा (संस्मरण)		अशोक पासवान	49
31.	माहिरा : 'द कोरोना वारियर' (कहानी)		शाहिना खातून	50
32.	भाई से सगा कोई नहीं (लघु कहानी)		संजय कुमार ओझा	52
33.	जिंदगी : खे रही नाव बचपन की (लेख)		भल्ला राम मीना	52
34.	कुछ कही, कुछ अनकही (लेख)		चन्दन कुमार चौधरी	54
35.	थोड़ी सी खाली बोतल (कहानी)		मो. शफीक अशरफ	55
36.	पीले फूल (कहानी)		अमन शर्मा	57
37.	चिंतामुक्त (लघु कहानी)		परमजीत सिंह	58
38.	जल (कविता)		रविकांत	59
39.	राजभाषा अनुभाग के कार्यकलाप		राजभाषा अनुभाग	60
40.	राजस्थान परिचय (लेख)		राहुल कुमार	63
41.	नारी (कविता)		धीरेंद्र तिवारी	65
42.	उड़ान (लघु कविता)		धीरेंद्र तिवारी	65
43.	नया नजरिया (लघु कविता)		धीरेंद्र तिवारी	65
44.	नकाब (कहानी)		जीतेंद्र डडवाल	66
45.	छुपम छुपाई	स्मृति शेष	राजभाषा अनुभाग	69
46.	दृश्य	स्मृति शेष	राजभाषा अनुभाग	69
47.	सात दिन का सफर	स्मृति शेष	राजभाषा अनुभाग	70
48.	तुम्हारे भीतर	स्मृति शेष	राजभाषा अनुभाग	70
49.	घर की काया	स्मृति शेष	राजभाषा अनुभाग	70
50.	दिलीप कुमार : एक याद	स्मृति शेष	दीपक कुमार ऋषि	71

हिन्दी के प्रयोग के लिए राजभाषा विभाग द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम 2021-2022 में निर्धारित लक्ष्य

क्र.सं.	कार्य विवरण	'क' क्षेत्र	'ख' क्षेत्र	'ग' क्षेत्र
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)
1.	हिन्दी में मूल पत्राचार (ई–मेल सहित)	'क' क्षेत्र (हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश, दिल्ली, हरियाणा, राजस्थान, बिहार, छत्तीसगढ़, झारखंड, मध्य प्रदेश और अंडमान व निकोबार द्वीप समूह संघ राज्य क्षेत्र) से 1. 'क' क्षेत्र को 100 प्रतिशत 2. 'ख' क्षेत्र को 100 प्रतिशत 3. 'ग' क्षेत्र को 65 प्रतिशत 4. 'क' क्षेत्र से 'क' व 'ख' क्षेत्र के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति : 'क' और 'ख' क्षेत्र को 100 प्रतिशत	ख' क्षेत्र (पंजाब, गुजरात, महाराष्ट्र, चंडीगढ़, दमन व दीव और दादरा व नगर हवेली संघ राज्य क्षेत्र) से 1. 'क' क्षेत्र को 90 प्रतिशत 2. 'ख' क्षेत्र को 90 प्रतिशत 3. 'ग' क्षेत्र को 55 प्रतिशत 4. 'ख' क्षेत्र से 'क' व 'ख' क्षेत्र के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति : 'क' व 'ख' क्षेत्र को 90 प्रतिशत	'ग' क्षेत्र ('क' तथा 'ख' क्षेत्रों में आने वाले राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रो को छोड़कर अन्य सभी राज्य व संघ राज्य क्षेत्र) से 1. 'क' क्षेत्र को 55 प्रतिशत 2. 'ख' क्षेत्र को 55 प्रतिशत 3. 'ग' क्षेत्र को 55 प्रतिशत 4. 'ग' क्षेत्र से 'क' व 'ख' क्षेत्र के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति : 'क' व 'ख' क्षेत्र को 55 प्रतिशत
2.	हिन्दी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिन्दी में	100 प्रतिशत	100 प्रतिशत	100 प्रतिशत
3.	हिन्दी में टिप्पण लेखन	75 प्रतिशत	50 प्रतिशत	30 प्रतिशत
4.	हिन्दी में डिक्टेशन या की–बोर्ड पर स्वयं द्वारा टंकण कार्य	65 प्रतिशत	55 प्रतिशत	30 प्रतिशत
5.	हिन्दी प्रशिक्षण (भाषा, टंकण व आशुलिपि)	100 प्रतिशत	100 प्रतिशत	100 प्रतिशत
6.	हिन्दी माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रम	70 प्रतिशत	60 प्रतिशत	30 प्रतिशत
		राजभाषा से संबंधित महत्वपूर्ण बैठकें		
7.	राजभाषा कार्यान्वयन समिति		वर्ष में 4 बैठकें (प्रत्येक तिमाही के दौरान एक बैठक)	
8.	नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति		वर्ष में 2 बैठकें (प्रत्येक छमाही के दौरान एक बैठक)	

संसदीय राजभाषा समिति की पहली उप समिति द्वारा 22-01-2021 को महानिदेशालय का निरीक्षण

समिति के उपाध्यक्ष महोदय प्रशस्ति पत्र प्रदान करते हुए

महानिदेशक महोदया द्वारा माननीय उपाध्यक्ष का सम्मान

निरीक्षण स्थल पर बैठक कक्ष का विहंगम दृश्य

समिति के उपाध्यक्ष महोदय, माननीय सांसदों और अधिकारियों द्वारा प्रदर्शन सामग्री का अवलोकन

संसदीय राजभाषा समिति की पहली उप समिति द्वारा 22-01-2021 को महानिदेशालय का निरीक्षण

श्री भृतर्हरि महताब, माननीय समिति के उपाध्यक्ष का आगमन

महानिदेशक महोदया द्वारा माननीय सांसदों का स्वागत

महानिदेशक महोदया और अपर महानिदेशक (राभा) द्वारा अवलोकन

निरीक्षण स्थल पर उपस्थित वरिष्ठ अधिकारीगण

निरीक्षण स्थल पर उपस्थित महानिदेशालय के अधिकारीगण और स्टाफ

श्रद्धा

"या देवी सर्वभूतेषु श्रद्धा–रूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।"

मृत्यु के द्वार पर भी टूट नहीं सकती वही है श्रद्धा। श्रद्धा सामर्थ्यवान होती है। श्रद्धा का मतलब भक्ति नहीं। किसी के लिए आदर होना, उसका हित चिंतक होना, उसकी सेवा करना इसे हम भक्ति कह सकते हैं। 'भक्ति' की अगली स्टेज है 'श्रद्धा'। भक्ति से उत्पन्न अनुभव श्रद्धा का मूल है। श्रद्धा का मतलब है दृढ़ विश्वास।

जहां मन और बुद्धि की शक्ति खत्म होती है वहीं श्रद्धा का आगमन होता है। शंकराचार्य ने मानव जीवन का महत्व तथा उसकी दुर्लभता का सार अच्छी तरह से समझाया है। इस विश्व में असंख्य जीव हैं। जन्म और मृत्यु दो घटनाएं पशु और मानव में एक समान हैं। अपने शरीर का पोषण, अपने अस्तित्व का रक्षण दोनों के लिए सहज, स्वाभाविक और नैसर्गिक नियम है।

मनुष्य के जीवन में सभी प्रकार के प्रसंग आते हैं। इष्ट–अनिष्ट, अपेक्षित–अनापेक्षित, सुखद–दुखद, अंधेरों में भटकते हुए उसके मन पर सभी प्रकार के आघात होते हैं और मन का स्वास्थ्य बिगड़ता है। अस्वस्थता–अशांतता, नैराश्य, उद्वेग, विफलता, इन सबसे मन का संघर्ष लगातार चलता रहता है और यह सब होता है "*Quest for knowledge*" के कारण।

विश्व में आस्तिक, नास्तिक, विज्ञानवादी, सभी मनुष्य हैं। मनुष्य आशावादी है इसलिए वह जीवन में संघर्ष दुःखों से, संकटों से उलझता रहता है। संघर्ष करता है और विश्वास के साथ जीवन व्यतीत करता रहता है।

रविन्द्रनाथ टैगोर कहते हैं 'जीवन सुख–दुःख की माला' है। दुख के साथ संघर्ष में बुद्धि 'विश्वास' से भरा जीवन खत्म करने से रोकती है। बुद्धि के आविष्कार को 'आत्मविश्वास' कह सकते हैं। मनुष्य का जीवन आत्मविश्वास से प्रेरणा पा उत्कर्ष करता है।

श्री कृष्ण ने गीता में कहा है "श्रद्धा मयोयम पुरुषः" हर व्यक्ति श्रद्धावान है चाहे वह आस्तिक हो, नास्तिक हो या विज्ञानवादी हो।

आज के कलयुग में मनुष्य को बार–बार 'विश्वासघात' का अनुभव करना पड़ता है क्योंकि उसके जीवन में स्थिरता नहीं है। जैसे सागर की रेत पर व्यक्ति अचल होकर खड़ा नहीं रह पाता, लड़खड़ाता है उसी प्रकार जीवन सागर में दुःख, नैराष्य, संकट आदि लहरें मनुष्य का जीवन स्थिर नहीं रहने देती। वह असुरक्षित महसूस करता है। 'श्रद्धा' उसे अंतर्मन से सुरक्षित करती है। श्रद्धावान व्यक्ति जैसे जीवन के सुख–दुःख के दलदल में खिला हुआ कमल है।

मनुष्य का साध्य 'ईश्वर' होना चाहिए जिसका साधन है श्रद्धा। श्रद्धा का आधार है भक्ति। जिस तरह सारी नदियाँ सागर की ओर बहती हैं उनका साध्य सागर है उसी तरह मनुष्य का साध्य है, खुशी, आनंद। दुख की निवृत्ति के कारण अक्षय आनंद की प्राप्ति केवल श्रद्धा से ही हो पाती है।

बहती नदी के किनारे उसके प्रवाह को नियमित करते हैं उसे दिशा देते हैं। इसी प्रकार जीवन भी नदी की तरह नियमों से बंधी 'जीवन–धारा' है। जन्म से लेकर मृत्यु तक मनुष्य का जीवन प्रवाहमय है। उसका एक किनारा है– आचार संहिता, सत्कर्म, सदाचार और दूसरा किनारा है– 'श्रद्धा'। ये दो किनारे मानव जीवन को प्रेरणा, स्फूर्ति से भरी दिशा देकर आगे ले जाने का काम करते हैं।

श्रद्धा एक ऐसी दिव्य शक्ति है जो कलयुग में भी सुख–दुःख से भरे जीवन सागर की तैराकी को आसान करा देती है। श्रद्धा एक ऐसा अस्त्र है जो हमें पर्वत जैसा स्थितप्रज्ञ बना देता है। जीवन में व्याप्त आँधी–तूफान को वापस लौटा देता है। श्रद्धा का बहाव ऐसी प्रबल धार है जो हमारे दुर्गुण धोकर शांत चित्त से संकट पार करा देती है।

स्व–श्रद्धा से श्रद्धा का महत्व कम नहीं होता। श्रद्धा तो मानव मन का आईना है। हमें ईश्वर के निकट ले आती है। परमेश्वर दर्शन की आस्था तो श्रद्धा का विकास है और सच्चिदानंद (सत् चित् आनंद) स्वरूप तो श्रद्धा का सर्वोच्च बिन्दु है।

अगर कभी किसी भक्त के पास ईश्वर की पूजा करने के लिए सामग्री का अभाव हो, तो भी उसके लिए काफी है एक 'श्रद्धा–सुमन'।

शरयू एस पारेकर
रक्षा सम्पदा कार्यालय, पुणे

वर्तमान महानिदेशक, रक्षा सम्पदा का हार्दिक स्वागत

श्री अजय कुमार शर्मा, महानिदेशक, रक्षा सम्पदा कार्यभार ग्रहण करते हुए

श्री अजय कुमार शर्मा, महानिदेशक, रक्षा सम्पदा का महानिदेशालय के अधिकारियों द्वारा स्वागत

निवर्तमान महानिदेशक श्री प्रचुर गोयल का विदाई समारोह एवं संबोधन

वर्तमान महानिदेशक श्री अजय कुमार शर्मा और महानिदेशालय के वरिष्ठ अधिकारीगण

ग्रामीण समुदाय में परिवर्तन

मानव जीवन में सामुदायिक स्तर पर सदैव परिवर्तन आते रहते हैं। परिवर्तन प्रकृति का नियम और जीवन की माँग है। जहाँ कहीं जीवन होगा, वहाँ परिवर्तन भी अवश्य होगा। नगरीय समुदायों की अपेक्षा ग्रामीण समुदाय कम गतिशील होते हैं। परन्तु इसका आशय यह कतई नहीं है कि उनमें गति होती ही नहीं। ग्रामीण समुदाय भी सतत परिवर्तनशील है, चाहे उसमें परिवर्तन की गति मन्द ही क्यों न हो।

विशाल भारत के किसी भी क्षेत्र में ग्रामीण समुदायों के इतिहास पर यदि नजर डाली जाए तो यह दृष्टिगोचर होगा कि सदियों से ग्रामीण समुदाय के कल्याण कार्यों का विकास परिवर्तन के कारण ही संभव हुआ है, क्योंकि वांछित दिशा में विकास परिवर्तन का ही दूसरा नाम है। गांवों का सामाजिक, आर्थिक तथा राजनैतिक विकास करने के लिए उनमें परिवर्तन की आवश्यकता होती है। ग्रामीण समुदायों के इन परिवर्तनों में कई कारक अपनी भूमिका अदा करते हैं जिनमें प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष, दोनों कारक शामिल किए जा सकते हैं। इनमें से कुछ निम्नलिखित हैंः–

प्राकृतिक कारकः– ग्रामीण समुदाय में परिवर्तन के प्राकृतिक कारकों में वे सभी प्राकृतिक तत्व शामिल हैं जो किसी विशिष्ट ग्रामीण समुदाय के आवास स्थान पर पाए जाते हैं। नदी, मैदान, समुद्र, बाढ़, तूफान, वर्षा, पर्वत, वनस्पति और पशु आदि ग्रामीण समुदाय को प्रभावित करने वाले कुछ प्रमुख प्राकृतिक कारक हैं। इन किसी में भी हुआ परिवर्तन ग्रामीण समुदाय के जीवन में भी दिखलाई पड़ता है। प्राकृतिक कारकों से ही भौगोलिक पर्यावरण बनता है जिसके प्रभाव सर्वविदित हैं।

सामाजिक कारकः– ग्रामीण समुदाय के जीवन पर सामाजिक कारकों का व्यापक प्रभाव होता है। ग्रामीण समुदाय को प्रभावित करने वाले मुख्य सामाजिक कारक हैं– पारिवारिक व्यवस्था, वैवाहिक पद्धतियां, स्थानीय धार्मिक रीति–रिवाज, परम्पराएं आदि। इनमें से किसी भी कारक में होने वाला परिवर्तन ग्रामीण समुदाय में परिवर्तन अवश्य लाता है।

आर्थिक कारकः– कृषि, व्यवसाय, उद्योग, गरीबी आदि को आर्थिक कारकों में शामिल किया जा सकता है। गाँवों में सिकुड़ती जमीन और शहरीकरण ने संयुक्त–परिवारों को सबसे अधिक चोट पहुंचाई है। वे अब धीरे–धीरे टूट रहे हैं। अब गाँवों में लगे उद्योग–धंधों में स्त्री–पुरुष के एक साथ काम करने का प्रभाव उनके संबंधों पर सीधा नजर आता है।

सांस्कृतिक कारकः– इन कारकों में विश्वास, मूल्य, धारणाएं, परंपराएं, मान्यताएं आदि सम्मिलित हैं। इनमें परिवर्तन होने से सामाजिक जीवन में व्यापक बदलाव आए हैं। शासन करने वाली संस्थाओं का भी ग्रामीण समुदाय के सांस्कृतिक जीवन पर स्पष्ट प्रभाव होता है।

राजनैतिक कारकः– राजनैतिक कारकों का ग्रामीण समुदायों पर व्यापक प्रभाव रहा है। देश की स्वतन्त्रता के पश्चात गाँवों में बहुत जागृति उत्पन्न हुई है। सरकार के अलावा राजनैतिक दलों का भी गाँवों पर प्रभाव पड़ता है।

अन्य कारकः– केवल प्राकृतिक पर्यावरण ही मानवीय समुदायों को नहीं बदलता, बल्कि मनुष्य अपना पर्यावरण स्वयं भी बनाता है जिसका उसके जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ता है। प्राविधिक कारकों की सहायता से मनुष्य एक नए पर्यावरण का निर्माण करता है और प्राकृतिक पर्यावरण को अपने अनुकूल बदलता है। इन प्राविधिक कारकों में आविष्कार सम्मिलित किए जा सकते हैं। अकेले रेडियो के आविष्कार से ही सामाजिक जीवन में सैकड़ों परिवर्तन हुए हैं। आटा पीसने, कपास ओटने, दाल बनाने आदि मशीनों के प्रचलन से ग्रामीण परिवारों में आमूल–चूल परिवर्तन हो रहे हैं। बिजली तथा उससे निर्मित शक्ति संसाधनों के आविष्कार से मानव जीवन के सभी पहलुओं में सार्वभौमिक परिवर्तन हुए हैं।

समुदायों में परिवर्तन विधियों की अपनी–अपनी सीमाएं होती हैं। अतः कोई भी एक विधि अकेले ये काम नहीं कर सकती। यहां बहुधा एक से अधिक विधियों के प्रयोग की आवश्यकता होती है। ग्रामीण विकास की दिशा में वांछित परिवर्तनों के लिए समझाने–बुझाने के साथ–साथ प्रदर्शन भी आवश्यक है। जहाँ कुछ लोग समझने के लिए तैयार ही नहीं होते, वहाँ

अनिवार्य विधि तथा सामाजिक दबाव की विधि से काम लेना उचित है। प्रत्येक परिवर्तन के लिए तदनुकूल शिक्षा दी जानी चाहिए। इस प्रकार सभी विधियों को भली–भांति समझकर अवसर और आवश्यकतानुसार उनका उपयोग करने से ग्रामीण समुदाय में वांछित परिवर्तन लाए जा सकते हैं।

शिक्षा व्यक्ति के व्यक्तित्व के विकास के लिए एक अत्यन्त महत्वपूर्ण कारक है। बच्चों को अच्छे व्यक्ति बनाने में आनुवांशिक प्रवृत्तियों के साथ–साथ उनकी शिक्षा का उचित ध्यान रखना भी अत्यावश्यक है। यही बात न्यूनाधिक रूप से समुदायों के विषय में भी सत्य प्रतीत होती है। भारत के गाँवों में बुनियादी शिक्षा से परिवर्तन लाने की चेष्टा की जा रही है और इसमें काफी सफलता भी मिली है। ग्रामीणों में सामुदायिक या राजनैतिक चेतना उत्पन्न करने के लिए उन्हें तदानुसार शिक्षा देना भी जरूरी है।

सामाजिक संगठन और संस्थाएं व्यक्तियों के व्यवहार पर नियन्त्रण रखने या उसमें परिवर्तन लाने हेतु सामाजिक दबाव विधि का सबसे अधिक उपयोग करते हैं। जैसा कि इसके नाम से ही स्पष्ट है, इसमें मनुष्य पर सामाजिक दबाव डालकर उसे बाध्य किया जाता है। उदाहरण के लिए, गाँवों में जाति पंचायतों द्वारा हुक्का–पानी बन्द करना। मानव जीवन की सामाजिकता के कारण यह विधि काफी प्रभावशाली सिद्ध होती है। परन्तु इस विधि से भी आन्तरिक परिवर्तन नहीं हो सकता।

परिवर्तन के क्षेत्रः– परिवर्तन के कारकों और परिवर्तन विधियों के अध्ययन के बाद अब ग्रामीण सामुदायिक जीवन के विभिन्न पहलुओं में हो रहे परिवर्तन का सिंहावलोकन करना भी आवश्यक है। ग्रामीण परिवेश में आए परिवर्तन विभिन्न क्षेत्रों में देखे जा सकते हैं।

पारिवारिक व्यवस्थाः– यद्यपि गाँवों में संयुक्त–परिवार को अब भी सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है परन्तु अब संयुक्त–परिवार ग्रामीण समुदाय की मुख्य इकाई नहीं रहे। उनका स्थान एकांगी परिवारों ने ले लिया है। वंश आधारित समूहों के स्थान पर हित आधारित समूह सुदृढ़ होते जा रहे हैं। व्यक्तिवाद बढ़ने से परिवार छोटे होते जा रहे हैं। सदस्यों पर परिवार का नियन्त्रण भी कम हो रहा है। परंतु अभी भी परिवार पर वंश समूह का नियन्त्रण पूर्णतया समाप्त नहीं हुआ है। शिक्षा से स्त्रियों के सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक जीवन से संबंधित अधिकारों में जाग्रति आ रही है। परिवार में उनकी स्थिति पहले से बेहतर होती जा रही है। आजकल विवाह संस्था भी परिवर्तित होती जा रही है और उसका दायरा बढ़ता जा रहा है। यद्यपि अंतर्जातीय विवाह बहुत कम हो रहे हैं, परंतु धीरे–धीरे लोगों के मन में इस संबंध में सकारात्मक भावना का विकास हो रहा है।

साक्षरता, स्वच्छता एवं स्वास्थ्यः– ग्रामीण साक्षरता की दर बढ़ रही है। समाज में बुनियादी शिक्षा पर ज़ोर दिया जा रहा है। अनेक राज्य गाँव की प्रत्येक बालक–बालिका के लिए मुफ्त अनिवार्य शिक्षा का प्रावधान कर रहे हैं। गाँवों से युवक–युवतियां उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए शहरों में जाने लगे हैं। अब गांवों में न केवल प्राथमिक विद्यालय बल्कि माध्यमिक विद्यालय व उच्च माध्यमिक विद्यालय भी देखे जा सकते हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में अनेक ग्रामीण संस्थाएं, कृषि केंद्र व महाविद्यालय और डिग्री कालेज भी स्थापित किए जा रहे हैं। गांवों में साक्षरता के साथ–साथ स्वच्छता पर भी बहुत ध्यान दिया जाने लगा है। गोबर से खाद बनाने के कारण गलियों में अब गोबर और कूड़ा कम दिखलाई पड़ता है। पंचायतें गलियों, कुओं, सार्वजनिक स्थानों आदि की सफाई की ओर विशेष ध्यान देती हैं। गांवों में डॉक्टरों की तैनाती से ग्रामीण स्वास्थ्य का स्तर उन्नत हुआ है। सरकार द्वारा परिवार नियोजन के प्रचार–प्रसार से गांवों में विशेष जागृति उत्पन्न हुई है। स्वास्थ्य उपायों की सुलभता से स्त्रियों के स्वास्थ्य में अधिक सुधार हुआ है। सरकार की ओर से टीकों और पेटेन्ट दवाओं के प्रबंधन से चेचक, मलेरिया आदि बीमारियों पर नियंत्रण हुआ है। ग्रामीण लोगों के स्वास्थ्य पर चाय, तम्बाकू और वनस्पति घी के बढ़ते प्रयोग से विपरीत प्रभाव पड़ रहा है।

खानपान एवं वेशभूषाः– खानपान और वेशभूषा के आधुनिक तौर–तरीके अपनाए जा रहे हैं। पुरुषों और महिलाओं की वेशभूषा में बदलाव आया है।

आवास एवं रहन–सहनः– गाँवों में आवास की दशा अब पहले से धीरे–धीरे बेहतर होती जा रही है। गाँवों में पक्के मकानों की संख्या बढ़ती जा रही है। मकान पहले से अधिक हवादार और साफ–सुथरे हैं। आराम के साधन पहले से अधिक हैं। गाँवों में बिजली पहुँचने से घरों में रेडियो, टेलीविज़न, एसी, कूलर, पंखों आदि का प्रयोग किया जाने लगा है। प्रत्येक घर में शौचालय का निर्माण किया जाता है। अब गांवों में चूल्हे के जगह गैस का उपयोग बढ़ता जा रहा है। हाल ही में तो सौर ऊर्जा के इस्तेमाल का चलन भी शुरू हो गया है जिस पर सरकार की ओर से सब्सिडी भी दी जाती है।

राजनैतिक कार्यकलापः– पंचायती राज की स्थापना से गाँवों में राजनैतिक चेतना बढ़ी है। वयस्क मताधिकार से लोकतान्त्रिक व्यवस्थाओं में जनता की भागीदारी से चुनी हुई सरकार के कार्यों की विवेचना की जाने लगी है। अखबार, टेलीविज़न, रेडियो, सोशल मीडिया आदि से ग्रामीण समुदायों का राजनैतिक ज्ञान बढ़ रहा है। सरकार के कार्यों में जनता की रूचि और उनकी समीक्षा से वास्तविक लोग लाभान्वित हो रहे हैं।

निष्कर्षः– ऐतिहासिक अध्ययनों से पता चलता है कि आन्तरिक तथा बाह्य, दोनों कारक हमारे ग्रामीण समुदायों में प्राचीन काल से परिवर्तन लाते रहे हैं। ऐतिहासिक एवं राजनैतिक परिवर्तनों ने न केवल ग्रामीण सामुदायिक जीवन बल्कि देश की समूची व्यवस्था को भी परिवर्तित किया है जिसके फलस्वरूप पुराने तौर–तरीकों के स्थान पर नित्य नई–नई धारणाओं ने जन्म लिया है। आज भारतीय ग्रामीण समुदाय हर परिस्थिति में देश के विकास और प्रगति में अपना बहुमूल्य योगदान दे रहा है। यह एक सुखद एवं सकारात्मक पहलू है।

विक्रम सिंह
रक्षा सम्पदा महानिदेशालय

अशक्तता (दिव्यांगता) : रक्षा सम्पदा संगठन एवं छावनी परिषद की भूमिका

अशक्तता (दिव्यांगता) क्या है और यह कितने प्रकार की होती है:– देश के समक्ष अशक्तता एक प्रमुख समस्या है। वर्तमान में ऐसी बहुत सी अशक्तताएं (दिव्यांगता) हैं जो हमें जन्म से होती हैं लेकिन उनके बारे में हमें पता नहीं होता है या फिर देरी से पता चलता है। मेडिकल साइंस में कुछ निश्चित प्रकार की अशक्तताएं निर्धारित की गई हैं। वर्तमान में *UNCRPD, RCI* और *RPWD Act* 2016 में 21 प्रकार की अशक्तताएं बतलाई गई हैं।

डिसैबिलिटी अशक्तता (दिव्यांगता) :

1	पूर्ण अंधता	2.	कम दृष्टि विकार
3.	कुष्ठ रोग	4.	श्रवण बाधिता
5.	लोकोमोटर अक्षमता	6.	बौनापन
7.	बौद्विक अक्षमता	8.	मानसिक बीमारी
9.	ऑस्टिम स्वलीनता	10.	सेरेब्रल पल्सी
11.	मस्क्यूलर डायस्ट्रॉफी	12.	गंभीर न्यूरो संबंधी बीमारी
13.	विशिष्ट लर्निंग अशक्तता	14.	बहु स्क्लेरोसिस
15.	स्पीच एवं लैंग्वेज अशक्तता	16.	थैलेसीमिया
17.	हैमोफेलिया	18.	सिकल सेल बीमारी
19.	बौनापन एवं अंध रोग सहित बहु अशक्ताएं		
20.	एसिड अटैक पीड़ित	21.	पार्किन्सन बीमारी

हमारा सामना ज्यादातर जिन अशक्तताओं से होता है, वे कुछ इस प्रकार की हैं:–

1. **श्रवण बाधिता** (Hearing Impairment) – बधिरता या बहरापन एक आम बीमारी है, इसमें मनुष्य की सुनने की शक्ति कम हो जाती है। व्यक्ति जब सुन नहीं पाता है तो वह कुछ समझ नहीं पाता जिस कारण से बोलने की शक्ति भी प्रभावित होती है।

2. **बौद्धिक अक्षमता** (Intellectual Disability) – बौद्धिक अक्षमता (*Intellectual Disability*) एक मानसिक रोग है। जिसमें व्यक्ति की संज्ञानात्मक शक्ति (*Congnative Functioning*) काफी हद तक न्यून होती है और दो या दो से अधिक समायोजनात्मक व्यवहारों में कमी देखी जाती है। पहले इसे मानसिक मंदता (*Mental Retardation*) कहते थे। वर्तमान समय में इसे बौद्धिक अक्षमता (*Intellectual Disability*) कहा जाता है।

3. **मानसिक बीमारी** (Mental Illness) – मनोविकार (*Mental Illness*) किसी व्यक्ति के मानसिक स्वास्थ्य की वह स्थिति है जिसे किसी स्वस्थ व्यक्ति से तुलना करने पर सामान्य नहीं कहा जा सकता। स्वस्थ व्यक्तियों की तुलना में मनोरोग से ग्रसित व्यक्तियों का व्यवहार असामान्य होता है। यहां व्यथा अथवा असमर्थता स्वभाव में अंतर्निहित होती है। इसे मनोरोग विशेषज्ञ मानसिक रोग, मानसिक बीमारी अथवा मानसिक विकार भी कहते हैं।

4. **स्वलीनता** (Autism Spectrum Disorder) – स्वलीनता 'ऑटिस्म' मास्तिष्क के विकास के दौरान होने वाला विकार है जो व्यक्ति के सामाजिक व्यवहार और संपर्क को प्रभावित करता है। हिन्दी में इसे आत्म विमोह भी कहते हैं। इससे प्रभावित व्यक्ति सीमित और दोहरावयुक्त व्यवहार करता है। जैसे एक ही काम को बार–बार दोहराना अथवा पसंद

की चीज न मिलने पर बहुत तेज गुस्सा हो जाना। यह सब बच्चे के तीन से चार साल की उम्र से पहले से शुरू हो जाता है। इसमें भाषा विकास की समस्या भी देखने को मिलती है।

5. **लोको मोटर अक्षमता** (Loco motor Disability) – "लोको मोटर" शब्द लैटिन भाषा के लोको से लिया गया है, जिसका अर्थ है – एक जगह से दूसरी जगह जाना और मोटर का अर्थ है गति। दूसरे शब्दों में इसका अर्थ है एक जगह से दूसरी जगह पर आवाजाही में असमर्थता यानी पैर में अशक्तता। लेकिन सामान्य तौर पर इसे हड्डियों, जोड़ो और मांसपेशियों से संबंधित अशक्तता के रूप में लिया जाता है। यह किसी व्यक्ति की गतिविधियों जैसे– चलना, हाथ में चीजें उठाना या पकड़ना आदि में समस्याएं पैदा करता है। लोको मोटर अशक्तता का अर्थ है अंगों की गति में प्रतिबन्ध।

6. **सेरेब्रल पाल्सी** (Cerebral Palsy) – सेरेब्रल पाल्सी एक न्यूरोलॉजिकल डिसआर्डर है जो बच्चे की शारीरिक गति, चलने–फिरने की क्षमता को क्षति ग्रस्त करता है। "सेरेब्रल" शब्द का अर्थ मस्तिष्क के दोनों भागों से है और पाल्सी शब्द का अर्थ शारीरिक गति की कमजोरी या समस्या से है। यह ऐसी अशक्तता है जिसमें बच्चे को वस्तु पकड़ने और चलने में कठिनाई होती है। इस रोग में मस्तिष्क के कुछ हिस्सों में क्षति के कारण वालंटरी या एन्वॉलन्टरी या दोनों प्रभावित हो जाते हैं। सेरेब्रल पाल्सी संक्रामक नहीं है। यह जरूरी नहीं कि यह बौद्धिक या संज्ञानात्मकता क्षमता को प्रभावित करे। साथ ही यह रोग बढ़ता भी नहीं है। इसलिए उम्र बढ़ने के साथ यह और ज्यादा गंभीर नहीं होता।

अशक्तता–आरोग्यता क्षेत्र में रक्षा सम्पदा संगठन एवं छावनी परिषदों का योगदान – अशक्तता कोई भी हो, समाज को आसानी से स्वीकार्य नहीं होती। अशक्तता आरोग्यता क्षेत्र में भारत सरकार के तत्वाधान में सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय कार्य कर रहा है। वर्तमान सरकार ने दिव्यांगजनों के हित को ध्यान में रखकर बहुत से अच्छे निर्णय लिए हैं जिससे दिव्यांगजनों का और भी अच्छे से विकास हो सके। इसके अलावा दिव्यांगजनों के लिए अलग से **"दिव्यांगजन सशक्तिकरण विभाग"** का गठन भी किया गया है जिससे उन्हें होने वाली समस्याओं का समाधान किया जा सके।

छावनी क्षेत्रों में रह रहे दिव्यांग बच्चों के सम्पूर्ण विकास को ध्यान में रखते हुए रक्षा सम्पदा संगठन और अधीन कार्य करने वाली छावनी परिषदों ने अपने–अपने क्षेत्रों में दिव्यांग बच्चों के लिए स्कूल खोले हैं। जैसे– आगरा में 'चिराग' स्पेशल स्कूल, कानपुर में 'प्रेरणा', दिल्ली में 'कृपा', अम्बाला में 'वात्सल्य', इलाहाबाद में 'उड़ान' और लखनऊ में 'सक्षम' ऐसे स्पेशल स्कूल हैं जिनमें दिव्यांग बच्चों को प्रशिक्षित किया जा रहा है। इससे वे दैनिक कार्यों को आसानी से कर सकने में सक्षम हो रहे हैं।

रक्षा सम्पदा संगठन प्रति वर्ष 'रक्षा सम्पदा दिवस' के अवसर पर छावनी क्षेत्रों में चल रहे स्कूलों को उनके इस क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान के लिए रक्षा मंत्री उत्कृष्टता पुरस्कार से भी सम्मानित करता है। दिव्यांगजनों के उत्कृष्ट और चहुमुखी विकास के साथ उनके शिक्षण–प्रशिक्षण में रक्षा सम्पदा संगठन एवं छावनी परिषद अपना बहुमूल्य योगदान दे रहे हैं।

विजय राज शंकर
छावनी परिषद, इलाहाबाद

मेरा कोना

देश की आन 'हिन्दी'

सरल, सुबोध, सहज और सुमधुर है जिसकी परिभाषा,
वो है हम सबकी प्यारी एक मात्र हिन्दी भाषा,
इस भाषा की गहराई में, हैं विविध रूप समाएं
अंग्रेजी, उर्दू, फारसी यह सबको गले लगाए
बन के यह सम्पर्क भाषा, सबसे परिचय करवाए
परिचय से संबंध बने और संबंध बनते जाएं
आजादी के संघर्ष में भी हिन्दी आगे आई,
क्रांतिकारियों ने जब अंग्रेजों पर मिलकर करी चढ़ाई
एक स्वर में क्रांतिकारियों ने हिन्दी को स्वीकारा,
अंग्रेजों से लोहा ले, उन्हें देश से पछाड़ा
हिन्दी है भारत के जन–जन की आस
विश्व पटल पर आज जब, है हिन्दी का जोर
राष्ट्रभाषा बनने पर तब क्यों मचता है शोर
हिन्दी को यदि उसका, है स्थान दिलाना,
काफी नहीं है सिर्फ
हिन्दी दिवस/हिन्दी पखवाड़ा मनाना
जरूरत है हिन्दी को स्वेच्छा से अपनाना
कर सम्मान हिन्दी का
इसे 'राष्ट्रभाषा' बनाना।

जीवन और गुलाब

काँटों से भरा यह जीवन, फिर भी लाजवाब है
सबकी हैं अपनी ख्वाहिशें, सबके अपने ख्वाब हैं,
खिलते हैं जीवन में जो, हम सब वो गुलाब हैं,
वो गुलाब जो जीवन में अपनी खुशी लुटाता
काँटों के बीच रह नित अपना फर्ज़ निभाता
क्षणभंगुर इस जीवन में हमें यह पाठ पढ़ाता,
परोपकार का इस जीवन से है गहरा नाता
ख्वाहिशों और सपनों का नहीं है कोई अंत
एक हुई समाप्त तो दूसरी होगी तुरंत
लघु जीवन हो या दीर्घायु, जन्म सफल है यदि जान जाओ
"परहित सरिस धरम नहीं भाई, पर पीड़ा सम नहीं अधमाई"
(तुलसीदास कृत 'श्रीरामचरितमानस' से उद्धृत)

है गुलाब का इस जीवन में, हम सबको यह संदेश
खुषियां बिखेरे हम जग में, चाहे ख्वाहिशें रहें शेष।

मनीष कुमार श्रीवास्तव
रक्षा सम्पदा निदेशालय, पुणे

जय हिन्द

मेरा कोना

मेरी कलम

परिवर्तन का बिगुल बज रहा
कठिन डगर लगती है।

कठिन डगर के अंतर में ही,
मानवता पलती है ।।
सीमाओं को आज लांघकर,
तोड़ रही द्वारों को,
अंगीकार करो मिलकर अब
अगणित सुविचारों को ।।

संघर्ष निरत परिवर्तन है, पर्याय लिखती हूँ,
आज अटल अतरंगी अध्याय लिखती हूँ।

नाच रहा मम मन मयूर,
अति उल्लासित गाता है।
लाल–लाल सूरज है निकला,
देखो नव प्रभात है।
छटा बिखेरे दसों दिशायें
दसों देश समझो तुम,
सीमाएं चौबंद हुई हैं,
थर्राहट समझो तुम ।।
सिंह गर्जना गरज पड़ी, अब न्याय लिखती हूँ,
आज अटल अतरंगी अध्याय लिखती हूँ ।।

करो प्रगति सब साथ खड़े,
अब जोड़ दिए हैं बंधन ।
मानवता के सेवक हो,
तुम्हें अखिल अभिनंदन।
कर्तव्य प्रखर तव अडिग रहे,
हम देख रहे हैं सपने,
तुम्हें देखती हैं सब आँखें,
तुम ही मेरे अपने ।।
मेरे मन के ज्वारों को, निश्पाय लिखती हूँ,
आज अटल अतरंगी अध्याय लिखती हूँ ।।

पूनम जैन
छावनी परिषद, सागर

बच्ची की पुकार

(एक बालिका इस दुनिया में आना चाहती है, लेकिन उसे आने नहीं दिया जा रहा है। वह अपनी माँ से कहती है....)

हे माँ.......
जिस भँवर में हम गिरे हैं,
–उससे हमें बाहर निकलने तो दो,
बाहर की हसीन दुनिया,
इन नन्ही आँखों से देखने तो दो....
बगीचे में जो फूल खिले हैं,
उसकी धीमी–धीमी सुगंध,
साँसों में भरने तो दो,

भँवरे की भाँति जरा,
हल्का गुनगुनाने तो दो,
लहलहाते हरे–भरे खेतो में,
हमें जरा, मचलने तो दो.....

नील गगन में पंछी बन,
हमें खुशी से उड़ने तो दो,
नदी की बहती जलधारा में,
ठंडी आह..... भरने तो दो....

नीले समुंदर में
मछली बन के मचलने तो दो,
मोती बन के सीप में,
लुका–छिपी खेलने तो दो...

हे माँ.....
अभी हम जरा संभले हैं, संवरे हैं,
इस दुनिया में आने तो दो,
ईश्वर की बनाई इस दुनिया में,
हमें जी भर के जीने तो दो...

सुनंदा तगवाले शुक्ल
छावनी परिषद, पुणे

मेरा कोना

बेटियाँ

है समस्या बेटे अगर समाधान हैं बेटियाँ,
तपती धूप में जैसे ठण्डी छाँव हैं बेटियाँ।

है दूर वे हम सबसे, है फिक्र उन्हें हमारी,
करती दुआएं हरदम, खैरख्वाह हैं बेटियाँ।

है बेटा कुलदीपक, घर ये रोशन जिससे,
दो घर रोशन जिनसे, आफताब हैं बेटियाँ।

हैं लोग वे जल्लाद, जो खत्म उन्हें हैं करते,
टिका जिन पर परिवार, वह बुनियाद हैं बेटियाँ।

मांगती है मन्नत, बेटों की खातिर दुनिया,
अपनी नजर में दोस्तों महान हैं बेटियाँ।

दिलीप कुमार सेन
छावनी परिषद, इलाहाबाद

पापा याद बहुत आते हैं.....

पापा याद बहुत आते हैं, पापा याद बहुत आते हैं
छुट्टी लेकर बहुत दिनों पर देखो मेरे पापा आये
सुन्दर सी एक गुड़िया लाये मुझको टॉफी खूब खिलाए
मेरे संग भी मेरे पापा कुछ दिन ही घर रहने आये
छुट्टी लेकर बहुत दिनों पर देखो मेरे पापा आए

वर्दी पहन कर ड्यूटी जाते, बंदूक भी संग ले जाते
सीमा पर पहरा देते, कभी–कभी घर आते
हम सो जाते सांझ ढले ही, सीमा पर वो चौकन्ना रहते

कई दिनों तक सो नहीं पाते, पापा जब बॉर्डर पर जाते
कोई दुश्मन गर दिख जाए, उसे मार वहीं गिराते
वीर सिपाही मेरे पापा, भारत माँ के बेटे हैं
देश की आन, बान और शान हैं

युद्ध कहीं भी जब होता है, पापा याद आते हैं
कभी हिमालय की गोदी में, कभी घाटियों में तपते हैं
बारिश हो या हो तापमान, हो शोलों से जलता आसमान
पापा सब ठीक कर जाते

वो दिन बड़े फक्र का था पापा के सम्मान का था
जब चार सिपाही कंधो पर मेरे पापा को लाते हैं
कफन तिरंगे का पहना नाम अमर कर जाते हैं

पापा याद बहुत आते है, पापा याद बहुत आते हैं.....

विनीत कुमार राठौर
छावनी परिषद, इलाहाबाद

कोरोना: एक वैश्विक महामारी

आज पूरा विश्व कोरोना महामारी से प्रभावित है। कोरोना (*Corona Virus Disease*) या कोविड–19 एक वायरस के तौर पर सबसे पहले चीन के वुहान शहर में सामने आया था। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने कोरोना महामारी को वैश्विक महामारी कहा है।

इस महामारी का सबसे पहले नवम्बर, 2019 में पता चला। शुरू में हालांकि इसका विस्तार सीमित था पर बाद में यह धीरे–धीरे विश्व के लगभग सभी देशों में फैल गया। कोरोना वायरस संक्रमण से फैलता है, जिसके लक्षण आमतौर पर खांसी, जुकाम की तरह होते हैं। इस संक्रमण के कारण हमें सूखी खाँसी, साँस लेने में तकलीफ, जुकाम, सिर दर्द होना जैसी समस्या आने लगती है और आगे चलकर यह हमारी मृत्यु का कारण भी बन सकता है।

इस वायरस के फैलने के पीछे अनेक कारण बताए गए। जिनमें चमगादड़ों में सबसे पहले फैलने फिर उसके संपर्क में आने पर मानव जाति में संक्रमित होने की बात विश्व स्वास्थ्य संगठन स्तर पर कही गई। हालांकि पूरे सच का पता अब तक नहीं लग पाया है।

यह एक बेहद खतरनाक वायरस है जो आमतौर पर दिखाई नहीं देता और एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति के संपर्क में आने पर संक्रमण से फैलता है। भारत में यह संक्रमण पहली बार फरवरी, 2020 में पाया गया।

इस महामारी से लड़ने के अथक प्रयासों के बाद स्वदेशी कोविशील्ड व कोवैक्सीन तैयार कर ली गई हैं। बारी–बारी से सभी को टीके लगाने के प्रयास युद्धस्तर पर जारी हैं। फिर भी हमें पूर्व की भाँति कोरोना महामारी से बचने के लिए विश्व स्वास्थ्य संगठन और स्वास्थ्य मंत्रालय द्वारा जारी दिशा–निर्देशों का अनुपालन करना होगाः–

- किसी संक्रमित व्यक्ति को आम लोगों से अलग या खास तौर पर बनाएं गए कोविड अस्पताल में रखा जाना चाहिए।
- प्रभावित व्यक्ति को, जब तक वह पूर्ण स्वस्थ्य न हो जाए, कम–से–कम 14 दिनों तक आम लोगों के संपर्क से दूर रखना चाहिए।
- एक–दूसरे के संपर्क में आने से बचना चाहिए, दो गज की सामाजिक दूरी का पालन करना चाहिए।
- बाहर निकलते समय मास्क का इस्तेमाल अवश्य करना चाहिए।
- समय–समय पर कम–से–कम 20 सेकेंड तक अपने हाथों को अच्छे से धोना चाहिए।
- एल्कोहल युक्त सेनेटाइजर का इस्तेमाल करना चाहिए।
- इस बीमारी के लक्षण दिखने पर तुरंत अस्पताल से संपर्क करना चाहिए तथा विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा समय–समय पर जारी निर्देशों का पालन करना चाहिए।

आज आवश्यकता इस बात की है कि हम सरकार द्वारा जारी सभी दिशा–निर्देशों का पूर्णतः अनुपालन करें तथा अपनी बारी आने पर कोविड वैक्सीन अवश्य लगवाएँ जिससे देश को कोरोना महामारी के चुंगल से मुक्त किया जा सके।

"स्वस्थ रहें, सुरक्षित रहें"

संजय कुमार
रक्षा सम्पदा निदेशालय, पुणे

अपनापन

वैसे तो हम सभी बातें भूल जाते हैं, लेकिन कुछ घटनाएं दिलों में इस तरह से बस जाती हैं कि निकलते नहीं बनती। उन्हीं में से एक याद आज भी ज्यों की त्यों ताजा है।

यह उन दिनों की बात है, जब मैंने खड़की छावनी परिषद में नौकरी करना आरंभ किया था। हमारे दिन मजे से गुजर रहे थे। उसी दौरान मैंने छावनी परिषद अस्पताल में पहली बार रक्तदान किया और तभी मुझे पता चला कि मेरा ब्लड ग्रुप 'ओ निगेटिव' है, जो कि बहुत ही कम मात्रा में उपलब्ध हो पाता है। जरूरत पड़ने पर मेरा ब्लड किसी भी व्यक्ति को चढ़ाया जा सकता है। लेकिन जब मुझे जरूरत होगी तो सिर्फ 'ओ निगेटिव' ब्लड ही मुझे चलेगा। मुझे जरूरतमंद लोगों को ही रक्तदान करने की सलाह दी गई और मेरा नाम 'ओ निगेटिव' की रक्तदाता सूची में शामिल कर लिया गया।

इसी दौरान के.ई.एम. अस्पताल से एक कैंसरग्रस्त महिला, जो मेरे ब्लड ग्रुप की थी, को खून देने की अपील की गई। मैंने भी तुरंत अस्पताल में जाकर अपना रक्तदान किया और दो–चार दिनों के बाद उस महिला से ऐसे ही मिलने चला गया। उस महिला की कीमोथेरेपी हो रही थी। उस महिला की उम्र शायद 60 या 65 वर्ष रही होगी। कीमोथेरेपी के कारण उनके सिर पर बाल नहीं थे। मुझे याद है, शायद मैंने उनके साथ 8 से 10 मिनट का समय ही बिताया था। इस दौरान मैंने उस महिला से उसके घर के बारे में तथा बीमारी के बारे में पूछा। स्वयं का परिचय भी उसे दिया। वह महिला मेरी माँ की उम्र की थी।

इस घटना को डेढ़ दो वर्ष हो गए। मैं इसे पूरी तरह भूल गया था। इस बीच हमने नया मकान भी ले लिया। नए मकान में गृह–प्रवेश का न्योता सभी रिश्तेदार तथा परिजनों को बाँटा गया। शाम के समय घर के सभी लोग मेहमानों की आव–भगत में लगे थे। इन मेहमानों में मेरे पिताजी के सहकर्मी श्री कुलकर्णी जी अपने साथ एक बूढ़े व्यक्ति को लेकर आए। उन्होंने उनका मेरे पिताजी से परिचय करवाया।

कहने लगे, "यह हमारे पड़ोसी, देशपांडे जी हैं। मैं इन्हें अपने साथ लाया हूँ।"

मेरे पिता जी ने देशपांडे जी का स्वागत किया। थोड़ी ही देर में पिताजी को यह महसूस हुआ कि देशपांडे जी बेचैन हैं। कुछ कहना चाहते हैं। वे खुद ही पिताजी से बात करने लगे।

"आपने तो मुझे न्योता नहीं दिया। मैं तो बिन बुलाया मेहमान हूँ।"

पिताजी ने कहा, "कोई बात नहीं। आप तो कुलकर्णी जी के मित्र हैं और कुलकर्णी जी हमारे, आप तनिक भी संकोच न करें।"

देशपांडे जी ने अपनी बात आगे बढ़ाते हुए कहा "आपके घर में कौन–कौन हैं? क्या आप का बेटा है?" पिताजी ने उनकी हाँ में हाँ भरते हुए मुझे बुलाया।

मैं दूसरे कमरे में मेहमानों के साथ था इसलिए मुझे घर के हॉल में चल रही बातों का कोई अंदाजा नहीं था। पिताजी ने मुझे बुलाया।

मैं बाहर गया। मैंने उन महानुभाव की उम्र का अंदाज लगाते हुए उनके चरण–स्पर्श किए। तभी उन्होंने मुझसे पूछा, "आपका नाम क्या है? क्या आप रक्तदान करते हैं? क्या आपने के.ई.एम. अस्पताल में रक्तदान किया है?"

मैं खुद असमंजस भाव में, मेरे सामने क्या चल रहा है, यह समझने की कोशिश कर रहा था। पर अब मेरी समझ में जो बात आई वो यह थी कि जिस महिला से, मैं डेढ़–दो वर्ष पहले मिला था ये उनके पति हैं और वह महिला देशपांडे जी की पत्नी थी। मैं रक्तदान के उपरांत उनसे जो मिला था, जो सहज वार्तालाप किया था, वही शायद वह उन्हें भा गया था। मेरे प्रति उनके इसी स्नेहभाव ने उनके पति को भी मेरा परिचय दे दिया था, उसी का परिणाम था कि ये आज यहां मेरे घर, 'गृह प्रवेश' समारोह में पधारे थे।

कुलकर्णी जी को जब मेरे पिताजी ने गृह प्रवेश का न्यौता दिया, उस समय देशपांडे जी भी वहां मौजूद थे। उन्होंने यह न्यौता देख लिया। यह शिरोडे कौन है? कहाँ रहता है? क्या यह वही तो नहीं जिसने मेरी पत्नी को रक्तदान किया था? इन सारे प्रश्नों के उत्तर ढूंढने देशपांडे जी हमारे घर खुद पधारे थे।

देशपांडे जी मुझसे कहने लगे, "रक्तदान करना आम बात है। लेकिन बाद में वक्त निकालकर जो तुमने मेरी स्वर्गीय पत्नी से बातचीत की, वह उसे भा गई। मेरी पत्नी तुमसे मिलना चाहती थी, लेकिन यह बात रह गई और वह स्वर्गवासी हो गई पर मैं खुश हूँ जैसे भी हो, मैं तुम्हें ढूँढ पाया और अपनी पत्नी का स्नेह तुम तक पहुंचा पाया।"

ये घटना 26–27 वर्ष पुरानी है पर जब भी मैं सोचता हूँ यही लगता है एक अजनबी से थोड़ी देर बात करना मतलब जिंदगी भर याद रह जाने वाला एक खुशनुमा अहसास है, जिसकी चमक और खुशबू आज भी मुझे अपने में सराबोर करती रहती है। खुशबू का भंडार सौगात में मिल गया। मैं जब भी इस घटना को याद करता हूँ मेरा मन ताजगी से भर जाता है।

इसके बाद मैंने काफी बार रक्तदान किया। हर बार जब भी रक्तदान करने के बाद मरीज से मिला मरीज के चेहरे की खुशी ने एक नया अनुभव दिया।

एक बूढ़ा आदमी इतने बड़े शहर में मुझे सिर्फ धन्यवाद देने के लिए लगातार प्रयासरत रहा और अपने प्रयास में सफल भी रहा, ये मेरे लिए कभी न भूलने वाला रोमांचकारी अनुभव बन गया।

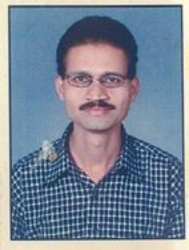

संजय प्रभाकर शिरोडे
छावनी परिषद, खड़की

मेरा कोना

बचपन

बीते दिन बचपन के, आसान नहीं है भुलाना
वो मासूम जीवन वो नटखट जमाना।

कोई फिक्र न थी पढ़ने–लिखने की
न ही कोई होड़ थी किसी से आगे बढ़ने की।

स्लेट पर लिखा पहला अक्षर मुश्किल है यादों से मिटाना
बीते दिन बचपन के, आसान नहीं है भुलाना।

कभी बारिश में भीगना, कभी कागज की नाव चलाना
कभी दोस्तों से रूठना, कभी लड़ना कभी मनाना।

बीते दिन बचपन के आसान नहीं है भुलाना
वो स्कूल में पढ़ना कभी सर की डाँट खाना।

आज भी याद आता है, वो स्कूल ना जाने का बहाना
बीते दिन बचपन के, आसान नहीं है भुलाना।

वो बचपन के खेल, छुपम–छुपाई
कभी गिल्ली डंडा तो कभी लड़ाई।

याद आता है वो रंग बिरंगी पतंगों का उड़ाना
वे पेंच लड़ाना, कभी पतंग काटना कभी कट जाना।

बीते दिन बचपन के आसान नहीं है भुलाना
कितनी भी करें कोशिश, मुश्किल है उन्हें वापस लाना।

दुलीचंद कोरी
छावनी परिषद, सागर

"आप लोग जीवन में जो कुछ जियें – गहराई से जियें। दुःख हो सुख हो, उदासी हो या बैलौस मस्ती हो, बिछुड़न हो या प्रेमाकुलता हो – जो कुछ भी हो – आपका अपना हो। उसे शिद्दत से जीने के बाद, अपने अनुभव को अपने ढंग से, अपने शब्दों में व्यक्त करें।"

डॉ. हरिवंश राय बच्चन

'साहित्य मंजूषा'

'साहित्य मंजूषा' स्तंभ में हम इस बार हिन्दी के प्रसिद्ध साहित्यकार अमृतलाल नागर के जीवन से जुड़ी कुछ स्मृतियों का वर्णन उन्हीं की जुबानी पढ़ेंगे। कही–सुनी ये स्मृतियाँ पूरे वेग से उमड़ती–घुमड़ती अपने में सभी को आप्लावित करती चलती हैं, हमें उस माहौल, समय में ले जाती हैं, जिसकी धकापेल, धींगामुश्ती आज के मुकाबले बिल्कुल ठहरी, पर बेहद जीवंत है। छोटे सिमटे दायरे सब कुछ अपने में आत्मसात करते हमें उस जीवन की कुछ झलक 'यादें : बस छलक–छलक जाएं' रूप में देते चलते हैं।

यादें : बस छलक-छलक जाएं

किसी भी शहर का 'चौक' उस शहर विशेष की खास अभिजात्यपूर्ण सांस्कृतिक सम्पदा की मानो खुली किताब है। ऐसा क्या है, जो चौक से छुपा है, शहर के सभी रंगों की छटा चौक की हर सड़क, गली में बिखरी दिखाई देती है। चौक मिली–जुली संस्कृति का गवाह है। अगर यह मौन तोड़े, तो कितने ही अनकहे दृश्य मुखर हो उठें। चौक पर लोग मिलते हैं, बिछुड़ते हैं और खो जाते हैं। इस चौक का अमृत लाल नागर जी के जीवन में विशेष महत्व है, इसके प्रभाव से वे उम्र भर मुक्त नहीं हो पाए। उनके समय का चौक हमारे आज के वर्तमान को भी कहीं–न–कहीं प्रासंगिकता देता चलता है। ये चौक, इससे जुड़ी घटनाएं और उन घटनाओं का नागर जी के आने वाले जीवन पर जो प्रभाव पड़ा और उसका जो परिणाम निकला उन सभी का जिक्र हमें, आपको सीधे उनकी मनोस्थिति के धरातल के दर्शन करवा देता है।

बरसों पहले के लखनऊ के पुराने चौक का दृश्य हम आज भी देख सकते हैं। चौक के पास इलाहाबाद बैंक की बहुत बड़ी इमारत है। सामने वाले हिस्से में एक परिवार रहता है और सुरक्षा के मद्देनजर बैंक शाखा इमारत की पिछली तरफ़ है।

जिंदगी से जुड़े हल्के–गहराते रंगों को देखते–देखते एक बालक अपने छज्जे पर खड़ा, सुबह से दोपहर, दोपहर से शाम करता है। बड़ा मोह है उसे चौक के दृश्यों को देखने का। बीसवीं सदी की शुरुआत है।

अच्छे घरों में लड़कों को भी आम लोगों के साथ उठने–बैठने नहीं दिया जाता है। ललचाई रूह में यह बालक चौक के दृश्य आत्मसात करता है। बालक की सारी दुनिया चौक में समा गई है। रंग बदलते लम्हे, सोना बिखेरते क्षण, लोगों की मिली–जुली आवाजों में रंगीन होते जा रहे हैं। रात को दादी से लगकर सोता है, तो कई कहानियाँ दादी सुनाती हैं। दादी की ममता में नहाता यह बालक बड़ा हो रहा है। गुज़रे हुए कल के दृश्य एक–एक करके आँखों के सामने से चलचित्र की तरह गुजरने लगते हैं। फिर धीरे–धीरे आज हो जाते हैं। सोने से पहले, बालक अपनी निंदियाई आँखों में ये दृश्य बंद कर लेता है। फिर ये दृश्य ख्वाबों के साथ–साथ दिखाई देते हैं। सुबह की पहली किरण के साथ मद्धम सुर में आवाज़ें आनी शुरू होती हैं। बैल के गले की घंटियों की आवाज़ें, उघड़ते पटों का शोर, सड़क पर चलते कदमों की आहटें, बालक प्रसन्नचित्त हो उठता है।

अब दोस्तों की ज़रूरत महसूसने लगा है। पहले दोस्त बनते हैं छापे के अक्षर। सात वर्ष का होते–होते छापे से अच्छी–खासी दोस्ती हो गई। दोनों एक–दूसरे को देख कर पहचान लेते हैं। छापे के अक्षरों के माध्यम से कितने ही संसार सामने खुलते चले गए।

क्या होता है ये अपना शहर? सारा परिवार संग लिए घूमो, तो भी हमारा कितना कुछ शहर में ही रह जाता है। पता नहीं, अपनी गोद में ले लेने को क्यों आतुर रहता है यह? न यह माँ होता है, न बाप, पर इसका आकर्षण उनसे कहीं ज्यादा होता है। शहर कहीं नहीं जाता, पुराने बरगद की तरह एक ही स्थान पर खड़ा होकर आपकी प्रतीक्षा करता है। यह कितना मीठा एहसास है कि कोई आपकी प्रतीक्षा कर रहा है।

नागर जी बताते चलते हैं –"मेरे पितामह इलाहाबाद बैंक से जुड़े हुए थे। उसकी शाखाएँ खोलते हुए लखनऊ में आ बसे थे। तब से हम यहीं हैं, वो ज़माना, नवाबी का ज़माना था। उठने–बैठने के आदाब, घुटने मोड़ कर कैसे बैठें, सलाम कैसे करें, बड़ों का अदब कैसे करें, ये सब चार–पाँच बरस की आयु से ही सिखाया जाता था।"

ज़रा सा अतीत में खो कर नागर जी फिर कहने लगे, "बड़ा भव्य व्यक्तित्व था हमारे दादा का। उनके रटाए अनेक श्लोक अब तक कंठस्थ हैं। दादी बताती थीं कि दादा, पंडित मदनमोहन मालवीय के साथ इलाहाबाद में रुद्रपाठ किया करते थे।"

नागर जी ज़रा–सा रुककर मीठे से हो गए। अपनी दादी उन्हें बहुत प्रिय रहीं। बोले, "वे एक चरित्र थीं। गरीब परिवार की थीं। जब वे बातें सुनातीं, तो एक–एक सीन यों सँवारतीं कि आँखों के आगे जी उठता।

हमारी पड़दादी का देहांत हुआ, तो घर में खाना बनाने वाला कोई न था, घर सँभालने के लिए हमारे दादा का ब्याह सात बरस की दुधमुँही बच्ची के साथ कर दिया गया। गरीब की कामकाजी लड़की बड़े काम की होती थी। आते ही दादी ने चूल्हा–चौका सँभाल लिया।

जिस लखनऊ में हमने होश पाया, उसकी साफ स्मृतियाँ मानस–पटल पर अंकित हैं। दादा–दादी के लाड़ और पिता के अनुशासन में हम बड़े हुए। 1921 से हमें सब याद है। उन दिनों नवाबी तो नहीं थी, पर चलन वही था। अदबो–आदाब, महफिलें, गोष्ठियाँ खूब चलतीं। जन्माष्टमी है, होली है, वसंत पंचमी है, तो रईसों के घरों में घंटों महफिलें जमतीं।

दादाजी का प्रसाद हमारे पास संस्कृत के श्लोक हैं। हम उनके चिर–ऋणी हैं। बड़े–बड़े लोगों के दर्शन उन्हीं की बदौलत हुए। आचार्य श्याम सुंदरदास, जिन्होंने नागरी प्रचारिणी सभा की स्थापना की थी, रोज सवेरे सैर करके दादाजी के पास घर आते।

मेरी और गली के लड़कों की दूरी उतनी ही रही, जितनी मेरी और सड़क की, बचपन में ताश नहीं खेला, पतंग नहीं उड़ायी, डोर नहीं लूटी, लट्टू नहीं घुमाया, सड़क अपरिचित–सी लगती रही। अपरिचित भी और रहस्यमय भी। अकेले मन में कितने ही दोस्त और दुश्मन पैदा होते हैं, जो आने वाले दिनों में उसके भीतर की सृष्टि को बढ़ने में सहायता देते हैं। तब की सृष्टि के चित्र आज मेरे मन पर हैं, दीवारों पर नहीं। मन तो कभी मैला नहीं हुआ चित्र भी वैसे ही नए–नए बने रहे। बचपन में गली में न खेल पाने का दुख आज भी सालता है।

दादा–दादी की लाडली दुल्हन थीं मेरी माँ। दादा, माँ से घूँघट नहीं निकलवाते थे। बाजार जाने से पहले हमेशा पूछते, "बिट्टो, कुछ लाना है?" माँ को हमने खाली पान लगाते देखा है। माँ सुंदर थीं।

पढ़ने का हमारा अभ्यास सात वर्ष की आयु से ही था। माँ के लिए **गृहलक्ष्मी** पत्रिका आती थी, **सरस्वती** घर के लिए। मैं दोनों पत्रिकाएँ चट कर जाता था।"

नागर जी प्रसिद्ध बंगला साहित्यकार शरतचंद्र चटर्जी के बहुत बड़े प्रशंसक थे। साहित्यकारों से जुड़ी घटनाओं का जिक्र करते हुए कहते है– "शरत् बाबू ने हमसे कहा था, जो लिखो, कल्पना से मत लिखो, अनुभव से लिखो।

"शरतचंद बड़े विलक्षण पुरुष थे। सन् 1930 से 1937 तक, प्रतिवर्ष घर बनवाते रहे। अपने गाँव के घर में आराम कुर्सी पर बैठे रहते। आसपास दोनों ओर छोटी–छोटी मेजें रहतीं। मेज पर रहते 555 सिगरेट के टिन। दोनों ओर कलम व पेंसिलें करीने से सजी रहतीं।"

प्रेमचंद के बारे में उनकी राय कुछ यों थी– प्रेमचंद लेखन को जीवन के निकट लाए। जहाँ हमारी दृष्टि नहीं जाती थी, वहाँ उनकी गई। 1935 में जब हमारा पहला कहानी–संग्रह छपा, तब उनका पत्र आया था, लिखा था– वाटिका के फूल सूँघे। अच्छी खूशबू है। मैं तुमसे यथार्थवादी कहानियाँ चाहता हूँ।

"बनारस में हम जयशंकर प्रसाद से मिलने जाया करते थे। बड़ा स्नेह करते थे। वे बनिए थे, हम ब्राह्मण, सो हमें पाँव नहीं छूने देते थे। पिता की मृत्यु के बाद हम गए। हमें वही सब सुनने की आदत थी जो लोग कहते थे– भैया, तुम पर गाज गिरी है! पर प्रसाद जी ने कहा– जब तक तुम्हारे भाई नाबालिग हैं, हिसाब–किताब माँ को समझा दिया करो। यह सुनकर हमारा हौसला बढ़ा।"

नेहरू परिवार से अपनी अंतरंगता का उल्लेख करते हुए वे थोड़ा अतीत में जाते हुए उठते है– "1934 में हमने **सुनीति** पत्रिका निकाली। उन्हीं दिनों हमारे छोटे भाई के पाँव की हड्डी बढ़ गई थी। उसका ऑपरेशन होना जरूरी था। उसे अस्पताल में भरती करवा दिया गया। अस्पताल में पुरुषों के वार्ड के साथ ही महिलाओं का वार्ड भी था। उन्हीं दिनों हमें पता चला कि स्वरूपरानी जी (जवाहरलाल नेहरू की माँ) बीमार हो कर आई हैं। हम उन्हें देखने को उत्सुक थे। उन दिनों जवाहरलाल जी जेल में थे। बस एक–दो कश्मीरी परिवार ही उन्हें देखने आता। स्कूल के बाद हमें जो समय मिलता, उसमें हम उनकी सेवा में लगे रहते।

स्वरूपरानी जी का पलँग शाम के समय बालकनी में लगा दिया जाता था। इस बदलाव से उनका जी खुश रहता था। पंडित जी उनके सिरहाने बैठे रहते।

बालकनी में श्रीमती स्वरूपरानी का पलँग है। पंडित जी माँ से बातें कर रहे हैं। हम उस वक्त छज्जे पर खड़े थे। हमने देखा, श्रीमती बख्शी की कार आ कर रुकी, उसमें से श्रीमती कमला नेहरू के भाई कैलाशनाथ कौल उतरे। वे अपनी बहन को ले कर आए थे। कमला नेहरू का स्वास्थ्य ठीक नहीं चल रहा था, पर हमने देखा, उनके चेहरे पर दिव्यता थी। हमने घबराकर नेहरू जी से कहा, माताजी आई हैं, पंडितजी ने पूछा, कौन माता जी? शरमाते हुए हमने कहा, आपकी बहू!

यह सुनकर पंडित जी कब उठ कर गए, कब सीढ़ियाँ उतरे कुछ पता नहीं चला। हमने देखा, पंडित जी और कैलाशनाथ जी ने अपने हाथ कस कर पकड़े। उस दिव्य रथ पर बैठ कर कमला जी ऊपर आईं! मुस्कुराती हुई, जैसे कोई आलोक हो। आकर उन्होंने सास के पाँव छुए। सास के पास ही बैठ गई।"

नागर जी रस–मर्मज्ञ साहित्यकार थे। गूढ़ कला पारखी उस समय की गायिकाओं का पूरा सम्मान करते थे। बरबस कह उठते है– "रेडियो का आकर्षण काफ़ी रहता है। एक घटना याद आ रही है। बेगम अख्तर का लखनऊ रेडियो से गाना होने वाला था। उसके पहले हमारा नाटक था। यह नाटक पाँच मिनट ज्यादा हो रहा था। इससे कम होने से उसके मायने ही बदल जाते। जब बेगम अख्तर आईं, नाटक आधा हो चुका था। इंतज़ाम के मुताबिक हमें इशारा हुआ कि वे आ गई हैं। हम प्रसारण से उठ कर गए। बेगम को कहा– बेगम साहिबा, एक मुसीबत में फँस गया हूँ। हमें बड़ी तकलीफ हो रही है, पर क्या करें! अगर आप पाँच मिनट बाद अपना गाना शुरू करें, तो मुश्किल हल हो सकती है।

बेगम मुस्करा कर बोलीं, ये आप क्या कर रहे हैं पंडित जी? आप जाइए? नाटक करवाइए। हम खुशी से पाँच मिनट बाद गाएँगे। हमें उनकी यह उदारता आज तक नहीं भूलती।

लता (लता मंगेशकर) की आवाज़ सुन कर बड़ी खुशी होती हैं। बहुत अच्छी लड़की है। सुब्बुलक्ष्मी (एम एस सुब्बुलक्ष्मी) भी बड़ी सीधी–सादी स्त्री हैं।"

नागर जी सद्गृहस्थ थे। चाहे ब्याह बचपन में ही हो गया था पर उसकी गंभीरता ताउम्र महसूसते रहे। अपनी पत्नी के बारे में बताते हुए कहते है– "मेरी पत्नी पढ़ी–लिखी नहीं हैं, पर मेरा कागज़ खो जाए, तो वही ढूँढ़ सकती हैं।

हम घर के पिछवाड़े में लिखते—पढ़ते हैं, पर उन्हें रसोई में बैठे—बैठे पता चल जाता है कि हमारा पान खत्म हो गया या हमें चाय की तलब लगी होगी।"

मुंबई के संघर्ष के दिनों में पत्नी ने जिस मनोयोग से उनका साथ दिया पूरी उम्र उस सहयोग के आभारी रहे। मुंबई तो उनका संघर्ष क्षेत्र था। बंबई तो हम पिता के देहांत के बाद घूमने गए थे।

बंबई ने नई दृष्टि से जीवन दिया। सुख—दुख का अनुभव सिखाया। तब फिल्म इंडस्ट्री में पढ़े—लिखे लोग ज्यादा न थे। पृथ्वीराज, जगदीश सेठी, जयराज वगैरह ही पढ़े—लिखे थे। यहाँ हम सात बरस रहे।"

ये सात वर्ष नागर जी के लिए मील का पत्थर साबित हुए। यहीं उन्हें अपने लक्ष्य, ध्येय का ज्ञान हुआ और एक राह पकड़ कर उस पर चल पड़े। भाषा के बारे में कहते चलते हैं— "हर भाषा का सम्मान होना चाहिए, जब तक यह नहीं होगा, लोगों की आपसी फूट कम नहीं होगी।" भाषा के बारे में उनका मंतव्य एक सदी पश्चात भी सटीक समसामयिक है।

प्रस्तुतिः **राजभाषा अनुभाग**

राष्ट्रभाषा के बिना राष्ट्र गूंगा है
- महात्मा गांधी

स्वर्णाक्षरः इस स्तंभ में हम लब्धप्रतिष्ठ कवियों की रचनाएं प्रस्तुत कर रहे हैं।

जो बीत गई

जो बीत गई सो बात गई!
जीवन में एक सितारा था,
माना, वह बेहद प्यारा था,
वह डूब गया तो डूब गया;
अंबर के आनन को देखो,
कितने इसके तारे टूटे,
कितने इसके प्यार छूटे,
जो छूट गए फिर कहाँ मिले;
पर बोलो टूटे तारों पर
कब अंबर शोक मनाता है!
जो बीत गई सो बात गई!
जीवन में वह था एक कुसुम,
थे उस पर नित्य निछावर तुम,
वह सूख गया तो सूख गया;
मधुवन की छाती को देखो,
सूखीं कितनी इसकी कलियाँ,
मुरझाईं कितनी वल्लरियाँ,
जो मुरझाईं फिर कहाँ खिलीं;
पर बोलो सूखे फूलों पर
कब मधुवन शोर मचाता है;
जो बीत गई सो बात गई!
जीवन में मधु का प्याला था,
तुमने तन–मन दे डाला था,
वह टूट गया तो टूट गया;
मदिरालय का आंगन देखो,
कितने प्याले हिल जाते हैं,
गिर मिट्टी में मिल जाते हैं,
जो गिरते हैं कब उठते हैं;
पर बोलो टूटे प्यालों पर
कब मदिरालय पछताता है!
जो बीत गई सो बात गई!
मृदु मिट्टी के हैं बने हुए,
मधुघट फूटा ही करते हैं,
लघु जीवन लेकर आए हैं,
प्याले टूटा ही करते हैं,
फिर भी मदिरालय के अंदर
मधु के घट हैं, मधु प्याले हैं, ...
जो सच्चे मधु से जला हुआ
कब रोता है, चिल्लाता है!
जो बीत गई सो बात गई!
——————

हरिवंश राय 'बच्चन'

निर्माण

नीड़ का निर्माण फिर–फिर,
नेह का आह्वान फिर–फिर!
वह उठी आँधी कि नभ में
छा गया सहसा अँधेरा,
धूलि धूसर बादलों ने
भूमि को इस भाँति घेरा,
रात–सा दिन हो गया, फिर
रात आई और काली,
लग रहा था अब न होगा
इस निशा का फिर सवेरा,
रात के उत्पात–भय से
भीत जन–जन, भीत कण–कण
किन्तु प्राची से उषा की
मोहिनी मुस्कान फिर–फिर!
नीड़ का निर्माण फिर–फिर,
नेह का आह्वान फिर–फिर!
वह चले झोंके कि काँपे
भीम कायावान भूधर,
जड़ समेत उखड़–पुखड़कर
गिर पड़े, टूटे विटप वर,
हाय, तिनकों से विनिर्मित
घोंसलों पर क्या न बीती,
डगमगाए जबकि कंकड़,
ईंट, पत्थर के महल–घर;
बोल आशा के विहंगम,
किस जगह पर तू छिपा था,
जो गगन पर चढ़ उठाता
गर्व से निज तान फिर–फिर!
नीड़ का निर्माण फिर–फिर,
नेह का आह्वान फिर–फिर!
क्रुद्ध नभ के वज्र दंतों
में उषा है मुसकराती,
घोर गर्जनमय गगन के
कंठ में खग पंक्ति गाती;
एक चिड़िया चोंच में तिनका
लिए जो जा रही है,
वह सहज में ही पवन
उंचास को नीचा दिखाती!
नाश के दुख से कभी
दबता नहीं निर्माण का सुख
प्रलय की निस्तब्धता से
सृष्टि का नव गान फिर–फिर!
नीड़ का निर्माण फिर–फिर,
नेह का आह्वान फिर–फिर!
———————

स्वर्णाक्षर

आशा का दीपक

वह प्रदीप जो दीख रहा है झिलमिल, दूर नहीं है;
थककर बैठ गए क्या भाई! मंजिल दूर नहीं है।

(1)

चिनगारी बन गयी लहू की बूँद गिरी जो पग से;
चमक रहे, पीछे मुड़ देखो, चरण–चिन्ह जगमग–से।
शुरू हुई आराध्य–भूमि यह, क्लांति नहीं रहे राही;
और नहीं तो पाँव लगे हैं क्यों पड़ने डगमग–से?
बाकी होश तभी तक, जब तक जलता तूर नहीं हैं;
थककर बैठ गए क्या भाई! मंजिल दूर नहीं है।

(2)

दिशा दीप्त हो उठी प्राप्त कर पुण्य–प्रकाश तुम्हारा,
लिखा जा चुका अनल–अक्षरों में इतिहास तुम्हारा।
जिस मिट्टी ने लहू पिया, वह फूल खिलायेगी ही,
अम्बर पर घन बन छायेगा ही उच्छवास तुम्हारा।
और अधिक ले जाँच, देवता इतना क्रूर नहीं है;
थककर बैठ गए क्या भाई! मंजिल दूर नहीं है।

राष्ट्रकवि
रामधारी सिंह 'दिनकर'

स्वर्णाक्षर

मेरा घर

जिस घर में अब मैं रहता हूँ
वो मेरा है
इसके कमरों की
आराइश
इसके आँगन की
ज़ेबाइश
अब मेरी है

मुझसे पहले
मुझसे पहले से भी पहले

ये घर
किसी–किसी का अपना था
किन–किन आँखों का
सपना था
कब–कब
इसका क्या नक्शा था?

ये सब तो
कल का क़िस्सा है
इसका आज
मेरा हिस्सा है
आज के, कल बन जाने तक ही
मेरा भी
इससे रिश्ता है

जिस घर में
अब मैं रहता हूँ
वो मेरा है।

ये कायनात का फैलाव तो बहुत कम है
जहाँ समा सके तन्हाई वो मकाम भी दे

एक जवान याद

वक्त ने
मेरी बालों में चाँदी भर दी
इधर–उधर जाने की आदत कम कर दी

आईना जो कहता है
सच कहता है
एक–सा चेहरा–मोहरा किसका रहता है

इसी बदलते वक्त सहरा में लेकिन
कहीं किसी घर में
इक लड़की ऐसी है
बरसों पहले जैसी थी वो
अब भी बिल्कुल
वैसी है

निदा फ़ाज़ली

लॉकडाउन निवाला

वो रात बड़ी बेचैनी में कटी। सुबह बमुश्किल एक रोटी खाकर घर से अपने कपड़े की दुकान के लिए निकला। आज पहली बार किसी के पेट पर लात मारने जा रहा हूँ। ये बात अंदर ही अंदर कचोट रही है। जिंदगी में मेरा यही फलसफा रहा कि अपने आस–पास किसी को रोटी के लिए तरसना ना पड़े। पर इस विकट काल में अपने पेट पर ही आन पड़ी है। छः साल पहले ही अपनी सारी जमा पूंजी लगाकर कपड़े की दुकान खोली थी। मगर दुकान में बिक्री अब कम हो रही है। दुकान में एक लड़की और दो लड़के लगा रखें हैं मैंने। लेडीज को कपड़े दिखाने वाली लड़की को निकाल नहीं सकता क्योंकि बिक्री भी उन्ही की ज्यादा है। बचे दो लड़को में से एक बहुत पुराना, गरीब और घर में इकलौता कमाने वाला है, जो नया लड़का है रमेश, मैंने उसी पर विचार किया। शायद उसके पिता अच्छी जगह नौकरी करते हैं, और वो खुद समझदार और हँसमुख भी है। इसे कहीं और भी काम मिल सकता है। इन पाँच महीनों में मैं बिल्कुल टूट चुका हूँ। स्थिति को देखते हुए एक वर्कर कम करना मेरी मजबूरी है। यही सब सोचता दुकान पर पहुँचा। तीनों आ चुके थे। मैंने तीनों को बुलाया और बड़ा उदास हो बोल पड़ा.....

"देखो, दुकान की अभी की स्थिति तुम सब को पता है, मैं तुम सब को काम पर नहीं रख सकता"

उन तीनों के माथे पर चिंता की लकीरें, मेरी बातों के साथ गहरी होती चली गई। मैंने पानी से अपने गले को गीला किया। "किसी एक का... हिसाब आज.... कर देता हूँ। रमेश तुम्हें कहीं और काम ढूंढना होगा।"

"जी अंकल" उसे पहली बार इतना उदास देखा। बाकियों के चेहरे पर भी कोई खास प्रसन्नता नहीं थी। लड़की जो शायद उसी के मोहल्ले से आती है, कुछ कहते–कहते रुक गई।

"क्या बात है, बेटी" तुम कुछ कह रही थी? "अंकल जी, इसके पिताजी का .... भी काम कुछेक महीने पहले छूट गया है, इसकी मम्मी बीमार रहती है"

नजर रमेश के चेहरे पर गई। आँखों में जिम्मेदारी के आँसू थे। जो वो अपने हँसमुख चेहरे से छुपा रहा था। मैं कुछ बोलता कि तभी दूसरा लड़का बोल पड़ा। "अंकल! बुरा ना माने तो एक बात बोलूं?" "हां.... हां बोलो ना!" "किसी को निकालने से अच्छा है, हमारे पैसे कम कर दो.... छः हजार की जगह चार हजार कर दो आप" मैंने बाकियों की तरफ देखा "हाँ साहब! हम इतने से ही काम चला लेंगे।"

बच्चों ने मेरी परेशानी को आपस में बांटते हुए मेरे मन का बोझ कुछ हल्का तो जरूर कर दिया था। "पर तुम लोगों को ये कम तो नहीं पड़ेगा न?"

"नहीं अंकल! कोई साथी भूखा रहे.... इससे अच्छा है, हम सब अपना निवाला थोड़ा कम कर दें"

मेरी आँखों में आंसू छोड़, ये बच्चे अपने काम पर लग गए, मेरी नजरों में, मुझसे कहीं ज्यादा बड़े बनकर....!

राहुल कुमार पटेल
छावनी परिषद, सागर

अंतिम सूर्यास्त

सुबह के दस बज रहे थे, इतनी चहल–पहल में भी घड़ी की टिक–टिक उसे साफ सुनाई दे रही थी। आज वक्त की चाल कुछ ज्यादा ही धीमी थी। वह गुमसुम खामोश–सी दीवारों की ओर ताक रही थी कि अचानक मोबाइल की घंटी बज उठी। कुछ क्षण उसने मोबाइल को गौर से देखा, किसी रिश्तेदार या मित्र का नाम नहीं लिखा आ रहा था, नंबर ज्यादा जाना–पहचाना भी नहीं था, परन्तु इस नंबर पर वह पिछले दो दिनों में कई बार बात कर चुकी थी। शीघ्र ही उसके मस्तिष्क ने सोचना शुरू किया तो उसे याद आया, यह तो अस्पताल का नंबर है वहीं से ही फोन आ रहा था।

ओह! नंबर की पहचान होते ही उसका चेहरा सफेद पड़ गया, शरीर सुन्न हो गया, एक ही क्षण में न जाने कितने ही ख्याल उसे झंझोड़ गए, क्या? क्यों? कैसे? बस यही सोचती रह गई। फिर किसी तरह अपने आप को संभाल कर ढेर सारी हिम्मत जुटाकर उसने मोबाइल में रिसीव का बटन दबा दिया। वहाँ से आवाज आई "हैलो, आप पेशेंट हर्षवर्धन के घर से बोल रहीं हैं"? उसने थरथराते होंठों से कहा – "हाँ" लेकिन यह "हाँ" शब्द भी कहीं उसके गले में ही अटककर रह गया था। वहाँ से फिर आवाज आई "हैलो मैडम, आपको मेरी आवाज आ रही है?" इस बार उसने थोड़ी और हिम्मत जुटाई और कहा – "हाँ, मैं उनकी पत्नी बोल रही हूँ" दूसरी ओर से फिर आवाज आई "मैडम आपके पेशेंट की तबीयत अभी थोड़ी स्थिर है, लेकिन उनका ऑक्सीजन लेवल कन्ट्रोल नहीं हो रहा है, उन्हें 'वेंटीलेटर' की आवश्यकता पड़ सकती है, इसलिए आप उन्हें किसी बड़े अस्पताल ले जाएं। सुनकर उसे धक्का लगा। जिनके सिर पर दूसरों को बचाने की जिम्मेदारी थी वो खुद ही उसकी जद में आ गए थे। एक–एक पल में जिंदगी और मौत के फैसले हो रहे थे। लोग डरे और सहमे हुए थे, जिंदगी की उम्मीदें खत्म हो रही थीं। ये सारा मंजर देख उसे ऐसा लगा जैसे यह विनाशकारी बीमारी ऑक्सीजन के अभाव में उसकी छोटी सी जीवन रेखा को अधूरा कर देगी। लेकिन शीघ्र ही उसने निराशा को छोड़ आशा का दामन थाम लिया। पति को किसी बड़े अस्पताल में एडमिट कराने में जुट गयी। उसकी किस्मत अच्छी थी एक अस्पताल में बेड खाली मिला। अस्पताल की सारी प्रक्रिया पूरी कर रुके–रुके कदमों से वह घर की ओर लौट चली। वह रात उसके जीवन की सबसे ज्यादा खौफनाक रात थी। इस समय तीन बज रहे थे, हौसलों के परिंदे हार रहे थे, नींद उसकी आँखों से कोसों दूर थी। जैसे ही वह उजाले की ओर जाती, डर की परछाई सामने आ जाती। धीरे–धीरे रात ने चादर समेट ली, सूरज की किरणों ने दस्तक दी। चिड़ियों की चहचहाहट से उसे सुबह होने का अहसास हुआ। भारी मन से वह कुर्सी से उठी। मुँह–हाथ धोकर रसोई की ओर गई और चाय बनाने लगी। चाय बनाते–बनाते वह सोचने लगी ....

'हमेशा की तरह इस बार भी नए साल का स्वागत पूरे जोश और हर्षोल्लास के साथ हुआ था। दुनिया जश्न में डूबी हुई थी। किसी को यह अंदाजा भी नहीं था कि एक अनजानी और अनचाही मुसीबत की जंजीरें सबके कदमों की रफ्तार रोकने वाली थी। वैसे तो इस महामारी का आरंभ नए साल के इंद्रधनुषी रंगों के साथ ही हुआ था, परन्तु मार्च महीने के आते–आते इसने इतना विकराल रूप धारण कर लिया कि सभी स्तब्ध रह गए। एक अंजान बीमारी जिसके बारे में किसी को पता तक नहीं था, एक छोटा–सा वायरस बड़ी तेजी से न केवल हमारे देश बल्कि पूरे विश्व को डरा रहा था।'

मानव समाज की होड़ और वैमनस्य की दौड़ भले ही थमी थी, मगर हर गुजरते दिन के साथ बेहिसाब जिंदगियां "कोरोना" की भेंट चढ़ रही थीं। वह अब भी डरी–सहमी और बदहवास ईश्वर के समक्ष हाथ जोड़े किसी शुभ समाचार का इंतजार कर रही थी। कुछ समय बाद अस्पताल वालों ने खबर दी कि मरीज की तबीयत में सुधार हो रहा है, वह शीघ्र ही सेहतमंद हो जाएगा। लगभग 10 से 12 दिन लगेंगे। यह सुनकर उसका रोम–रोम पुलकित हो गया। ऊपरवाले का शुक्र अदा कर वह कुछ दिनों से पूरी तरह से अस्पताल बने घर को समेटने में मसरुफ हो गई। आज वह अपने आप को सबसे खुशनसीब स्त्री समझ रही थी।

निशात शेख
छावनी परिषद, देहूरोड

रंगचर्चा

इस स्तंभ में 'भारत कोकिला' लता मंगेशकर के जीवन से जुड़ी त्यौहारों की कहानी खुद उन्हीं के शब्दों में बयां हो रही है। पाठक भी इन रंगों से क्यों अछूते रहें, इसलिए ये रंग यहां प्रस्तुत किए जा रहे हैं।

"हम तो पागलों की तरह होली खेलते थे। यह बहुत पहले की बात है, जब मेरे पिताजी जीवित थे। आजकल तो मैंने होली खेलना ही बन्द कर दिया है। पहले सारा दिन रंग खेलना और भीगना और बाद में जाकर देर शाम तक नहाना, अब यह सब सालों से अच्छा नहीं लगता है। यह जो होली पूरे देश में प्रचलित है, हम उसे होली की तरह नहीं मनाते थे। मेरा मतलब यह है कि होली के एक दिन पहले जब होली जलाते हैं और उस समय होलिका की पूजा होती है। उसमें जो प्रसाद चढ़ाया जाता है, उन तमाम तरह की मिठाइयों को होलिका में डालते हैं। नारियल भी होलिका में आखिरी में जलाया जाता है, जिसे जल जाने के बाद उसे आग से निकालकर उसे तोड़कर प्रसाद लेते हैं। वो जो राख बनती है, उसे उठाकर दूसरे दिन एक दूसरे पर डालते हैं। इसे हम लोग गुड़वड़ कहते हैं। होली के बाद पाँचवें दिन रंग पंचमी आती है। उस दिन मेरी माँ और पिताजी हम सब भाई–बहनों पर केसर घोलकर थोड़ा छिड़कते थे। माँ घर में कुछ मीठा बनाती थीं, जो भगवान को चढ़ाकर हमें प्रसाद में खाने को मिलता था। हम सभी की अलग–अलग आरतियाँ भी माँ उतारती थीं और इस तरह हमारे घर में बचपन में होली का त्यौहार मनता था। यह होली जो आजकल प्रचलित है, इसका कोई प्रभाव हमारे घर में नहीं था।

हमारे यहाँ दशहरा और दीवाली का ज्यादा महत्व था। नवरात्रि भी बहुत धूमधाम के साथ हम लोगों के यहाँ मनती है। नवरात्रि के पहले दिन हम गुड़ि पड़वा मनाते हैं, जिसका विशेष महत्व है। इसमें हम घर में बाहर गुड़ि बाँधते हैं और कलश स्थापना करते हैं। सूर्योदय के समय ही गुड़ि पर बताशों की माला या हार बनाकर चढ़ाई जाती है, जिसे सूर्यास्त होने तक उतार लिया जाता है और प्रसाद के रूप में घर के सभी सदस्य उसे लेते हैं। यह एक बहुत महत्वपूर्ण आयोजन है। हमारी तरफ और ऐसी मान्यता है कि भगवान राम चौदह वर्ष बाद जब अयोध्या लौटे थे, तो हर घर में ऐसे ही बताशों की लड़ी सजाकर गुड़ि बाँधी गयी थी। महाराष्ट्र में ऐसा ही कहा जाता है। पहले दिन गुड़ि बाँधने के बाद नौ दिन तक उत्सव मनाया जाता है, जिसके अन्त में नवमी पर राम जी के जन्म की तिथि रामनवमी आती है। ....तो यह त्यौहार हम राम आगमन मानकर मनाते हैं, जबकि बाकी जगहों पर दुर्गा की आराधना में नवरात्र होता है। महाराष्ट्र में उस तरह नवरात्र नहीं मनता, जिस तरह गुजरात, उत्तर प्रदेश और राजस्थान में दुर्गा की आराधना में यह त्यौहार मनाया जाता है।"

संकलन : **राजभाषा अनुभाग**

साहित्य वीथि

इस स्तंभ में हम प्रसिद्ध लेखक व पत्रकार मनोहर श्याम जोशी की लोकप्रिय कहानी 'सिल्वर वेडिंग' प्रस्तुत कर रहे हैं। मनोहर श्याम जोशी एक प्रबुद्ध लेखक और जागरूक पत्रकार थे। इनके लेख और कहानियां आज भी प्रासंगिक हैं। इनका जन्म 09 अगस्त, 1938 को अजमेर में हुआ। लखनऊ विश्वविद्यालय से विज्ञान स्नातक जोशी जी, 'कल के वैज्ञानिक' की उपाधि पाने के बावजूद शुरु से ही लेखन और पत्रकारिता की ओर प्रवृत्त थे। ये साप्ताहिक 'हिन्दुस्तान' के संपादक भी रहे। प्रसिद्ध टेली–श्रृंखला 'हम लोग' में लेखन कार्य करने के लिए इन्होंने 1984 में संपादक की नौकरी छोड़ दी। संपादक पद का कार्य त्याग उनके लिए प्रसिद्धि की नई ऊंचाइयां लेकर आया। 'हम लोग' टेली–श्रृंखला आज भी भारतीय टेलीविजन इतिहास में प्रमुख स्थान रखती है। इनके लिखे लेख और कहानियां मध्यमवर्गीय परिवेश को दर्शाते हैं। समय की धूल में भी उनकी सृजनात्मकता खोई नहीं, धूल हटाते ही उनकी रचनाधर्मिता पूरे जोरो–खरोश के साथ पाठकों को अभिभूत कर जाती है। 30 मार्च, 2006 को इन्होंने विदा ली।

इनकी कहानी 'सिल्वर वेडिंग' का ताना–बाना आज भी उतना ही नया है जितना सत्तर के दशक में था। पाठक इस कहानी में के ताने–बाने में खुद को पाएंगे, उन्हें इसका परिवेश उतना ही अपना लगेगा।

सिल्वर वेडिंग

जब सेक्शन ऑफिसर वाई. डी. (यशोधर) पन्त ने आखिरी फाइल का लाल फीता बाँधकर निगाह मेज से उठायी, तब दफ्तर की पुरानी दीवार घड़ी पाँच बजकर पच्चीस मिनट बता रही थी। उनकी अपनी कलाई घड़ी में साढ़े पाँच बजे थे। पन्त जी अपनी घड़ी रोजना सुबह–शाम रेडियो–समाचारों से मिलाते हैं, इसलिए उन्होंने दफ्तर की घड़ी को भी सुस्त ठहराया। फाइल आउट ट्रे में डालकर उन्होंने 'दिन की दस' के बँधे हुए राशन में से सातवीं सिगरेट सुलगायी और एक निगाह अपने मातहतों पर डाली जो उनके ही कारण पाँच बजे के बाद भी दफ्तर में बैठने को मजबूर होते हैं। चलते–चलते जूनियरों से कुछ मनोरंजक बात कहकर दिन भर के शुष्क व्यवहार का निराकरण कर जाने की कृष्णानन्द (शिकनदा) पाण्डे से मिली हुई परम्परा का पालन करते हुए उन्होंने कहा, "आप लोगों की देखादेखी सेक्शन की घड़ी भी सुस्त हो गयी है!"

सीधे 'असिस्टेंट ग्रेड' में आये नये छोकरे चड्ढा ने, जिसकी चौड़ी मोहरी वाली पतलून और ऊँची एड़ी वाले जूते पन्त जी को 'समहाउ इम्प्रॉपर' मालूम होते हैं, थोड़ी बदतमीजी–सी की। 'ऐज यूजुअल' बोला, "बड़े बाऊ, आपकी अपनी चूनेदानी का क्या हाल है? वक्त सही देती है?" पन्त जी ने चड्ढा की धृष्टता को अनदेखा किया और कहा, 'मिनिट टू मिनिट करेक्ट' चलती है।

चड्ढा ने कुछ और धृष्ट होकर पन्त जी की कलाई थाम ली। इस तरह की धृष्टता का प्रकट विरोध करना यशोधरा बाबू ने छोड़ दिया है। मन–ही–मन वह उस जमाने को याद जरूर करते हैं जब दफ्तर में वह किशनदा को भाई नहीं, 'साहब' कहते और समझते थे। घड़ी की ओर देखकर कहा, "बाबा आदम के जमाने की है बड़े बाऊ यह तो! अब तो डिजिटल ले लो एक जापानी। 'स्मगल्ड' सस्ती मिल जाती है।

'यह घड़ी मुझे शादी में मिली है। हम पुरानी चाल के, हमारी घड़ी पुरानी चाल की! अरे यही बहुत है कि अब तक 'राइट टाइम' चल रही है – क्यों कैसी रही?"

इस तरह का नहले पर दहला जवाब देते हुए एक हाथ आगे बढ़ा देने की परंपरा थी रेम्ज़ी स्कूल अल्मोड़ा में, जहां से कभी यशोधर बाबू ने मैट्रिक की परीक्षा पास की थी। इस तरह के आगे बढ़े हुए हाथ पर सुनने वाला बतौर दाद अपना हाथ मारा करता था और वक्ता–श्रोता, दोनों ठठाकर हाथ मिलाया करते थे। ऐसी ही परंपरा किशनदा के क्वार्टर में

थी जहां रोजी–रोटी की तलाश में आए यशोधर पंत नामक एक मैट्रिक पास बालक को शरण मिली थी कभी। किशनदा कुआँरे थे और पहाड़ से आए हुए कितने ही लड़के ठीक ठिकाना होने से पहले उनके यहाँ रह जाते थे। मैस जैसी थी, मिलकर लाओ, पकाओ, खाओ। यशोधर बाबू जिस समय दिल्ली आए थे उनकी उम्र सरकारी नौकरी के लिए कम थी। कोशिश करने पर भी बॉय सर्विस में वह नहीं लगाए जा सके। तब किशनदा ने उन्हें मैस का रसोइया बनाकर रख लिया। यही नहीं, उन्होने यशोधर को पचास रुपये उधार भी दिये कि वह अपने लिए कपड़े बना सके और गाँव पैसा भेज सकें। बाद में इन्हीं किशनदा ने अपने ही नीचे नौकरी दिलवाई और दफ्तरी जीवन में मार्ग दर्शन किया।

चड्ढा ने ज़ोर से कहा, बड़े बाउ– आप किन ख्यालों में खो गए? मेनन पूछ रहा है कि आपकी शादी हुई कब थी? यशोधर बाबू ने सकपकाकर अपना बढ़ा हुआ हाथ वापस खींचा और मेनन से मुखातिब होकर बोले नाउ लैट मी सी; आई वास मैरिड ऑन सिक्स्थ फरवरी नाइंटीन फॉर्टी सेवन।

मेनन ने फौरन हिसाब लगाया और चहककर बोला, मैनी हैप्पी रिटर्न्स ऑफ द डे सर! आज तो आपका सिल्वर वैडिंग, है। शादी को पूरा पच्चीस साल हो गया।

यशोधर जी खुश होते हुए झेंपे और झेंपते हुए खुश हुये। यह अदा उन्होने किशनदा से सीखी थी।

चड्ढा ने घंटी बजाकर चपरासी को बुलाया और कहा, सुन भई भगवानदास, बड़े बाउ से बड़ा नोट ले और सारे सेक्शन के लिए चाय–पानी का इंतज़ाम कर फटाफट।

यशोधर जी बोले, अरे, ये वैडिंग एनिवर्सरी वगैरह सब गोरे साहबों के चोंचले हैं– हमारे यहाँ थोड़े ही मानते हैं? चड्ढा बोला, मिक्सचर मत पिलाइए गुरुदेव! चाय–मट्ठी–लड्डू, बस इतना ही सौदा है। इनमें कौन आपकी बड़ी माया निकली जानी है?

यशोधर बाबू ने जेब से बटुआ और बटुवे से दस का नोट निकाला और कहा, आप लोग चाय पीजिए दैट सो आइ डू नॉट माइंड, लेकिन जो हमारे लोगों में कस्टम नहीं है, उस पर इनसिस्ट करना, दैट मे समहाउ इम्प्रॉपर फाइंड करता हूँ।

चड्ढा ने दस का नोट चपरासी को दिया और पुनः बड़े बाऊ के आगे हाथ फैला दिया कि एक नोट से सेक्शन का क्या बनना है? रुपया तीस हों तो चुग्गे भर का जुगाड़ करा सकें।

सारा सेक्शन जानता है कि यशोधर बाबू अपने बटुवे में सौ–डेढ़ सौ रुपये हमेशा रखते हैं भले ही उनका दैनिक खर्च नगण्य है। और तो और, बस टिकट का खर्च भी नहीं। गोल मार्केट से सेक्रेटेरियट तक पहले साइकिल से आते जाते थे। इधर पैदल आने–जाने लगे हैं क्योंकि उनके बच्चे आधुनिक युवा हो चले हैं और उन्हें अपने पिता का साइकिल–सवार होना सख्त नागवार गुजरता है। बच्चों के अनुसार, साइकिल तो चपरासी चलाते हैं। बच्चे चाहते है कि पिता जी स्कूटर ले लें। लेकिन पिता जी को समहाउ स्कूटर निहायत बेहूदा सवारी मालूम होती है और कार जब अफोर्ड की ही नहीं जा सकती तब उसकी बात सोचना ही क्यों?

चड्ढा के ज़ोर देने पर बड़े बाउ ने दस–दस के दो नोट और दे दिये लेकिन सारे सेक्शन के इसरार करने पर भी वह अपनी सिल्वर वैडिंग के इस दावत के लिए नहीं रुके। मातहत लोगों से चलते–चलते थोड़ा हंसी–मज़ाक कर लेना किशनदा की परंपरा में है। उनके साथ बैठकर चाय–पानी और गप्प–गप्पाष्टक में वक्त बर्बाद करना उस परंपरा के विरुद्ध है।

इधर यशोधर बाबू ने दफ्तर से लौटते हुए रोज बिड़ला मंदिर जाने और उसके उद्यान में बैठकर प्रवचन सुनने अथवा स्वयं ही प्रभु का ध्यान लगाने की नई रीत अपनायी है। यह बात उनके पत्नी–बच्चों को बहुत अखरती है। बब्बा, आप कोई बुड्ढे हैं जो रोज–रोज मंदिर जायें, इतने ज्यादा व्रत करें? – ऐसा कहते हैं वे। यशोधर बाबू इस आलोचना को अनसुना कर देते हैं। सिद्धान्त के धनी किशनदा के अनुसार, यही खानदानी होने की निशानी है।

बिड़ला मंदिर से उठकर यशोधर बाबू पहाड़गंज जाते हैं और घर के लिए साग–सब्ज़ी खरीद लाते हैं। अगर किसी से मिलना–मिलना हो तो वह भी इसी समय कर लेते हैं। तो भले ही दफ्तर पाँच बजे छुटता हो, वह घर आठ बजे से

पहले कभी नहीं पहुँचते।

आज बिड़ला मंदिर जाते यशोधर बाबू की निगाह उस अहाते पर पड़ी जिसमें कभी किशनदा का तीन बेडरूम वाला बड़ा क्वार्टर हुआ करता था और जिस पर इन दिनों एक छह मंज़िला इमारत बनायी जा रही है। इधर से गुजरते हुए, कभी के डी.आई.जेड. एरिया की बदलती शक्ल देखकर यशोधर बाबू को बुरा–सा लगता है। ये लोग सारा गोल मार्केट क्षेत्र तोड़कर यहाँ एक मंज़िला क्वार्टरों की जगह ऊंची इमारतें बना रहे हैं। उन्हे यह जरूर पता है कि उनकी यादों के गोल मार्केट के ढहाए जाने का गम मनाने के लिए उनका इस क्षेत्र में डटे रहना निहायत जरूरी है। उन्हें एंड्रयूजगंज, लक्ष्मीबाई नगर, पंडारा रोड आदि नयी बस्तियों में पद की गरिमा के अनुरूप डी–2 टाइप क्वार्टर मिलने की अच्छी खबर कई बार आई है, मगर हर बार उन्होने गोल मार्केट छोड़ने से इंकार कर दिया है। जब उनका क्वार्टर टूटने का नंबर आया, तब भी उन्होने इसी क्षेत्र की इन बस्तियों में बचे हुए क्वार्टरों में एक अपने नाम अलॉट करा लिया। पत्नी के यह पूछने पर कि जब यह भी टूट जाएगा तब क्या करोगे, उन्होने कहा– तब के तब देखी जाएगी और उसी तरह मुस्कुराए, जिस तरह किशनदा यही जिक्र कहकर मुसकुराते थे।

सच तो यह है कि पिछले कई वर्षों से यशोधर बाबू का अपनी पत्नी और बच्चों से हर छोटी–बड़ी बात में मतभेद होने लगा है और इसी वजह से वह घर जल्दी लौटना पसंद नहीं करते। जब तक बच्चे छोटे थे तब तक वह उनकी पढ़ाई–लिखाई में मदद कर सकते थे। अब बड़ा लड़का एक प्रमुख विज्ञापन संस्था में नौकरी पा गया है। यद्यपि समहाउ यशोधर बाबू को अपने साधारण पुत्र को असाधारण वेतन देने वाली यह नौकरी कुछ समझ में आती नहीं। वे कहते हैं डेढ़ हज़ार रुपया तो हमें अब रिटायरमेंट के पास पहुँचकर मिला है। शुरू में ही डेढ़ हज़ार रुपया देने वाली इस नौकरी में जरूर कुछ पेंच होगा । यशोधर जी का दूसरा बेटा दूसरी बार आई.ए.एस. की तैयारी कर रहा है और यशोधर बाबू के लिए यह समझ सकना असंभव है कि अब जब यह पिछले साल अलाइड सर्विसेस की सूची में, माना काफी नीचे आ गया था तब इसने जॉइन करने से इंकार क्यों कर दिया? उनका तीसरा बेटा स्कॉलर्शिप लेकर अमरीका चला गया है और उनकी एकमात्र बेटी न केवल तमाम प्रस्तावित वर अस्वीकार करती चली जा रही है, बल्कि डॉक्टरी की उच्चतम शिक्षा के लिए स्वयं भी अमरीका चले जाने की धमकी दे रही है। यशोधर बाबू जहां बच्चों की इस तरक्की से खुश होते हैं, वहाँ समहाउ यह भी अनुभव करते हैं कि वह खुशहाली भी कैसी जो अपनों में परायापन पैदा करे। अपने बच्चों द्वारा गरीब रिशतेदारों की उपेक्षा उन्हें समहाउ जँचती नहीं। एनीवे, जनरेशनों में गैप तो होता ही है ऐसा कहकर स्वयं को दिलासा देता है पिता।

यद्यपि यशोधर बाबू की पत्नी अपने मूल संस्कारों से किसी भी तरह आधुनिक नहीं है, तथापि बच्चों की तरफ़दारी करने की मातृ सुलभ मजबूरी ने उन्हें भी मॉडर्न बना डाला है। कुछ यह भी है कि जिस समय उनकी शादी हुई थी, यशोधर बाबू के साथ गाँव से आये ताऊ जी और उनके दो विवाहित बेटे भी रहा करते थे। इस संयुक्त परिवार में पीछे ही पीछे बहुओं में गज़ब के तनाव थे लेकिन ताऊ जी के डर से कोई कुछ कह नहीं पाता था। यशोधर बाबू की पत्नी को शिकायत है कि संयुक्त परिवार वाले उस दौर में पति ने हमारा पक्ष कभी नहीं लिया, बस जिठानियों की चलने दी। उनका यह भी कहना है कि मुझे आचार–व्यवहार के ऐसे बन्धनों में रखा गया मानो मैं जवान औरत नहीं, बुढ़िया थी। जितने भी नियम इसकी बुढ़िया ताई के लिए थे, वे सब मुझ पर भी लागू करवाये– ऐसे कहती है घरवाली बच्चों से। बच्चे उससे सहानुभूति व्यक्त करते हैं। फिर वह यशोधर जी से उन्मुख होकर कहती हैं– तुम्हारी ये बाबा आदम के जमाने की बातें मेरे बच्चे नहीं मानते तो इसमें उनका कोई कसूर नहीं। मैं भी इन बातों को उसी हद तक मानूँगी जिस हद तक सुभीता हो। अब मेरे कहने से वह सब ढोंग–ढकोसला हो नहीं सकता– साफ़ बात।

धर्म–कर्म, कुल–परम्परा सब को ढोंग–ढकोसला कहकर घर वाली आधुनिकाओं–सा आचरण करती है तो यशोधर बाबू शानियल बुढ़िया, चटाई का लहँगा या बूढ़ी मुँह मुँहासे, लोग करें तमाशे कहकर उसके विद्रोह को मज़ाक में उड़ा देना चाहते हैं, अनदेखा कर देना चाहते हैं लेकिन यह स्वीकार करने को बाध्य भी होते जाते हैं कि तमाशा स्वयं उनका बन रहा है। जिस तरफ किशनदा का क्वार्टर था, उसके सामने खड़े होकर एक गहरी निःश्वास छोड़ते हुए यशोधर जी ने अपने से पूछा कि क्या यह बेटर नहीं रहता कि किशनदा की तरह घर–गृहस्थी का बवाल ही न पाला होता और लाइफ़–कम्युनिटी के लिए डेडीकेट कर दी होती।

फिर उनका ध्यान इस ओर गया कि बाल–जाती किशनदा का बुढ़ापा सुखी नहीं रहा। उसके तमाम साथियों ने हौज़ख़ास, ग्रीनपार्क, ग्रेटर कैलाश कहीं–न–कहीं ज़मीन ली, मकान बनवाया, लेकिन उसने कभी इस ओर ध्यान ही नहीं दिया। रिटायर होने के छह महीने बाद जब उसे क्वार्टर खाली करना पड़ा, तब हद हो गयी। उसके द्वारा उपकृत इतने सारे लोगों में से एक ने भी उसे अपने यहाँ रखने की पेशकश नहीं की। स्वयं यशोधर बाबू उसके सामने ऐसा कोई प्रस्ताव नहीं रख पाये क्योंकि उस समय तक उनकी शादी हो चुकी थी और उनके दो कमरों के क्वार्टर में तीन परिवार रहा करते थे। किशनदा कुछ साल राजेन्द्र नगर में किराये का क्वार्टर लेकर रहा और फिर अपने गाँव लौट गया, जहाँ साल भर बाद उसकी मृत्यु हो गयी। ज्यादा पेंशन खा नहीं सका बेचारा। विचित्र बात यह है कि उसे कोई भी बीमारी नहीं हुई। बस रिटायर होने के बाद मुरझाता–सूखता ही चला गया। जब उसके एक बिरादर से मृत्यु का कारण पूछा तब उसने यशोधर बाबू को यही जवाब दिया 'जो हुआ होगा'। यानी पता नहीं, क्या हुआ!

जिन लोगों के बाल–बच्चे नहीं होते, घर–परिवार नहीं होता उनकी रिटायर होने के बाद 'जो हुआ होगा' से भी मौत हो जाती है– यह जानते हैं यशोधर जी। बच्चों का होना भी जरूरी है। यह सही है कि यशोधर जी के बच्चे मनमानी कर रहे हैं और ऐसा संकेत दे रहे हैं कि उनके कारण यशोधर जी को बुढ़ापे में कोई विशेष सुख प्राप्त नहीं होगा, लेकिन यशोधर जी अपने मर्यादा–पुरुष किशनदा से सुनी हुई यह बात नहीं भूले हैं कि गधा–पच्चीसी में भी क्या करता है, इसकी चिन्ता नहीं करनी चाहिए क्योंकि बाद में हर आदमी समझदार हो जाता है। यद्यपि युवा यशोधर को विश्वास नहीं होता तथापि किशनदा बताते हैं कि 'किस तरह मैंने जवानी में पचासों किस्म की खुराफ़ात की हैं। ककड़ी चुराना, गर्दन मोड़ के मुर्गी मार देना, पीछे की खिड़की से कूदकर सेकेण्ड शो सिनेमा देख आना–कौन करम ऐसा है जो तुम्हारे इस किशनदा ने नहीं कर रखा'।

'ज़िम्मेदारी सिर पर पड़ेगी तब सब अपने आप ठीक हो जायेंगे' – यह भी किशनदा से विरासत में मिला हुआ एक फिकरा है जिसे यशोधर बाबू अक्सर अपने बच्चों के प्रसंग में दोहराते हैं। उन्हें कभी–कभी लगता है कि अगर मेरे पिता तब नहीं गुजर गये होते जब मैं मैट्रिक में था तो शायद मैं गधा–पच्चीसी के लम्बे दौर से गुज़रता। ज़िम्मेदारी सिर पर जल्दी पड़ गयी तो जल्दी ही ज़िम्मेदार आदमी भी बन गया। 'जब तक बाप है, तब तक मौज कर ले। यह बात यशोधर जी कभी–कभी तंजिया कहते हैं। लेकिन कहते हुए उनके चेहरे पर जो मुस्कान खिल जाती है वह बच्चों पर यह प्रकट करती है कि बाप को उनका सनाथ होना, गैर–ज़िम्मेदाराना होना, कुल मिलाकर अच्छा लगता है'।

यशोधर बाबू कभी–कभी मन ही मन स्वीकार करते हैं कि दुनियादारी में बीवी–बच्चे उनसे अधिक सुलझे हुए हो सकते हैं, लेकिन दो के चार करने वाली दुनिया ही उन्हें कहाँ मंजूर है जो उसकी रीति मंजूर करे। दुनियादारी के हिसाब से बच्चों का यह कहना सही हो सकता है कि बब्बा ने डी.डी.ए. फ्लैट के लिए पैसा न भर के भयंकर भूल की है। किन्तु समहाउ यशोधर बाबू को किशनदा की यह उक्ति अब भी जँचती है– मूरख लोग मकान बनाते हैं, सयाने उनमें रहते हैं। जब तक सरकारी नौकरी तब तक सरकारी क्वार्टर। रिटायर होने पर गाँव का पुश्तैनी घर। बस गाँव का पुश्तैनी घर टूट–फूट चुका है और उस पर इतने लोगों का हक है कि वहाँ जाकर बसना, मरम्मत की ज़िम्मेदारी ओढ़ना और बेकार के झगड़े मोल लेना होगा – इस बात को यशोधर जी अच्छी तरह समझते हैं। बच्चे बहस में जब वह तर्क दोहराते हैं तब उनसे कोई जवाब देते नहीं बनता। उन्होंने हमेशा यही कल्पना की थी, और आज भी करते हैं कि उनका कोई लड़का उनके रिटायर होने से पहले सरकारी नौकरी में आ जायेगा और क्वार्टर उनके परिवार के पास बना रह सकेगा। अब भी पत्नी द्वारा भविष्य का प्रश्न उठाये जाने पर यशोधर बाबू इस सम्भावना को रेखांकित कर देते हैं, तब पत्नी कहती है 'अगर ऐसा नहीं हुआ तो? आदमी को तो हर तरह से सोचना चाहिए'। तब यशोधर बाबू टिप्पणी करते हैं कि 'सब तरह से सोचने वाले हमारी बिरादरी में नहीं होते हैं। उनमें तो एक तरह से सोचने वाले होते हैं', कहते हैं और कहकर लगभग नकली ही हँसी हँसते हैं।

जितना ही इस लोक की ज़िन्दगी यशोधर बाबू को यह नक़ली हँसी हँसने के लिए बाध्य कर रही है, उतना ही वह परलोक के बारे में उत्साही होने का यत्न कर रहे हैं। तो उन्होंने बिड़ला मन्दिर की ओर तेज़ कदम बढ़ाये, लक्ष्मीनारायण के आगे हाथ जोड़े, असीक का फूल चुटिया में खोंसा और पीछे के उस प्रांगण में जा पहुँचे जहाँ एक महात्मा जी गीता

का प्रवचन कर रहे हैं।

अफ़सोस आज प्रवचन सुनने में यशोधर जी का मन ख़ास लगा नहीं। सच तो यह है कि ये भीतर से ज्यादा धार्मिक अथवा कर्मकाण्डी हैं नहीं। हाँ, इस सम्बंध में अपने मर्यादा–पुरुष किशनदा द्वारा स्थापित मानक हमेशा उनके सामने रहे हैं। जैसे–जैसे उम्र ढल रही है, वैसे–वैसे वह भी किशनदा की तरह रोज़ मन्दिर ज़ाने, सन्ध्या–पूजन करने और गीता प्रेस गोरखपुर की किताबें पढ़ने का यत्न करने लगे हैं। अगर कभी उनका मन शिकायत करता है कि इस सब में लग नहीं पा रहा हूँ तब उससे कहते हैं कि भाई, लगना चाहिए। अब तो माया–मोह के साथ–साथ भगवत भजन को भी कुछ स्थान देना होगा कि नहीं? नयी पीढ़ी को दे कर राज–पाट तुम लग जाओ बाट वन–प्रदेश की। जो करते हैं, जैसा करते हैं, करें। हमें तो अब इस वर्ल्ड की नहीं उसकी; इस लाइफ़ की नहीं उसकी चिन्ता करनी है। वैसे अगर बच्चे सलाह माँगे, अनुभव का आदर करें तो अच्छा लगता है। अभी नहीं माँगते तो न माँगें।

यशोधर बाबू ने फिर अपने को झिड़का कि यह भी क्या हुआ कि मन को समझाने में फिर भटक गये। गीता महिमा सुनो। सुनने लगे, मगर व्याख्या में जनार्दन शब्द जो सुनाई पड़ा तो उन्हें अपने जीजा जनार्दन जोशी की याद हो आयी। परसों ही कार्ड आया है कि उनकी तबीयत ख़राब है। यशोधर बाबू सोचने लगे कि जीजा जी का हाल पूछने अहमदाबाद जाना ही होगा। ऐसा सोचते ही उन्हें यह भी ख्याल आया कि यह प्रस्ताव उनकी पत्नी और बच्चों को पसन्द नहीं आयेगा। सारा संयुक्त परिवार बिखर गया है। पत्नी और बच्चों की धारणा है कि इस बिखरे परिवार के प्रति यशोधर जी का एकतरफ़ा लगाव आर्थिक दृष्टि से सर्वथा मूर्खतापूर्ण है। यशोधर जी खुशी–ग़मी के हर मौके पर रिश्तेदारों के यहाँ जाना जरूरी समझते हैं। वह चाहते हैं कि बच्चे भी पारिवारिकता के प्रति उत्साही हों। बच्चे क्रुद्ध ही होते हैं। अभी उस दिन हद हो गयी। कमाऊ बेटे ने यह कह दिया कि आपको बुआ को भेजने के लिए पैसे मैं तो नहीं दूँगा। यशोधर बाबू को कहना पड़ा कि अभी तुम्हारे बब्बा की इतनी साख है कि सौ रुपया उधार ले सकें।

यशोधर जी का नारा है, हमने तो सैप (साहब) ऐसा ही देखा ठहरा– हमें तो यही परम्परा विरासत में मिली है। इस नारे से उनकी पत्नी बहुत चिढ़ती है। पत्नी का कहना है, और सही कहना है कि यशोधर जी का स्वयं का देखा हुआ कुछ भी नहीं है। माँ के मर जाने के बाद छोटी ही उम्र में वह गाँव छोड़कर अपनी विधवा बुआ के पास अल्मोड़ा आ गये थे। बुआ का कोई ऐसा लम्बा–चौड़ा परिवार तो था नहीं जहाँ कि यहाँ यशोधर जी कुछ देखते और परम्परा के रंग में रँगते। मैट्रिक पास करते ही वह दिल्ली आ गये और यहाँ रहे कुँआरे कृष्णानन्द जी के साथ। कुँआरे की गिरस्ती में देखने को होता क्या है? पत्नी आग्रहपूर्वक कहती है कि कुछ नहीं, तुम अपने उन किशनदा के मुँह से सुनी–सुनायी बातों को अपनी आँखों देखी यादें बना डालते हो। किशनदा को जो भी मालूम था, वह उनका पुराने गँवई लोगों से सीखा हुआ ठहरा। दिल्ली आकर उन्होंने घर–परिवार तो बसाया नहीं जो जान पाते कि कौन से रिवाज़ निभा सकते हैं, कौन से नहीं। पत्नी का कहना है कि किशनदा तो थे ही जन्म के बूढ़े, तुम्हें क्या सुर लगा जो उनका बुढ़ापा खुद ओढ़ने लगे हो? तुम शुरू में तो ऐसे नहीं थे, शादी के बाद मैंने जो तुम्हें देखा! हफ़्ते में दो–दो सिनेमा देखते थे। हर इतवार भड्डू चढ़ाकर अपने लिए शिकार पकाते थे। ग़ज़ल गाते थे ग़ज़ल! ग़ज़ल हुई और सहगल के गाने।

यशोधर बाबू स्वीकार करते हैं कि उनमें कुछ परिवर्तन हुआ है लेकिन वह समझते हैं कि उम्र के साथ–साथ बुजुर्गियत आना ठीक ही है। पत्नी से वह कहते हैं कि जिस तरह तुमने बुढ्याकाल यह बग़ैर बाँह का ब्लाउज पहनना, यह रसोई से बाहर भात–दाल खा लेना, यह ऊँची हील वाली सैण्डल पहनना, और ऐसे ही पचासों काम अपनी बेटी की सलाह पर शुरू कर दिये हैं, मुझे तो वे समहाउ इम्प्रॉपर ही मालूम होते हैं। ऐनी वे, मैं तुम्हें ऐसा करने से रोक नहीं रहा। देयरफोर तुम लोगों को भी मेरे जीने के ढंग पर कोई एतराज होना नहीं चाहिए।

यशोधर बाबू को धार्मिक प्रवचन सुनते हुए भी अपना पारिवारिक चिन्तन में ध्यान डूबा रहना अच्छा नहीं लगा। सुबह–शाम सन्ध्या करने के बाद जब वह थोड़ा ध्यान लगाने की कोशिश करते हैं तब भी मन किसी परमसत्ता में नहीं, इसी परिवार में लीन होता है। यशोधर जी चाहते हैं कि ध्यान लगाने की सही विधि सीखें। साथ ही, वह अपने से भी कहते हैं कि परहैप्स ऐसी चीज़ों के लिए रिटायर होने के बाद का समय ही प्रॉपर ठहरा। वानप्रस्थ के लिए प्रेस्क्राइब्ड ठहरी ये

चीजें। वानप्रस्थ के लिए यशोधर बाबू का अपने पुश्तैनी गाँव जाने का इरादा है रिटायर होकर। फॉर फ्रॉम द मैडिंग क्राउड– समझे!

इस तरह की तमाम बातें यशोधर बाबू पैदाइशी बुजुर्गवार किशनदा के शब्दों में और उनके ही लहजे में कहा करते हैं और कहकर उनकी तरह की वह झेंपी–सी, लगभग नकली–सी हँसी देते हैं! जब तक किशनदा दिल्ली में रहे, यशोधर बाबू नित्य नियम से हर दूसरी शाम उनके दरबार में हाजिरी लगाने पहुँचते रहे।

स्वयं किशनदा हर सुबह सैर से लौटते हुए अपने इस मानस पुत्र के क्वार्टर में झाँकना और हेल्दी वेल्दी एण्ड वाइज बन रहा है न भाऊ– ऐसा कहना कभी नहीं भूलते। जब यशोधर बाबू दिल्ली आये थे तब उनकी सुबह थोड़ी देर से उठने की आदत थी। किशनदा ने उन्हें रोज सुबह झकझोर कर उठाने और साथ सैर में ले जाना शुरू किया और यह मन्त्र दिया कि अर्ली टू बेड एण्ड अर्ली टू राइज़ मेक्स ए मैन हेल्दी वैल्दी एण्ड वाइज़। जब यशोधर बाबू अलग क्वार्टर में रहने लगे और अपनी गृहस्थी में डूब गये तब भी किशनदा ने यह देखते रहना ज़रूरी समझा कि भाऊ यानी बच्चा सवेरे जल्दी उठता है कि नहीं। हर सवेरे वह किशनदा से अनुरोध करते कि चाय पीकर जायें। किशनदा कभी–कभी इस अनुरोध की रक्षा कर देते। यशोधर बाबू ने किशनदा को घर और दफ़्तर में विभिन्न रूपों में देखा है लेकिन किशनदा की ही जो छवि उनके मन में बसी हुई है, वह सुबह की सैर को निकले किशनदा की ही तरह कुर्ते पाजामे के ऊपर ऊनी गाऊन पहने, सिर पर गोल विलायती टोपी और पाँवों में देशी खड़ाऊँ धारण किये हुए और हाथ में (कुत्तों को भगाने के लिए) एक छड़ी लिये हुए।

जब तक किशनदा दिल्ली में रहे, तब तक यशोधर बाबू ने उनके पट्टशिष्य और उत्साही कार्यकर्ता की भूमिका पूरी निष्ठा से निभाई। किशनदा के चले जाने के बाद उन्होंने ही उनकी कई परम्पराओं को जीवित रखने की कोशिश की और इस कोशिश में पत्नी और बच्चों को नाराज़ किया। घर में होली गवाना, ज़न्यो पुन्यूँ के दिन कुमाऊँनियों को जनेऊ बदलने के लिए अपने घर आमंत्रित करना, रामलीला की तालीम के लिए क्वार्टर का एक कमरा दे देना– ये तथा ऐसे ही कई और काम यशोधर बाबू ने किशनदा से विरासत में लिये थे। उनकी पत्नी और बच्चों को इन आयोजनों पर होने वाला खर्च और इन आयोजनों में होने वाला शोर, दोनों ही सख्त नापसन्द थे। बदतर यही कि इन आयोजनों के लिए समाज में भी कोई खास उत्साह रह नहीं गया है।

यशोधर जी चाहते हैं कि उन्हें समाज का सम्मानित बुजुर्ग माना जाये लेकिन जब समाज ही न हो तो यह पद उन्हें क्यों मिले? यशोधर जी चाहते हैं कि बच्चे मेरा आदर करें और उसी तरह हर बात में मुझसे सलाह लें जिस तरह मैं किशनदा से लिया करता था। यशोधर बाबू डेमोक्रेट हैं और हरगिज यह दुराग्रह नहीं करना चाहते कि बच्चे उनके कहे को पत्थर की लकीर समझें। लेकिन यह भी क्या हुआ कि पूछा न ताछा, जिसके मन में जैसा आया करता रहा! ग्राण्टेड, तुम्हारी नॉलेज ज्यादा होगी, लेकिन एक्सपीरिएन्स का कोई सबसीट्यूट ठहरा नहीं बेटा! मानो न मानो झूठे मुँह से सही–एक बार पूछ तो लिया करो, ऐसा कहते हैं यशोधर बाबू, और बच्चे यही उत्तर देते हैं कि बब्बा आप तो हद करते हैं! जो बात आप जानते ही नहीं, आप से क्यों पूछें?

प्रवचन सुनने के बाद यशोधर बाबू सब्जी मण्डी गये। यशोधर बाबू को अच्छा लगता, अगर उनके बेटे बड़े होने पर अपनी तरफ़ से यह प्रस्ताव करते कि दूध लाना, राशन लाना, सी.जी.एच.एस. डिस्पेन्सरी से दवा लाना, सदर बाजार जाकर दालें लाना, पहाड़गंज से सब्जी लाना, डिपो से कोयला लाना– ये सब काम आप छोड़ दें, अब हम कर दिया करेंगे! एकाध बार बेटों से खुद उन्होंने कहा तब वे एक–दूसरे से कहने लगे कि तू किया कर, तू क्यों नहीं करता? इतना कुहराम मचा और लड़कों ने एक–दूसरे को इतना ज्यादा बुरा–भला कहा कि यशोधर बाबू ने इस विषय को उठाना ही बन्द कर दिया। जबसे बड़ा बेटा विज्ञापन कम्पनी में बड़ी नौकरी पा गया है, तब से बच्चों का इस प्रसंग में एक ही वक्तव्य है– बब्बा, हमारी समझ में नहीं आता कि इन कामों के लिए आप एक नौकर क्यों नहीं रख लेते? इजा को भी आराम हो जायेगा। कमाऊ बेटा नमक छिड़कते हुए यह भी कहता की नौकर की तनख्वाह मैं दे दूँगा।

यशोधर बाबू को यही समहाउ इम्प्रॉपर मालूम होता है कि उनका बेटा अपना वेतन उनके हाथ में नहीं रखे! यह सही है कि वेतन स्वयं बेटे के अपने हाथ में नहीं आता, एकाउण्ट ट्रान्सफर द्वारा बैंक में आता है लेकिन क्या बेटा बाप के साथ ज्वाइण्ट एकाउण्ट नहीं खोल सकता था? झूठे मुँह से ही सही, एक बार ऐसा कहता तो! उस पर बेटे का अपने वेतन को अपना समझते हुए बार–बार कहना कि यह काम मैं अपने पैसे से कर रहा हूँ आपसे नहीं, जो आप नुक्ताचीनी करें। इस क्रम में बेटे ने एक क्वार्टर तक अपना बना लिया है। अपना वेतन अपने ढंग से वह इस घर पर ख़र्च कर रहा है। कभी कारपेट बिछवा रहा है, कभी पर्दे लगवा रहा है। कभी सोफा आ रहा है, कभी डनलप वाला डबलबेड और सिंगार–मेज। कभी टीवी, कभी फ्रिज़। क्या हुआ यह? और ऐसा भी नहीं कहता कि लीजिए पिताजी, मैं आपके लिए यह टीवी ले आया हूँ। कहता यही है कि यह मेरा टीवी है समझे, इसे कोई न छुआ करे। क्वार्टर ही उसका हो गया! यह अच्छी रही! अब इनका एक नौकर भी रखो घर में। इनका नौकर होगा तो इनके लिए ही होगा। हमारे लिए तो क्या होगा– ऐसा समझाते हैं यशोधर बाबू घरवाली को! काम सब अपने हाथ से ही ठीक होते हैं। नौकरों को सौंपा कारोबार चौपट हुआ। कहते हैं यशोधर बाबू, पत्नी भी सुनती है, मगर नहीं सुनती। पर सुनकर अब चिढ़ती भी नहीं। सब्जी का झोला लेकर यशोधर बाबू खुदी हुई सड़कों और टूटे हुए क्वार्टर के मलबे से पटे हुए नालों को पार करके स्क्वेअर के उस कोने में पहुँचे जिसमें तीन क्वार्टर अब भी साबुत खड़े हुए थे। उन तीन में से कुल एक को अब तक एक सिरफिरा आबाद किये हुए था। बाहर बदरंग तख्ती में उसका नाम लिखा है– वाई. डी. पन्त।

इस क्वार्टर के पास पहुँचकर आज वाई. डी. पन्त को पहले धोखा हुआ कि किसी ग़लत जगह आ गये हैं। क्वार्टर के बाहर एक कार थी, कुछ स्कूटर–मोटर साइकिल। बहुत–से लोग विदा ले–दे रहे थे। बाहर बरामदे में रंगीन काग़ज की झालरें और गुब्बारे लटके हुए थे और रंग–बिरंगी रोशनियाँ जली हुई थीं।

फिर उन्हें अपना बेटा भूषण पहचान में आया जिससे कार में बैठा हुआ कोई साहब हाथ मिला रहा था और कह रहा था, गिव माई वार्म रिगाड्र्स टू योर फ़ादर।

यशोधर बाबू ठिठक गये। उन्होंने अपने से पूछा– क्यों, आज मेरे क्वार्टर में क्या हो रहा होगा? उसका जवाब भी उन्होंने अपने को दिया– जो करते होंगे ये लौण्डे–मौण्डे, इनकी माया यही जानें!

अब यशोधर बाबू का ध्यान इस ओर गया कि उनकी पत्नी और उनकी बेटी भी कुछ मेमसाबों को विदा करते हुए बरामदे में खड़ी हैं। लड़की जीन्स और बगैर बाँह का टॉप पहने है। यशोधर बाबू उससे कई मर्तबा कह चुके हैं कि तुम्हारी यह पतलून और सैण्डो बनाने वाली ड्रैस तो समहाउ इम्प्रॉपर मालूम होती है। लेकिन वह भी जिद्दी ऐसी है कि इसे ही पहनती है और पत्नी भी उसी की तरफ़दारी करती है। कहती है– वह सिर पर पल्लू–वल्लू मैंने कर लिया बहुत तुम्हारे कहने पर, समझे? मेरी बेटी वही करेगी जो दुनिया कर रही है। पुत्री का पक्ष लेने वाली यह पत्नी इस समय होठों पर लाली और बालों पर खिज़ाब लगाये हुए थी जबकि ये दोनों ही चीज़ें, आप कुछ भी कहिए, यशोधर बाबू को समहाउ इम्प्रॉपर ही मालूम होती हैं।

आधुनिक किस्म के अजनबी लोगों की भीड़ देखकर यशोधर बाबू अँधेरे में ही दुबके रहे। उनके बच्चों को इसीलिए शिकायत है कि बब्बा तो एल डी सी टाइपों से ही मिक्स करते हैं।

जब कार वाले लोग चले गये तब यशोधर बाबू ने अपने क्वार्टर में कदम रखने का साहस जुटाया। भीतर अब भी पार्टी चल रही थी उनके पुत्र–पुत्रियों के कई मित्र तथा उनके कुछ रिश्तेदार जमे हुए थे। उनके बड़े बेटे ने झिड़की–सी सुनाई, 'बब्बा आप भी हद करते हैं! सिल्वर वेडिंग के दिन साढ़े आठ बजे घर पहुँचे हैं। अभी तक मेरे बॉस आपकी राह देख रहे थे'।

'हम लोगों के यहाँ सिल्वर वेडिंग कब से होने लगी होगी'। यशोधर बाबू ने शर्मीली हँसी हँस दी।

'जबसे तुम्हारा बेटा डेढ़ हजार माहवार कमाने लगा, तब से।' – यह टिप्पणी थी चन्द्रदत्त तिवारी की, जो इसी साल एम.ए. पास हुआ है और दूर के रिश्ते से यशोधर बाबू का भानजा लगता है।

यशोधर बाबू को अपने बेटों से तमाम तरह की शिकायतें हैं लेकिन कुल मिलाकर उन्हें यह अच्छा लगता है कि लोग–बाग उन्हें ईर्ष्या का पात्र समझते हैं। भले ही उन्हें भूषण का गैर–सरकारी नौकरी करना समझ में न आता हो तथापि वह यह बखूबी समझते हैं कि इतनी छोटी उम्र में डेढ़ हज़ार माहवार प्लस कन्वेन्स एलाउन्स ऐण्ड तुम्हारा अदर वर्क्स पा जाना कोई मामूली बात नहीं है। इसी तरह ही यशोधर बाबू ने बेटों की ख़रीदी हुई हर नयी चीज़ के सन्दर्भ में यही टिप्पणी की हो कि ये क्या हुई, समहाउ मेरी तो समझ में आता नहीं। इसकी क्या जरूरत थी, तथापि उन्हें कहीं इस बात से थोड़ी खुशी भी होती है कि इस चीज़ के आ जाने से उन्हें नये दौर के, निश्चय ही गलत, मानकों के अनुसार बड़ा आदमी मान लिया जा रहा है। मिसाल के लिए, जब बेटों ने गैस का चूल्हा जुटाया तब यशोधर बाबू ने उसका विरोध किया और आज भी वह यही कहते हैं कि इस पर बनी रोटी मुझे तो समहाउ रोटी–जैसी लगती नहीं, तथापि वह जानते हैं कि गैस न होने पर इस नगर में चपरासी श्रेणी के मान लिये जाते। इस तरह फ्रिज के सन्दर्भ में आज भी यशोधर बाबू यही कहते हैं कि मेरी समझ में आज तक यह नहीं आया कि इसका फ़ायदा क्या है? बासी खाना, खाना अच्छी आदत नहीं ठहरी। और यह ठहरा इसी काम का कि सुबह बना के रख दिया और शाम को खाया। इसमें रखा हुआ पानी भी मेरे मन को तो भाता नहीं, गला पकड़ लेता है। कहते हैं, मगर इस बात से सन्तुष्ट होते हैं कि घर आये साधारण हैसियत वाले मेहमान इस फ्रिज का पानी पीकर अपने को धन्य अनुभव करते हैं।

अपनी सिल्वर वेडिंग की यह भव्य पार्टी भी यशोधर बाबू को समहाउ इम्प्रॉपर की लगी तथापि उन्हें इस बात से सन्तोष हुआ कि जिस अनाथ यशोधर के जन्मदिन तक पर कभी लड्डू नहीं आये, जिसने अपना विवाह भी को–ऑपरेटिव से दो–चार हज़ार कर्ज़ निकालकर किया, बगैर किसी ख़ास धूमधाम के, उसके विवाह की पच्चीसवीं वर्षगाँठ पर केक, चार तरह की मिठाई, चार तरह की नमकीन, फल, कोल्ड ड्रिंक्स, चाय और, नज़र अन्दाज़ कैसे करें, व्हिस्की– सब मौजूद है।

व्हिस्की की लगभग ख़ाली हाथ बोतल को इंगित करते हुए यशोधर बाबू ने पूछा, क्यों भूषण, व्हाट इज़ दिस? भूषण बोला, व्हिस्की है और क्या! मैंने अपने बॉस को, कुलीग्स को इनवाइट किया था। उनको क्या पिलाता, शिकंजी?
शिकंजी ज़हर होती है? यशोधर बाबू ने व्यंग्य किया, जब हमारे यहाँ व्हिस्की सर्व करने का कोई ट्रेडिशन ही नहीं ठहरा, तब हमें कोई फोर्स तो क्या कर सकता है? मैं तो कहता हूँ कि यह पार्टी करने की भी क्या ज़रूरत पड़ गयी थी? किसी ने कहा था तुमसे? सवेरे जब मैं गया तब तो इसकी कोई बात नहीं थी।

एक कोने में बैठकर कोला में ढली हुई व्हिस्की पीता हुआ गिरीश बोला, गुनहगार मैं हूँ जीजा जी। मुझे आज सुबह बैठे–बैठे याद आयी कि आपकी शादी छह फ़रवरी सन् सैंतालिस को हुई थी और इस हिसाब से आज उसे पच्चीस साल पूरे हो गये हैं। मैंने आपके दफ़्तर फोन किया लेकिन शायद आपका फोन खराब था। तब मैंने भूषण को फ़ोन किया। भूषण ने कहा, शाम को आ जाइये, पार्टी करते हैं। मैं अपने बॉस को भी बुला लूँगा इसी बहाने।

गिरीश यशोधर बाबू की पत्नी का चचेरा भाई है। बड़ी कम्पनी में मार्केटिंग मैनेजर है और इसकी सहायता से ही यशोधर बाबू के बेटे को विज्ञापन कम्पनी में बढ़िया नौकरी मिली है। यशोधर बाबू को अपना यह सम्पन्न साला समहाउ भयंकर ओछाट यानी ओछेपन का धनी मालूम होता है। उन्हें लगता है कि इसी ने भूषण को बिगाड़ दिया है। कभी कहते हैं ऐसा, तो पत्नी बरस पड़ती है– जिन्दगी बना दी तुम्हारे सेकेण्ड क्लास बी.ए. पास बेटे की, कहते हो बिगाड़ दिया?

भूषण ने अपने मित्रों–सहयोगियों का यशोधर बाबू से परिचय कराना शुरू किया। उनकी मैनी हैप्पी रिटर्न्स ऑफ़ डे का थैंक्यू कहकर जवाब देते हुए, जिन लोगों का नाम पहले बता दिया गया हो उनकी ओर वाई. डी. पन्त होम मिनिस्ट्री, भूषण से फादर कहकर स्वयं हाथ बढ़ा देने में यशोधर बाबू ने हर क्षण यह बताने की कोशिश की कि भले ही वह सरकारी कुमाऊँनी है तथापि विलायती रीति–रिवाज़ से भी भली–भाँति परिचित हैं। किशनदा कहा करते थे कि आना सब कुछ चाहिए, सीखना हर एक की बात ठहरी लेकिन अपनी छोड़ना नहीं हुई। टाई सूट पहनना आना चाहिए लेकिन धोती–कुर्ता अपनी पोशाक है, यह नहीं भूलना चाहिए।

अब बच्चों ने एक और विलायती परम्परा के लिए आग्रह किया– यशोधर बाबू अपनी पत्नी के साथ केक काटें।

घरवाली पहले थोड़ा शरमायी लेकिन जब बेटी ने हाथ खींचा तब उसे केक के पीछे जा खड़ा होने में कोई हिचक नहीं हुई। वहीं से उसने पति को भी पुकारा।

यशोधर बाबू को केक काटना बचकानी बात मालूम हुई। बेटी उन्हें लगभग खींचकर ले गयी। यशोधर बाबू ने कहा, 'समहाउ आई डॉण्ट लाइक ऑल दिस'; लेकिन ऐनी वे, उन्होंने केक काट ही लिया। गिरीश ने उसकी अनमनी किन्तु सन्तुष्ट छवि कैमरे में कैद कर ली। अब पति–पत्नि से कहा गया कि वे केक से मुँह मीठा करें एक–दूसरे का। पत्नी ने खा लिया मगर यशोधर बाबू ने इनकार कर दिया। उनका कहना था कि मैं केक खाता नहीं। इसमें अण्डा पड़ा होता है। उन्हें याद दिलाया गया कि अभी कुछ वर्षों पहले तक आप मांसाहारी थे। एक टुकड़ा केक खा लेने में क्या हो जायेगा? लेकिन वह नहीं माने। तब उनसे अनुरोध किया गया कि लड्डू ही खा लें। भूषण के एक मित्र ने लड्डू उठाकर उनके मुँह में ठूँसने का यत्न किया। लेकिन यशोधर बाबू इसके लिए भी राजी नहीं हुए। उनका कहना था कि मैंने अब तक सन्ध्या नहीं की है। इस पर भूषण ने झुँझलाकर कहा, तो बब्बा पहले जा कर सन्ध्या कीजिए। आपकी वजह से हम लोग कब तक रुके रहेंगे?

नहीं नहीं, आप सब लोग खाइये यशोधर बाबू ने बच्चों के दोस्तों से कहा प्लीज़ गो अहेड, नो फॉरमेल्टी।

यशोधर बाबू ने आज पूजा में कुछ ज्यादा ही देर लगायी। इतनी देर कि ज्यादातर मेहमान उठकर चले गए। उनकी पत्नी, उनके बच्चे, बारी–बारी से आकर झाँकते रहे और कहते रहे– जल्दी कीजिए, मेहमान लोग जा रहे हैं। शाम की पन्द्रह मिनट की पूजा को लगभग पच्चीस मिनट तक खींच लेने के बाद भी जब बैठक से मेहमानों की आवाजें आती सुनाई दी तब यशोधर बाबू पद्मासन साधकर ध्यान लगाये बैठ गये। वह चाहते थे कि उन्हें प्रकाश का एक नीला बिन्दु दिखाई दे मगर उन्हें किशनदा दिखाई दे रहे थे।

यशोधर बाबू किशनदा से पूछ रहे थे कि 'जो हुआ होगा' से आप कैसे मर गये? किशनदा कह रहे थे कि भाऊ, सभी जन इसी 'जो हुआ होगा' से मरते हैं। गृहस्थ हो, ब्रह्मचारी हो, अमीर हो, गरीब हो– मरते 'जो हुआ होगा' से ही हैं। हाँ–हाँ, शुरू में और आखिर में, सब अकेले ही होते हैं। अपना कोई नहीं ठहरा दुनिया में। बस एक नियम अपना हुआ।

यशोधर बाबू पाजामे–कुर्ते पर ऊनी ड्रेसिंग गाऊन पहने, सिर पर गोल विलायती टोपी, पाँवों में देशी खड़ाऊँ और हाथ में डण्डा धारण किये इस किशनदा से अकेलेपन के विषय में बहस करनी चाही उनका विरोध करने के लिए नहीं, बल्कि बात कुछ और अच्छी तरह समझने के लिए।

हर रविवार किशनदा शाम को ठीक चार बजे यशोधर बाबू के घर आया करते थे। उनके लिए गरमागरम चाय बनवायी जाती थी। उनका कहना था कि जिसे फूँक मारकर न पीना पड़े वह चाय कैसी? चाय सुड़कते हुए किशनदा प्रवचन करते थे और यशोधर बाबू बीच–बीच में शंकाएँ उठाते थे।

यशोधर बाबू को लगता है कि किशनदा आज भी मेरा मार्गदर्शन कर सकेंगे और बता सकेंगे कि मेरे बच्चे जो कुछ भी कर रहे हैं, उसके विषय में मेरा रवैया क्या होना चाहिए?

लेकिन किशनदा तो वही अकेलेपन का खटराग अलापने पर आमादा–से मालूम होते हैं, कैसी बीवी कहाँ के बच्चे? यह सब माया ठहरी और यह जो भूषण तेरा आज इतना उछल रहा है वह भी किसी दिन इतना ही अकेला और असहाय अनुभव करेगा जितना कि आज तू कर रहा है।

यशोधर बाबू बात आगे बढ़ाते लेकिन उनकी घरवाली उन्हें झिड़कते हुए आ पहुँची कि क्या आज पूजा में ही बैठे रहोगे? यशोधर बाबू आसन से उठे और उन्होंने दबे स्वर में पूछा, मेहमान गये? पत्नी ने बताया कुछ गये, कुछ हैं। उन्होंने जानना चाहा कि कौन–कौन हैं? आश्वस्त होने पर कि सभी रिश्तेदार ही हैं वह उसी लाल गमछे में बैठक में चले गये

जिसे पहनकर वह सन्ध्या पर बैठे थे। यह गमछा पहनने की आदत भी उन्हें किशनदा से विरासत में मिली है और उनके बच्चे इसके सख्त खिलाफ हैं।

एवरीबडी गॉन, पार्टी ओवर? यशोधर बाबू ने मुस्कुराकर अपनी बेटी से पूछा, अब गोया गमछा पहने रहा जा सकता है? उनकी बेटी झल्लायी, लोग चले गये इसका मतलब यह थोड़ी है कि आप गमछा पहनकर बैठक में आ जायें? बाबा यू आर द लिमिट।

बेटी, हमें जिसमें सज आयेगी वही करेंगे ना, यशोधर बाबू ने कहा, तुम्हारी तरह जीन्स पहनकर हमें तो सज आती नहीं। यशोधर बाबू की दृष्टि मेज़ पर रखे कुछ पैकेटों पर पड़ी। बोले, ये कौन भूले जा रहा है?

भूषण बोला, आपके लिए प्रेजेण्ट हैं, खोलिए ना।

अब इस उम्र में क्या हो रहा प्रेजेण्ट–व्रीजेण्ट। तुम खोलो, तुम्हीं इस्तेमाल करो। यशोधर बाबू शर्मीली हँसी हँसे।

भूषण ने सबसे बड़ा पैकेट उठाया और उसे खोलते हुए बोला, इसे तो ले लीजिए। यह मैं आपके लिए लाया हूँ। ऊनी ड्रेसिंग गाउन है। आप सवेरे जब दूध लेने जाते हैं बब्बा, फटा फ्लोवर पहन के चले जाते हैं जो बहुत ही बुरा लगता है। आप इसे पहन के जाया कीजिए।

बेटी पिता का पजामा–कुर्ता उठाकर लायी कि इसे पहनकर गाउन पहनें।

थोड़ा सा ना–नुच करने के बाद यशोधर जी ने इस आग्रह की रक्षा की। गाउन का सैश कसते हुए उन्होंने कहा, अच्छा तो यह ठहरा ड्रेसिंग गाउन।

उन्होंने कहा और उनकी आँखों की कोर में जरा–सी नमी चमक गयी।

यह कहना मुश्किल है कि इस घड़ी उन्हें यह बात चुभ गयी कि उनका जो बेटा यह कह रहा है कि आप सवेरे यह ड्रेसिंग गाउन पहन कर दूध लाने जाया करें, वह यह नहीं कह रहा है कि दूध मैं ला दिया करूँगा या कि इस गाउन को पहनकर उनके अंगों में वह किशनदा उतर आया है जिसकी मौत 'जो हुआ होगा' से हुई।

– **मनोहर श्याम जोशी**

हिन्दी पखवाड़ा 2020 के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं के पुरस्कार विजेता

कोविड महामारी काल में भी महानिदेशालय अपने राजभाषायी कर्त्तव्यों के निर्वहन अनुपालन में कहीं पीछे नहीं रहा और नियत तय समय अर्थात दिनांक 14 सितम्बर, 2020 को उद्घाटन और 01 अक्तूबर, 2020 को समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन कोविड प्रोटोकाल के साथ सफलतापूर्वक किया गया। इस दौरान आयोजित लिखित प्रतियोगिताओं में भाग लेने वाले प्रतियोगियों का ब्यौरा अंकन फाठकों की जानकारी के लिए प्रस्तुत किया जा रहा है:–

श्रुतलेख प्रतियोगिता (केवल डाटा एंट्री ऑपरेटरों एवं एम टी एस स्टाफ के लिए)

(1)	सुश्री सुमन मीणा, डाटा एंट्री ऑपरेटर	प्रथम स्थान
(2)	सुश्री मंजिल, डाटा एंट्री ऑपरेटर	द्वितीय स्थान
(3)	श्री योगेश, डाटा एंट्री ऑपरेटर	तृतीय स्थान
(4)	श्री भारत भूषण जोशी, डाटा एंट्री ऑपरेटर	सांत्वना पुरस्कार

हिन्दी टिप्पण एवं आलेखन प्रतियोगिता

(1)	श्री प्रिंस आर. के., उच्च श्रेणी लिपिक	प्रथम स्थान
(2)	श्री मुनेश कुमार मीना, सहायक अनुभाग अधिकारी	द्वितीय स्थान
(3)	श्री विकास सिंह, कनिष्ठ सचिवालय सहायक	तृतीय स्थान
(4)	श्री लोकेश कुमार मीना, सहायक अनुभाग अधिकारी	सांत्वना पुरस्कार

शब्द एवं वाक्यांश प्रतियोगिता

(1)	श्री हरीश कुमार, वरिष्ठ सचिवालय सहायक	प्रथम स्थान
(2)	श्री धर्मराज जाट, एसडीओ–II	द्वितीय स्थान
(3)	श्री विनोद कुमार, निजी सहायक	तृतीय स्थान
(4)	श्री रूपेश कुमार, उच्च श्रेणी लिपिक	सांत्वना पुरस्कार

हिन्दी निबंध प्रतियोगिता

(1)	श्री पद्म भूषण मिश्र, अनुभाग अधिकारी	प्रथम स्थान
(2)	श्री मदन मोहन भट्ट, निजी सहायक	द्वितीय स्थान
(3)	श्री सोनू पाल, उच्च श्रेणी लिपिक	तृतीय स्थान
(4)	श्री पंखी लाल मीणा, एम टी एस	सांत्वना पुरस्कार

महानिदेशालय में वर्ष 2019–20 के दौरान हिन्दी में सर्वाधिक काम करने के लिए निम्नलिखित अधिकारियों/कर्मचारियों को भी पुरस्कार प्रदान किए गए :–

क्र.सं.	नाम तथा पदनाम	अनुभाग	पुरस्कार
(1)	श्री जगदीश बिश्नोई, सहायक महानिदेशक	किराया/अधिग्रहण	प्रथम स्थान
(2)	श्री राकेश मीना, कनिष्ठ सचिवालय सहायक	छावनी	प्रथम स्थान
(3)	श्रीमती मंजू मलिक, उच्च श्रेणी लिपिक	प्रशासन	द्वितीय स्थान
(4)	श्री सोनू पाल, उच्च श्रेणी लिपिक	अधिग्रहण–II	द्वितीय स्थान
(5)	श्री राजीव कुमार, एसडीओ–II	अधिग्रहण–II	द्वितीय स्थान
(6)	श्री रवि कुमार, वरिष्ठ सचिवालय सहायक	किराया	तृतीय स्थान
(7)	श्री यशपाल, वरिष्ठ सचिवालय सहायक	किराया	तृतीय स्थान
(8)	श्री मुनेश कुमार मीना, सहायक अनुभाग अधिकारी	समन्वय	तृतीय स्थान
(9)	सुश्री मोनिका रस्तोगी, एसडीओ–II	किराया	तृतीय स्थान

संकलन : राजभाषा अनुभाग

हिन्दी पखवाड़ा-2020 का पुरस्कार वितरण समारोह

महानिदेशक महोदया विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कार प्रदान करते हुए

महानिदेशक महोदया विजेता प्रतिभागी को पुरस्कृत करते हुए

समारोह के दौरान सामाजिक दूरी का ध्यान रखा गया

पुरस्कार वितरण समारोह के अवसर पर महानिदेशक महोदया का संबोधन

महानिदेशक, रक्षा सम्पदा द्वारा गृह पत्रिका 'सम्पदा भारती' का विमोचन

महानिदेशक महोदया 'सम्पदा भारती' के 13वें अंक का अनावरण करते हुए

पत्रिका अनावरण पश्चात उसका विमोचन

सम्पदा भारती 13वां अंक

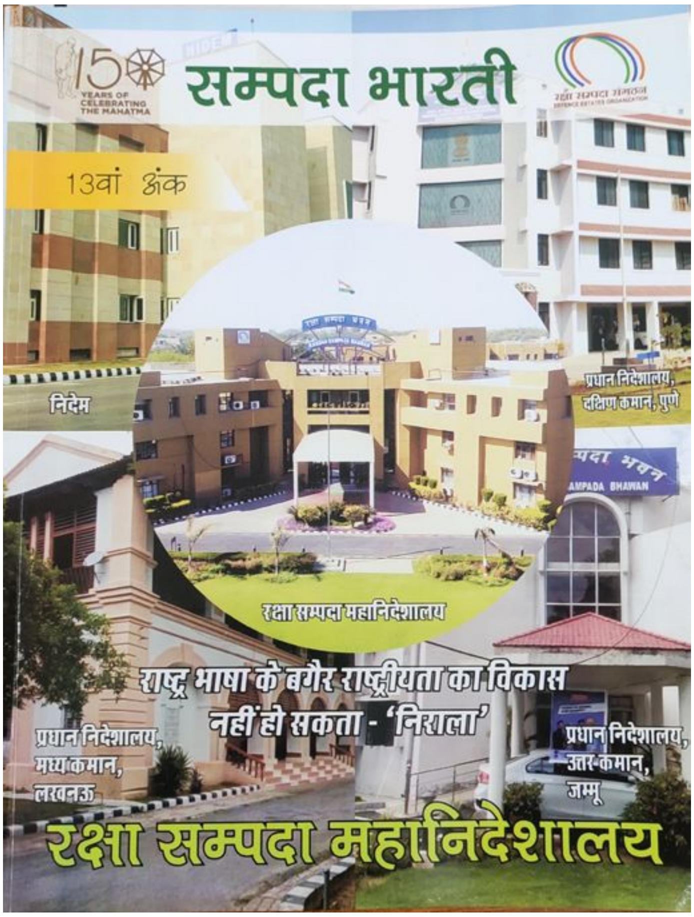

मेरा कोना

प्रकृति

हरे–भरे खेतों में
बरस रही हैं बूंदें
खुशी–खुशी से आया सावन
भर गया मेरा आंगन।

लग रहा है ऐसा जैसे
आया बसंत
लेके फूलों का जश्न।

धूप से प्यासे मेरे तन को
बूंदों ने दी ऐसी अंगड़ाई
तनमन मेरा भीग गया
बजने लगी शहनाई।

कितना सुन्दर ये संसार
पर है जग में हाहाकार
यही है एक निवेदन मेरा
न करो प्रकृति से खिलवाड़।

नरेश कुमार
रक्षा सम्पदा निदेशालय, जयपुर

चुप्पी लाई तन्हाई

चांद की चांदनी आज रात कहीं गुम है
मानो अंधकार तले प्रकाश कहीं लुप्त है
न ही झींगुर झिनझिना रहे हैं, और
न ही जुगनू चमक रहे हैं।

सन्नाटा इतना है कि
कान फटे जा रहे हैं।
घरों के दरवाजे ऐसे बंद हैं
कि जैसे सालों से खुले न हों
न ही ताक पर कोई दिवाला रखा है,
न ही बल्ब जला रखा है
"लगता है सबको सांप सूंघ गया है
या इनकी वजह मेरी वीरानियां हैं
गुमशुदगी है, तन्हाइयां हैं
या कल की चिन्ता है?"

दक्षिता सिंह
रक्षा सम्पदा निदेशालय, जयपुर

महंगाई एक डायन

आज महंगाई सुरसा के मुंह के समान बढ़ रही है। रोज बढ़ रहे भाव गणित की कैलकुलेशन मांगते हैं। सब्जी खरीदते समय एड़ी–चोटी का जोर लगाना पड़ता है भाव को नीचे करवाने में। डीजल और पेट्रोल के भाव आसमान छू रहे हैं।

कई बार सोचा पैसा बचाऊंगा, पर महंगाई का ठीकरा हर बार फूट जाता है। इस बार भी यही हुआ। श्रीमती ने कहा – 'इस बार तो हार खरीदना है करवा चौथ आ रही है।' मुझे तो जोर का झटका लगा। किसी तरह मान–मनौवल कर श्रीमती जी को समझाया अगली बार लेने का वायदा किया। पर श्रीमती ने हमसे मुंह मोड़ लिया। बच्चों की तो पूछो मत, वो तो दो कदम आगे हैं। लैपटॉप मांगते हैं। मुझे दिन में चाँद–सितारे दिखने लगते हैं। दिल पर हाथ रखे बैठा हूँ। अपनी जान को हाथ में थामे बैठा हूँ। बच्चों को चोर की दाढ़ी में तिनका नजर आता है और मुझे तो पूरी दाढ़ी ही तिनके से बनी नजर आती है।

वे लोग जो रोज कमाते–खाते हैं महँगाई से खून के आंसू रो रहे हैं। बंधी–बंधाई नौकरी वाले तो चलो जीवन यापन सरलता से कर लेंगे। छोटी बचत बड़ा आधार नहीं। पर फिर भी समझ–बूझ कर मितव्ययी तरीके से खर्च कर बुरे दिनों के लिए बचाया जा सकता है। बाकी मंहगाई क्या ये तो हर जमाने, हर समय मौजूद है।

शिव कुमार 'धाकड़'
रक्षा सम्पदा कार्यालय, सिकंदराबाद

मेरा कोना

समय

समय जा रहा है आगे
कहाँ खड़े हैं हम
मालूम नहीं इस दुनिया का
क्या होगा कल

हर पल एक याद सताती
जीवन की सच्चाई बताती
समय हमको भगा रहा है
या हम समय को

क्या पाया क्या खोया जीवन में
मालूम नहीं किसी को
समय के साथ चलते जाना है
यही पता है सबको

जीवन तो एक बार ही है
तो क्यों भागते रहना
कुछ थोड़ा ठहर के देखो
कोई खड़ा है पीछे अपना

समय को तो चलते ही रहना है
आज का पल दुबारा नहीं आना है
खुशियों को लाना है जीवन में
यही सबको मेरा कहना है।

संजय शंकर चौरे
छावनी परिषद, अहमदनगर

मानव से कोरोना वायरस का वार्तालाप

मानव हुआ परेशान कोरोना से,
तो करने लगा विलाप
सामने आया कोरोना तो
हुआ दोनों में वार्तालाप
रहस्यमय मुस्कुराहट में, बोला कोराना
सारी प्रकृति खुलकर ले रही है साँस
हे मानव! बस तेरे मुख पर मास्क
ये देखकर मुझे अच्छा लगा
इतना सुन, मानव गुस्से से झल्लाया
और कोरोना को दोषी ठहराया
बोला शहर–शहर तेरा कहर
सारी दुनिया में कोहराम मचाया है
सारी गलतियां तेरी है कोरोना
अरे तू ने ही, वायरस फैलाया है
कोरोना बोला मैंने थोड़ा वायरस क्या फैला दिया
सारा इल्जाम मुझ पर ही लगा दिया
कान खोल कर सुन हे मानव
अपनी तबाही तू खुद लेकर आया
जिन जीवों को नहीं खाना चाहिए
तुने उन्हें भी चबाकर खाया
नाराज हो गई प्रकृति तुझ से
तुने प्रदूषण फैलाया
जैसे ही कुछ महीने, तेरा लॉकडाउन हुआ
पृथ्वी क्या, आकाश भी साफ हुआ
अपनी गलतियों को लेकर अब
मानव ने माथा पीट लिया
शर्मशार होकर बोला
एक दूजे पर इल्जाम नहीं लगाएंगे
हम दोनों ही गुनहगार हैं इस तबाही के,
हम गलतियां नहीं दोहराएंगे।

नरेन्द्र चौहान
रक्षा सम्पदा महानिदेशालय

एक-सा रहता नहीं वक्त

एक–सा रहता नहीं वक्त हमेशा सबका
कल हवेली थी जहाँ आज है रस्ता सबका
आसमाँ देखते रहते हैं नजूमी यूँ ही
अपने अन्दर ही चमकता है सितारा सबका

चाँद–सूरज भी लिखा करते हैं लहरों का हिसाब
एक रफ़्तार से बहता नहीं दरिया सबका
किसी में उसकी चाल है किसी में उसका रंग
थोड़ी–थोड़ी हर जगह माँ है सब के संग

गिरजा में ईसा बसें मस्जिद में रहमान
माँ के पैरों से चले हर आँगन भगवान
निर्मल निश्चल प्रेम था, या हाथों में स्वाद
हर भाजी हर दाल में माँ आती है याद

जादूगर माँ–बाप है हर दम रहें जवान
जब बूढ़े होने लगें बन जाएं सन्तान
इरादा बाँधने तक मेरी अपनी जिम्मेदारी है
फिर उसके बाद जो हो उसपे पछताना नहीं आता

कभी–कभी यूँ भी हमने अपने जी को बहलाया है
जिन बातों को खुद नहीं समझे औरों को समझाया है
यूँ तो कोई कमी नहीं है सब कुछ है क्या नहीं
देखे हुए में सोचा हुआ ही मिला नहीं

रास्ते का पेड़ उखड़ने से दिल ग़मज़दा तो है
इसकी ख़ुशी भी है कि वो मुझ पर गिरा नहीं
जो हो चुका है उसका ही मातम है हर जगह
होना है जो अभी वो किसी को पता नहीं

होश वालों को ख़बर क्या बेखुदी क्या चीज है।
इश्क कीजे फिर समझिये ज़िन्दगी क्या चीज है।।

चन्दन कुमार चौधरी
रक्षा सम्पदा महानिदेशालय

स्त्री विमर्श : पुरातन मान्यताएं

सामाजिक जीवन में पुरातन मान्यताओं, विशेषकर महिलाओं से जुड़ी प्रथाओं का विशेष स्थान है। महिलाओं से संबन्धित कई मान्यताओं को महिला विरोधी माना जाता है तथा इन्हें महिलाओं के शोषण से जोड़ कर देखा जाता है। इनमें से कईयों का आकलन प्रायः नकारात्मक दृष्टिकोण से किया जाता है। इन वर्तमान स्वरूप को देखते हुए इनके प्रति आकलनकर्ताओं का नकारात्मक दृष्टिकोण संभवतः तार्किक भी हो सकता है। किन्तु जरूरी नहीं कि इन मान्यताओं अथवा प्रथाओं का आविर्भाव नकारात्मक उद्देश्यों से ही हुआ हो। संभव है कि इनके अस्तित्व में आने की पृष्टभूमि में सकारात्मक उद्देश्य रहे हो। यहाँ यह स्पष्ट करना उचित होगा कि इस लेख का उद्देश्य महिला विरोधी प्रथाओं का समर्थन करना न होकर इन में से कुछ प्रथाओं के मूल में छुपे उद्देश्यों को उजागर कर लिंग भेद की कटुता को कम करना तथा समाज में पुरुष और स्त्री वर्ग के बीच विश्वास स्थापित करना है। आइए इन में से कुछ प्रथाओं का विवेचन किया जाए।

भारतीय परिप्रेक्ष्य में महिला विरोधी प्रथाओं में परदा प्रथा को एक गंभीर सामाजिक बुराई माना जाता है। विश्व की प्रमुख प्राचीन सभ्यताओं और सांस्कृतिक विरासतों के अध्ययन से देखा गया है कि परदा प्रथा का जन्म विश्व के सबसे गरम, शुष्क और कठिन भौगोलिक परिवेश वाले अरब देशों में हुआ। इन देशों में झुलसाने वाली गर्मी, शुष्क हवाओं और रेतीले बवंडरों की भरमार पाई जाती है। स्वाभाविक है कि इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए इन देशों में पुरुषों और महिलाओं दोनों द्वारा सिर से लेकर पैरों तक चोगे जैसी पोशाक धारण की जाती है। अरब राष्ट्राध्यक्षों की पोशाक में तो पुरुषों के केवल मुंह ही दिखाई पड़ते हैं। इस प्रकार देखा जाए तो इन क्षेत्रों में परदा प्रथा केवल महिलाओं में ही नहीं अपितु पुरुषों में भी प्रचलित है और इस प्रथा का आविर्भाव पुरुषों का वर्चस्व स्थापित करने के उद्देश्य से न होकर महिलाओं को दुष्कर परिवेश से बचाना अधिक तार्किक जान पड़ता है।

दोष केवल इसके वर्तमान स्वरूप में है जिसमें इसे महिलाओं पर जबरन थोपा जाता है। इस प्रथा के जबरन थोपे जाने पर रोक लगाई जानी आवश्यक है और आधुनिक समाज इस दिशा में क्रियाशील है।

उत्तर भारत के कुछ राज्यों में प्रचलित एक अन्य प्रथा के अनुसार स्त्रियों का हल चलाना वर्जित है। यहां तक कि उनके लिए हल का मुंडा (हत्था) भी छूना वर्जित है। महिला सशक्तिकरण के कुछ प्रणेता इसे पुरुषों की वर्चस्वधर्मि. ता के रूप में देखते हैं। किन्तु पुरुषों को महिलाओं का घोर–विरोधी मान लेना पूर्णतया सत्य नहीं होगा। इतिहास साक्षी है, अनेक पुरुषों द्वारा पिता, भाई, पति अथवा पुत्र के रूप में महिलाओं के प्रति आदर, सम्मान, प्रेम, स्नेह के अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किए गए हैं। महिलाओं के लिए हल चलाना वर्जित होने की प्रथा के मूल में भी पुरुष का स्त्री के प्रति प्रेम एवं स्नेह दिखाई देता है। कड़ी धूप में हल चलाना कृषि से जुड़े कार्यों में संभवतः सबसे कठिन कार्य है। ऐसे में पुरुषों द्वारा हल चलाने जैसे कठिन कार्य का दायित्व अपने ऊपर लेकर अपनी माँ, बहन, पत्नी अथवा पुत्री को इस कठिन कार्य के श्रम से बचाना उनके प्रति प्रेम और स्नेह का ही भाव प्रकट करता है। इसे सही परिप्रेक्ष्य में देखे जाने की आवश्यकता है जिससे स्त्री एवं पुरुष के बीच वैमनस्य कम हो सके। दूसरी ओर आधुनिक समाज की आवश्यकतानुसार इस प्रकार की प्रथाओं में परिवर्तन भी आवश्यक है जिससे आवश्यक होने पर महिलाएं अपनी रुचि के अनुरूप व्यवसाय चुन सकें। इस दिशा में सकारात्मक परिवर्तन हो रहे हैं। आधुनिक नारी ट्रक ड्राइवर से लेकर अन्तरिक्ष अन्वेषण तक के कार्यों में अपना लोहा मनवा रही है।

उपरोक्त उदाहरणों के अतिरिक्त स्त्री और पुरुषों के बीच अन्य कार्यों के बटवारे को लेकर भी कुछ मान्यताएँ है। उदाहरण के लिए रसोई, घर की साफ–सफाई, बच्चों का लालन–पालन आदि घरेलू कार्य महिलाओं द्वारा तथा बाहर के कार्य पुरुषों द्वारा किए जाने की प्रथा है। ऐसा संभवतः प्राकृतिक चयन के सिद्धान्त के अनुसार महिलाओं और पुरुषों की प्रकृति, रुचि, स्वभाव, गुणों और शारीरिक संरचना के आधार पर स्वतः प्रचलन में आया है। विश्व भर में अधिकतर नर्सों के महिला होने के मूल में भी महिलाओं में स्वाभाविक रूप से पाए जाने वाले सेवा, दया, ममता और स्नेह भाव का होना है। उसी प्रकार रक्षा क्षेत्र में पुरुषों की अधिकता का मूल कारण उनकी शारीरिक संरचना और संघर्षशीलता है। किन्तु आधुनिक

युग में इन मान्यताओं में महत्वपूर्ण बदलाव देखे जा सकते हैं। आज के युग की नारी हर क्षेत्र में पुरुष के कंधे–से–कंधे मिलाकर चल रही है।

उपरोक्त वर्णित प्रथाओं के मूल में विहित सदाशयो के होते हुए भी इनका सामाजिक बंधन होना किंचितमात्र भी स्वीकार्य नहीं हो सकता। इन प्रथाओं का अनुपालन केवल पुरुषों और महिलाओं के बीच पूर्ण आपसी तालमेल एवं सद्भाव के वातावरण में ही होना चाहिए न कि सामाजिक बाध्यता के रूप में। समाज के दो मुख्य वर्ग–रूप में पुरुष एवं स्त्री के बीच आपसी विश्वास और स्द्भाव स्थापित होना चाहिए। जरूरी नहीं कि सामाजिक प्रचलन का हर पहल नकारात्मक ही हो। यह सामाजिक ताने बाने की दृष्टि से सही नहीं है। समाज की पूर्णता सम–समन्वयक होने में है। यहां स्त्री पुरुष परस्पर विरोधी न हो कर पूरक रूप में सृष्टि एवं सृजन कार्य में परस्पर सहभागी हैं।

शिव कुमार
रक्षा सम्पदा महानिदेशालय

शिलांग यात्रा

मैं पर्यटन के ख्याल से कोलकाता से शिलांग यात्रा पर निकला। स्मरण हो कि भारत के पूर्व में स्थित शिलांग मेघालय राज्य की राजधानी होने के साथ–साथ एक प्रसिद्ध हिल स्टेशन भी है। शिलांग को 'बादलों का घर' भी कहा जाता है। रमणीय पहाड़ियों के कारण इसे 'पूर्व का स्कॉटलैंड' भी कहा जाता है।

मैं कोलकाता के सियालदाह स्टेशन से सुबह 5 बजे गाड़ी में बैठा और अगले दिन सुबह 5 बजे तक गुवाहाटी रेलवे स्टेशन पर पहुँच गया। यहाँ से आगे शिलांग जाने के लिए हवाई मार्ग अथवा बस से ही जाया जा सकता है। शिलांग के लिए रेल नहीं चलती। गुवाहाटी पहुँच कर सड़क मार्ग से शिलांग पहुँचा जा सकता है। सरकारी बस का किराया 75/– रुपए और प्राइवेट टैक्सी का किराया 400/– रुपए है। सो मैंने भी एक सामूहिक टैक्सी हायर कर ली जिसने मुझसे शिलांग के पुलिस बाजार में छोड़ दिया। पुलिस बाजार शिलांग का मध्य बिन्दु है। मैंने पुलिस बाजार के एक होटल में कमरा किराए पर ले लिया। यहां 500 रुपए से 3000 रुपए तक के किराए पर कमरे उपलब्ध हैं।

पर्यटक स्थल देखने के लिए मैंने एक ट्रैवल एजेंसी में बात की। उन्होंने 300 रुपए के पैकेज में मावलिननांग गाँव सहित कई स्थानों का भ्रमण कराया। रास्ते में हाथी–फाल्स देखा। यह झरना बेहद सुंदर था। यहां से यात्रियों को लेकर बस डॉन वॉस्को संग्रहालय पहुंची। यहां के थीम संग्रहालय में पोशाक, हस्तशिल्प, कलाकृति, अलंकरण, नाना प्रकार की तस्वीरों और अस्त्र–शस्त्रों का संग्रह प्रदर्शित किया गया है। इस संग्रहालय का भवन सात मंज़िला है। इस संग्रहालय को देखकर सभी यात्री पुनः बस में बैठे और बस अपनी अगली मंजिल की ओर बढ़ चली। अब बारी थी मासिनराम की। कहा जाता है कि मासिनराम दुनिया के शानदार पर्यटन स्थलों में से एक है। भारत में सबसे अधिक वर्षा मासिनराम में ही होती है। यहां आप रोमांच से भर उठेंगे, जब आप बादलों को अपने हाथों से छू पाएंगे, रोमांच ही रोमांच। मैंने इस सब का भरपूर आनंद लिया। अब बस यहां से मावलिननांग गांव की ओर बढ़ चली। मैं काफी उत्सुक था क्योंकि मैंने अखबारों में पढ़ा था कि यह गांव एशिया का सबसे सुंदर और स्वच्छ गांव है। यात्रियों को लेकर जब बस इस गांव में पहुंची तो प्रति यात्री 5/– रुपए स्वच्छता शुल्क लिया गया। स्वच्छता शुल्क की इस राशि को गांव के कचरे के निपटान में खर्च किया जाता है। सभी यात्री बस से उतरकर गांव की सैर पर निकले। मावलिननांग बहुत ही छोटा–सा गांव है। इस गांव में लगभग 87 मकान हैं। इस गाँव के लोगों की आय का मुख्य स्रोत सुपारी की खेती है। अब तकरीबन तीन बज रहे थे, भूख लग रही थी। संयोग से इस गांव में दो–तीन होटल भी हैं। खाने में मैंने दाल और सब्जी के साथ चावल लिया। यहां नॉन–वेज खाने की व्यवस्था भी है। इस गाँव से बांग्लादेश से बहती पद्मा नदी को आसानी से देखा जा सकता है।

भोजन पश्चात सभी यात्री बस में आकर बैठ गए। अब बस पुलिस बाज़ार की ओर वापस बढ़ चली। रास्ते में स्प्रेड–ईगल फाल्स देखा। यह एक प्रसिद्ध झरना है। बस शाम 7 बजे पुलिस बाजार लौट आई। रात का खाना मैंने होटल में ही खाया और गहरी नींद में सो गया। अगले दिन के लिए मैंने 'डॉकी पैकेज' को चुना और रात में ही इसके लिए बुकिंग भी कर ली। अगली सुबह बस यात्रियों को लेकर शिलांग शहर के बीच स्थित पोलक झील लेकर गई। यह एक शानदार पिकनिक स्पॉट है। यहां घूमने के बाद बस सभी यात्रियों को लेडी हैदरी पार्क ले गई। यहां एक सुंदर मिनी चिड़ियाघर है। इस पार्क में 70 पक्षियों और 100 सरीसर्प प्रजातियों को देखा जा सकता है। यहां से बस यात्रियों को लेकर मौफ्लांग गाँव की ओर बढ़ चली। यह गाँव पवित्र वन के बीच स्थित है। यहां का नजारा लेने के बाद हमने चाय की चुस्की ली और पुनः आकर बस में बैठ गए। बस अब रूट ब्रिज की ओर रवाना हुई। यह पुल एक नदी पर पेड़ों की जड़ों से स्वनिर्मित पुल है। प्रकृति का यह नजारा देख मन भाव–विहल हो गया। इसे देखने के लिए 10/– रुपए का टिकट लेना पड़ा। वहां से आगे डॉकी के लिए निकल पड़े। यह भारत और बांग्लादेश की सीमा है। यहां नदी का पानी इतना साफ है कि ऊपर से देखने पर मछली भी साफ दिखाई देती हैं। यहां घूमने के बाद भारत–बांग्लादेश मैत्री द्वार देखा। यह बस का अंतिम पड़ाव था। शाम हो चुकी थी। हमने खूब सारी तस्वीरें खींची। अब बस सभी यात्रियों को लेकर वापिस पुलिस बाजार लौट आई।

वैसे तो शिलांग में घूमने के लिए और भी कई संग्रहालय हैं। इनमें मेघालय संग्रहालय, अरुणाचल संग्रहालय, बटरफ्लाई संग्रहालय, एंटोमोलोजी संग्रहालय, राईनो संग्रहालय मुख्य हैं। आप जब भी शिलांग घूमने जाएं, अप्रैल से जून तक ही घूमने जाएं। शिलांग घूमने का यही सबसे अच्छा समय है।

अशोक पासवान
रक्षा सम्पदा निदेशालय, कोलकाता

माहिरा : 'द कोरोना वारियर'

माहिरा बचपन से ही बहुत होशियार और काबिल थी। वह पढ़ने और घर के कामों में बहुत ही माहिर और दक्ष थी, दूसरी तरफ वह बहुत खूबसूरत भी थी। अपने अम्मी और अब्बू की तो जान थी। वह अपने भाई से बहुत प्यार करती थी और क्यों न करे, दो बहनों का इकलौता भाई जो था वह। उसकी बड़ी बहन नूरी उसकी बेस्ट फ्रेंड थी। दसवीं की परीक्षा में वह प्रथम स्थान पर रही थी। रिजल्ट देखकर घर आई तो बहुत खुश थी वह। उसने देखा कि घर पर कुछ लोग आए हुए हैं। पता चला उसकी बड़ी बहन नूरी को देखने कुछ लोग आए हैं। वह घर के अंदर चली गई और बहन को तैयार कर लोगों के समक्ष आई। सभी मेहमान उसके रिजल्ट के बारे सुनकर बहुत खुश हुए।

दूसरे दिन उसके अब्बू ने कहा – "लड़के वालों ने नूरी को नहीं माहिरा को पसंद किया है।" माहिरा यह सुनकर परेशान हो गई और रोने लगी। "मुझे अभी पढ़ना है, मुझे अभी शादी नहीं करनी।" उसके अब्बू ने कहा – "हमारे धर्म में लड़कियां ज्यादा पढ़ती–लिखती नहीं हैं। पढ़–लिख कर क्या करोगी, क्या बनोगी? माँ ने भी कहा – "लिख–पढ़कर तुम्हें क्या करना है? आखिर तुम्हें शादी ही तो करनी है, लड़का बड़ा अच्छा है, शादी कर लो।" इन सब बातों को सुनकर वह बहुत रोई। "मैं शादी नहीं करूंगी" उसने बस यही कहना शुरु कर दिया। बहुत मनाने के बाद अब्बू ने ग्यारहवीं कक्षा में दाखिला करवाया और कहा कि बारहवीं से ज्यादा वह उसे नहीं पढ़ा सकेंगे क्योंकि अगले साल ही उनका रिटायरमेंट है। माहिरा बहुत मेहनत करने लगी। मन लगाकर पढ़ती और ट्यूशन पढ़कर अपनी पढ़ाई का खर्च निकालती थी वह। सब कुछ ठीक चल रहा था कि इतने में नूरी की तबीयत अचानक बहुत खराब हो गई। पैसा न होने के कारण उसका सही से इलाज नहीं हो पा रहा था और आखिरकार वह हमेशा के लिए इस दुनिया से चली गई।

माहिरा की सबसे करीबी थी नूरी। माहिरा उससे अपनी हर बात सांझा करती थी। अपने सपनों के बारे में बताती थी। नूरी के गुजर जाने के बाद माहिरा टूट गई। फिर अपने–आप को संभालते हुए उसने ठान लिया कि वह बड़ी होकर

एक डॉक्टर बनेगी और गरीबों का मुफ्त इलाज करेगी। उसने बहुत मन लगाकर पढ़ाई की तथा इसमें परिवार और भाई का उसे पूरा सहयोग मिला। लेकिन अम्मी–अब्बू की ओर से शादी का दबाव भी लगातार बना रहा।

कुछ वर्षों की अथक मेहनत के बाद माहिरा एक काबिल डॉक्टर बन गई। आज उसके पूरे परिवार, पड़ोस और मोहल्ले को उस पर नाज है।

माहिरा अपनी ड्यूटी के प्रति बेहद गंभीर थी। इसी दौरान उसके लिए एक बहुत अच्छे परिवार से रिश्ता आया। इस बार माहिरा ना नहीं कर पाई। अगले महीने यानी अप्रैल, 2020 में मंगनी और सितंबर, 2020 में शादी की तारीख तय हो गई। पूरे घर में खुशी छा गई। परंतु अब समाचार पत्रों और टीवी की खबरों में एक नया नाम सुनाई पड़ रहा था, कोरोना, कोरोना।

कोरोना चारों ओर फैला था, उधर अस्पताल में मरीजों की लाइन लगी रहती थी और मरीजों की संख्या दिनोंदिन बढ़ती जा रही थी। डॉक्टरों की आपातकालीन ड्यूटी लगा दी गई। डॉक्टर घर तक नहीं जा पा रहे थे। कई डॉक्टरों की तो जान भी चली गई। माहिरा अपनी जान जोखिम में डालकर मरीजों की सेवा में लगी थी। किन्तु इस बीच माहिरा के परिवार वाले बहुत डर गए थे। वे माहिरा को अस्पताल जाने से रोकना चाहते थे। उनका कहना था कि कुछ ही दिनों में तुम्हारी मंगनी और शादी होने वाली है, ऐसे काम करोगी तो तुम्हें नुकसान होगा। उसके ससुराल वाले भी यही चाहते थे। उन्होंने माहिरा को नौकरी छोड़ देने के लिए कहा। माहिरा की मां का तो रो–रो कर बुरा हाल हो रहा था। एक बेटी को तो खो ही चुकी थी, अब वो माहिरा को नहीं खोना चाहती थी।

माहिरा बहुत परेशानी में दिन बिता रही थी, एक तरफ अम्मी, घरवालों की बातें, रिश्ता तथा दूसरी ओर ड्यूटी और सबसे ऊपर मरीजों का इलाज, हाँ – यही कसम खाई थी उसने अपनी बहन नूरी की तस्वीर को देखकर। ये बातें उसके मन में चक्कर लगा रही थीं। बहुत सोचकर दृढ़ निश्चय के साथ अम्मी के पास गई और बोली "आज मैं अपनी ड्यूटी निभाने जा रही हूँ लेकिन एक वादा है, किसी और माँ की गोद सूनी नहीं होने दूँगी। वह इतना कह अपने फर्ज के रास्ते पर चल पड़ी। उसने दिन–रात मरीजों की सेवा की। जब मरीज स्वस्थ होकर अस्पताल से घर लौटते, तो वह बहुत खुश होती।

आज माहिरा को राज्य सरकार की ओर से 'द कोरोना वारियर' का प्रमाण पत्र दिया जा रहा है। माहिरा जैसे हजारों कर्मठ कोरोना योद्धाओं के कारण ही करोड़ों देशवासी सही सलामत हैं। ये वही कोरोना योद्धा हैं जिन्होंने अपना घर, परिवार, रिश्ते, भविष्य और यहां तक कि अपना जीवन भी दांव पर लगा दिया। माहिरा जैसे डॉक्टरों के कारण ही इस भयावह स्थिति को नियंत्रित करने में हम सफल हो पाए हैं।

आज माहिरा खुश है, उसके घरवाले खुश हैं। माहिरा की आँखों में आँसू हैं, खुशी के भी और गम के भी। वह मन ही मन अपनी बहन नूरी को याद करती है, उसकी तस्वीर को देखती है और कहती है– "काश आज तुम होती आपा तो कितना अच्छा होता"।

शाहिना खातून
छावनी परिषद, बैरकपुर

लघु कहानी

भाई से सगा कोई नही

रावण जब रणभूमि में मृत्यु शैय्या पर अंतिम साँसे ले रहा था तब उसने श्रीराम से कहा था– राम मैं तुमसे हर बात में श्रेष्ठ हूँ। जाति मेरी ब्राह्मण है जो तुमसे श्रेष्ठ है। आयु में तुमसे बड़ा हूँ। मेरा कुटुंब तुम्हारे कुटुंब से बड़ा है। मेरा वैभव तुम्हारे वैभव से अधिक है। तुम्हारा महल स्वर्ण जड़ित है परंतु मेरी पूरी लंका ही स्वर्ण नगरी है। मैं बल और पराक्रम में भी तुमसे श्रेष्ठ हूँ। मेरा राज्य तुम्हारे राज्य से बड़ा है। ज्ञान और तपस्या में भी मैं तुमसे श्रेष्ठ हूँ। इतनी श्रेष्ठता होते हुए भी मैं रणभूमि में तुमसे परास्त हो गया, केवल इसलिए कि तुम्हारा भाई तुम्हारे साथ है और मेरा भाई मेरे विरुद्ध। बिना भाई के साथ के जब रावण हार सकता है तो हम किस घमंड में हैं। सदा साथ रहिए, सदा विजयी रहिए। सभी को कोशिश करनी चाहिए कि परिवार टूटे नहीं, क्योंकि किसी भी पेड़ के काटने का किस्सा न होता, अगर कुल्हाड़ी के पीछे लकड़ी का हिस्सा न होता।

संजय कुमार ओझा
छावनी परिषद, बैरकपुर

जिंदगी: खे रही नाव बचपन की

दुनिया भर के बच्चों के पसंदीदा कार्टून 'मिकी माउस' और 'स्नो व्हाइट' किरदारों के रचयिता 'वाल्ट डिजनी' का नाम किसी पहचान का मोहताज नहीं है। उनका नाम लेते ही आँखों के आगे सतरंगी बचपन नाच उठता है। सब का बचपन इन कार्टूनों की शरारतों के इर्द–गिर्द घूमता बीतता है।

वाल्ट डिजनी के बड़े भाई 'रॉय ओलिवर डिजनी' ने अनेक स्थानों पर अपने छोटे भाई के प्रति अपने खास लगाव को उड़ेला है। उनके और वाल्ट के आपसी रिश्ते ने अपनी समझ से सफलता के नए कीर्तिमान कायम किए। आइए, उन्हीं के शब्दों में थोड़ा वाल्ट, थोड़ा उनकी कार्टून दुनिया को जानें –

"हमारे पुराने फॉर्म में सेब का बगीचा और हरा–भरा खूबसूरत ढलान वाला मैदान था, जहां वाल्ट ने जानवरों का अपना पहला स्केच तैयार किया। मुझे याद आता है कैसे वाल्ट और मैं बिस्तर में घुसकर रात में गुजरती पैसेंजर ट्रेन की सीटी सुना करते थे। हमारे अंकल माइक ट्रेन ड्राइवर थे और सिर्फ हम लोगों के लिए एक लंबी और दो छोटी सीटियां बजाया करते थे। वर्षों बाद पुरानी ट्रेन का वह मॉडल डिजनीलैंड में भारी आकर्षण का केन्द्र बन गया।

मेरी सबसे पुरानी याद वाल्ट की ड्राइंग से जुड़ी है। सबसे पहली बार उसने पांच सेंट का सिक्का एक पड़ोसी के घोड़े का स्केच बनाकर कमाया था। उसने कार्टून कला की पढ़ाई शिकागो में की थी और फिर कन्सास सिटी में एक छोटी–सी एनीमेटेड कार्टून की कंपनी शुरु की, जो चली नहीं। महज 21 साल की उम्र में वाल्ट ने हॉलीवुड में किस्मत आजमाने का फैसला किया। मैं तब लॉस एंजिल्स में ही था। उससे स्टेशन पर मिला। वह एक सस्ता–सा सूटकेस लिए था जिसमें उसका सारा सामान था। हमने एक अंकल से 500 डॉलर उधार लिए और वाल्ट ने 'एलिस इन कार्टून लैंड' नाम की कार्टून सीरीज शुरू की। शुरु में काफी दिक्कतें आई। वाल्ट सारा एनीमेशन करता और मैं पुराने किस्म का कैमरा घुमाता था। एलिस कार्टून ज्यादा उत्सुकता नहीं जगा पाए, इसलिए वाल्ट ने 'ओसवाल्ड द रैबिट' नाम से एक नई सीरीज शुरु की। ओसवाल्ड कुछ चला, लेकिन वाल्ट जब अपने न्यूयॉर्क के डिस्ट्रिब्यूटर के पास और पैसे के लिए गया तो मामला फंस गया।

मैंने पूछा, "बच्चे क्या तय हुआ सौदे में?" वाल्ट ने कबूला, "कोई सौदा हुआ ही कहां। ओसवाल्ड का कॉपीराइट

डिस्ट्रिब्यूटर के पास है और वह पूरी सीरीज पर खुद ही अपना दावा ठोक रहा है।" हैरानी यह कि वाल्ट हताश नहीं लग रहा था। उसने जोश के साथ कहा, "हम नई सीरीज शुरू करने जा रहे हैं, जो कि एक चूहे को लेकर है, और इस बार हम उसे अपनी मिल्कियत बनाएंगे।" बाकी तो इतिहास है। वाल्ट के चूहे मिकी ने पिछले साल (1968) अपना 40वां जन्मदिन मनाया और यह लाजवाब था। (उस साल) करीब चौथाई अरब लोगों ने डिजनी फिल्म देखी, दस करोड़ लोगों ने डिजनी टीवी शो देखा, तकरीबन एक अरब ने डिजनी किताब या पत्रिका पढ़ी और लगभग 1 करोड़ लोग डिजनी लैंड देखने पहुंचे। और जैसा कि वाल्ट कहा करता था, इस सब का दरवाजा मिकी ने खोला।

मिकी वाल्ट की अद्वितीय कल्पना और काबिलियत से निकला महज पहला उत्पाद था, जिसने उसके ख्वाब को हकीकत में बदला। और यह ऐसी काबिलियत थी जिससे वह किसी भी छोटे–बड़े मौके में जान डाल सकता था।

वाल्ट कहानी सुनाते वक्त पूरी तस्वीर खड़ी कर देता था। उसकी आँखें ऐसे नाचतीं कि सुनने वाला उन्हीं में खो जाए, मुंछें फड़कने लगती थीं, भौंहें ऊपर–नीचे होती थीं और हाथ किसी म्युजिक कंडक्टर की मानिंद लहराते थे।

हास्य का चित्रण करने वाले बहुत–से लोगों की तरह वाल्ट भी इस काम को पूरी गंभीरता से करता था। उसे अक्सर बेहद मजेदार कार्टूनों को लेकर भी असंतोष बना रहता, और वह किसी तरह उन्हें और धारदार बनाने में जुटा रहता। वाल्ट अपने साथ काम करने वालों की राय को अहमियत तो देता था लेकिन आखिरी फैसला हमेशा निर्विवाद तौर पर उसी का होता था।

वाल्ट हमेशा उलटी धारा में बहता। भाग्य का साथ हमें इसलिए मिल जाता क्योंकि हम तिनके के सहारे ही रहा करते थे। मिकी के हिट होने के बावजूद लगातार बैंकों के कर्ज का हांका बना रहता था। उसने जब स्नो व्हाइट से पहली बार खूब पैसे कमाए तो उसे भरोसा ही नहीं हुआ। यकीनन, भाग्य कुछ ज्यादा ही साथ दे रहा था। स्नो व्हाइट से लाखों–डॉलर की कमाई हुई। लेकिन वाल्ट ने जल्दी ही वह खर्च कर डाला। कुछ फुल लेंथ कार्टून फीचर बनाकर और कुछ हमारे मौजूदा स्टूडियो को बनाने पर। अब स्टूडियो चलाने के लिए हमने अपने शेयर बेचे लेकिन लगभग तुरंत ही 25 डॉलर का शेयर 3 डॉलर का हो गया तो संकट मंडराने लगा। स्टूडियो तो चलने लगा था लेकिन द्वितीय विश्वयुद्ध छिड़ गया तो हमारा यूरोपीय बाजार टूट गया। एक नहीं, कई बार मैं सब कुछ छोड़ चुका होता, अगर वाल्ट को इस बात पर भरोसा नहीं होता कि एक न एक दिन हम कामयाब होंगे।

वह स्टूडियो में सबसे ज्यादा हरकत में रहा करता था। उसकी दो बेटियों डायना और शैरॉन ने सुनसान में सप्ताहांत में बाइक चलाना सीखा, जहां वाल्ट काम में जुटा रहता था।

वाल्ट की तीखी आँखों से शायद ही कुछ अनदेखा रह जाता था। एनीमेटरों का अक्सर कचरे के डिब्बे से निकाले मुड़े–तुड़े ड्राइंग पर वाल्ट की इस टिप्पणी के साथ सामना होता कि "अच्छा" क्या है। अमूमन दूसरे लोग किसी स्टोरी प्लॉट पर महीनों जूझते रहते थे, वाल्ट अचानक आता और एकाध चीजें जोड़ता और फौरन सब कुछ एकदम से खिल उठता था।

वाल्ट सबसे बहुत कुछ की उम्मीद करता था लेकिन वह खुद भी बहुत कुछ दिया करता था। 1930 के दशक की मंदी छाई तो ऐसा लगा कि हमें स्टूडियो बंद करना पड़ेगा। पर वाल्ट ने उलटे कुछ अच्छा होने की संभावना जताई। कुछ ने उसे फितूर समझा लेकिन उसके इस रवैए से लोगों का मनोबल बढ़ गया। वह किसी को निकालने में कतई यकीन नहीं करता था और कोई किसी काम को ढंग से नहीं कर पाता तो वाल्ट उसे किसी ऐसे काम में लगा देता, जिसे वह बेहतर कर पाए। एक वक्त ऐसा आया कि हमें कुछ एनीमेटरों की छुट्टी करने पर मजबूर होना पड़ रहा था। वाल्ट ने उनके लिए पड़ोस के ग्लेनडेल में डब्लूईडी (यानी वाल्ट ई. डिजनी) एंटरप्राइज में जगह निकाल ली, जहां उसने गुपचुप तेजी से पैसे वैसे ही झोंक दिए, जैसी कमाई हुई थी। जब डिजनी लैंड खुला तो कुल 22 आकर्षण थे और लागत 1.7 करोड़ डॉलर लगी थी। आज 1969 में 52 आकर्षण हैं और कुल निवेश 10 करोड़ डॉलर का है।

अफसोस! इन तमाम गतिविधियों के दौरान ही वाल्ट को लाइलाज बीमारी ने जकड़ लिया। मैंने उसे इस जानलेवा मर्ज के बारे में कुछ कहते बस एक बार सुना, उसने मुझसे कहा, "मुझे जो रोग लग गया है, इसे न लगाना।"

जिस रात उसकी मौत हुई, मैं अस्पताल में उसके पास था। वह उस बुरी हालत में भी उसी तरह भविष्य की योजनाओं का जिक्र कर रहा था, जैसा स्वस्थ होने पर पूरी जिंदगी वह करता आया था।

वाल्ट कहा करता था कि डिजनीलैंड का काम कभी खत्म नहीं हुआ, न कभी खत्म होगा। मैं भी सोचता हूँ कि वाल्ट डिजनी का असर कभी खत्म न होगा। उसकी रचनाओं के जरिए आने वाली पीढ़ियां उसका जश्न मनाती रहेंगी, जिसके बारे में उसने कभी कहा था कि "हर आदमी में वह बेशकीमती, अजर–अमर एहसास है जो हमें बच्चों के खिलौने से खेलने, मूर्खताओं पर हंसने और बाथटब में गाना गाने और ख्वाब देखने को प्रेरित करता है।"

वाल्ट डिजनी की मृत्यु उनके 65वें जन्मदिन के दस दिन के बाद 1966 में हुई। रॉय डिजनी की मृत्यु दिमाग की नस फटने से दिसम्बर 1971 को हुई। उस दिन वे डिजनी लैंड क्रिसमस परेड का उद्घाटन करने वाले थे।

इति!

संकलनः
भल्ला राम मीना
रक्षा सम्पदा महानिदेशालय

कुछ कही, कुछ अनकही

अपनी शैली के अकेले कॉमेडियन 'महमूद' का नाम किसी परिचय का मोहताज नहीं है। उनके व्यक्तित्व में ही कुछ ऐसा करिश्मा था कि सामने वाला बड़ी आसानी से उनके सामने हथियार डाल देता था। महमूद साहब के साथ खास बात यह थी कि वे अपना सीन पढ़कर उसे अपने हिसाब से बनाते थे। फिल्म 'प्यार किए जा' में एक सीन में महमूद और ओमप्रकाश दोनों थे। उसके एक सीन में महमूद ओमप्रकाश को स्टोरी सुनाते हैं। वह सीन लिखा हुआ नहीं था बल्कि महमूद ने ऑन द स्पॉट क्रिएट किया था। जब वह सीन पिक्चराइज हुआ तो फिल्म का बेस्ट सीन बना। उसके बाद सब लोगों ने जब उनकी वाह–वाह की तो उन्होंने कहा कि "कम्प्लीमेंट देना है तो ओमप्रकाश को दो। वो रिएक्ट नहीं करते तो ये सीन जीरो था।" यानी उसका क्रेडिट उन्होंने ओमप्रकाश को दिया।

अपनी फिल्म 'बांबे टु गोवा' से उन्होंने अमिताभ बच्चन को स्टार बनाया था, जिन्हें वे बहुत मानते थे। स्ट्रगल के दिनों में उन्होंने अमिताभ की मदद की थी। अमिताभ उनके भाई अनवर के दोस्त थे। दोनों ने 'सात हिन्दुस्तानी फिल्म' में साथ काम किया था। उन दिनों महमूद ने अमिताभ को अपने घर पर भाई की तरह रखा। 'बांबे टु गोवा' में उनको मुख्य भूमिका दी।

महमूद की एक्टिंग लाजवाब थी। लिखे हुए सीन उन्होंने कभी नहीं किए। अपना सीन वे अपने हिसाब से रचते। डायरेक्टर भी सिचुएशन देकर कह देते थे कि उसमें अब वे ही कुछ करें। वे क्रिएटिव ऐक्टर थे। उनकी कॉमेडी बहुत नेचुरल होती थी। उनका जो भी सीन होता, उसके बारे में वे कोने में बैठकर सोचते रहते और जब करते तो वह सीन जीवंत हो उठता।

उनकी ऐक्टिंग का हाल यह था कि बड़े–बड़े हीरो उनके साथ काम करने से डरते थे। कई फिल्मों में तो हीरो कहते थे कि पहले मुझे महमूद का रोल सुनाओ, फिर हम फिल्म साइन करेंगे। और महमूद ऐसे एक्टर थे जो सब पर भारी पड़ते। महमूद की एक्टिंग का करिश्माई अंदाज बड़े–बड़े सितारों को भी बगलें झांकने पर मजबूर कर देता था। उन्हें फिल्म में ले लिया तो समझो हर टैरिटरी की वैल्यू दो लाख रूपए बढ़ गई, ऐसी थी उनकी मार्केट वैल्यू। डिस्ट्रीब्यूटर उनके पीछे पागल रहते थे, कहते, 'भाईजान को ले आओ, हम आपकी फिल्म डिस्ट्रीब्यूट करेंगे।'

'महमूद' कद्दावर एक्टर थे पर वे किशोर कुमार को अपना गुरु मानते थे। उन्होंने एक बार बीरबल से कहा था: 'बीरबल, मैं जिस हीरो के साथ काम करता हूँ, उसकी कमजोरी क्या है, मुझे पता रहती है। लेकिन किशोर कुमार ऐसे आर्टिस्ट हैं जिनका एक टेक के बाद दूसरा टेक क्या होगा, पता नहीं चलता। पूरी बैटरी चार्ज करके उनके साथ काम

करता हूँ, फिर भी वे मेरे ऊपर भारी पड़ते हैं।"

किशोर कुमार ने 'पड़ोसन' फिल्म में काम करने के लिए महमूद को खूब चक्कर कटवाए, बाद में ज्यादा फीस लेकर काम करने को तैयार हुए। महमूद उनके पीछे इसलिए पड़े थे क्योंकि उन्हें पता था कि ये रोल सिर्फ किशोर कुमार ही कर सकते हैं। उनके अभिनय के कायल महमूद उनके नखरे उठाने को हमेशा तैयार रहते थे। इस फिल्म में महमूद किशोर कुमार, केस्टो मुखर्जी, राजकिशोर, मुकरी और सुनील दत्त जैसे कलाकारों के सामने अकेले थे।

फिल्म 'पड़ोसन' का एक वाकया है जिसमें एक गाना था 'एक चतुर नार....' किशोर यह गाना छोड़ कर चले गए थे, यह कहते हुए कि "तुम क्या सोचते हो, मैं क्लासिकल गाना गाऊं, वह भी मन्ना डे के सामने और मैं जीत जाऊँ? यह नामुमकिन है।" लेकिन महमूद और पंचम दा (आरडी बर्मन) ने कहा, "किशोर दा, आप कुछ भी करो, कैसे भी करो पर गाना होगा आपको। घबराइए मत, अपने स्टाइल में गाइए।" और क्या गाना गाया था।

किशोर कुमार पेशेवर गायक थे किन्तु प्रतिभा के कायल, गायकों का सम्मान करना जानते थे। 'एक चतुर नार....' गाने में जहां मन्ना डे को कमजोर दिखाया गया है वहां महमूद ने अपनी आवाज दी जिससे मन्ना डे का स्थान और सम्मान अपनी जगह बरकरार रहे। इस गाने में तीनों की आवाज है। इस गाने की रिकार्डिंग में 12 घंटे का समय लगा। पर यह एक क्लासिकल गाना बना।

एक और वाकया है। प्रकाश मेहरा 'जंजीर' फिल्म के लिए बड़े–बड़े हीरो का ऑडिशन ले रहे थे। दिलीप कुमार, राज कपूर, देव आनंद, धर्मेंद्र सबसे बात की। मगर उन्हें 'जंजीर' में कास्ट नहीं कर पाए वे बहुत परेशान थे। प्राण को उनकी परेशानी मालूम थी। इधर महमूद अपने दोस्तों को 'बांबे टु गोवा' का ट्रायल दिखा रहे थे और अमिताभ को प्रमोट भी कर रहे थे। प्राण को भी दिखाया। अमिताभ को देखकर प्राण काफी प्रभावित हुए थे। उन्होंने प्रकाश मेहरा से कहा कि 'यार, मैंने 'बांबे टु गोवा' का ट्रायल देखा है। उसमें एक लड़का है जिसमें बहुत दम है।' मेहरा ने अमिताभ को लिया और बाकी सब इतिहास है। 'बांबे टु गोवा' में महमूद ने अमिताभ से काम निकाला था। महमूद उनको सिखाते थे।

हालांकि महमूद का निजी जीवन इतना सुखद नहीं था किन्तु फिर भी वे ताउम्र हंसी को ही जिंदगी मानते रहे।

प्रस्तुति :
चन्दन कुमार चौधरी
रक्षा सम्पदा महानिदेशालय

थोड़ी सी खाली बोतल

"रोज की किच–किच से बेहतर है हम अलग हो जाएं"
"अलग हो ही जाएं! फिर इन बच्चों का क्या होगा"
"कुछ न कुछ तो हो ही जाएगा, संभाल लूँगी मैं अकेले"

थोड़ी बातें और फिर सन्नाटा, पिछले कई महीनों से कुछ ऐसी ही उथल–पुथल चल रही थी भारती और प्रेम के जीवन में। शादी के इतने सालों बाद जब जिम्मेदारियों के बोझ तले सारे गिले–शिकवे दबते चले जाते हैं, दोनों के बीच मनमुटाव बढ़ता ही जा रहा था। दोनों के रिश्तों में शून्य ने जगह ली थी, जिसमें कुछ भी गतिशील नहीं था। न वे एक–दूसरे के साथ कोई खुशी का पल बांटते न दुख का। खामोशियों ने अपना दायरा बढ़ाना शुरू कर दिया था, घर में सब कुछ गतिशील था सिवाए उनकी भावनाओं के। उनकी भावनाएं भी चलना चाहती थी पर शून्य ने उन साधनों को खत्म कर

दिया था। गलती किसकी थी यह फैसला करना बहुत ही मुश्किल था क्योंकि दोनों अपने हिसाब से एक–दूसरे की बातों का मौन मतलब निकाल दूर होते चले जा रहे थे। ऐसी बातें हो जाती थी जिनके अर्थ अगर समझने की कोशिश की जाए तो दरअसल नाराजगी जैसी कोई बात न निकले। एक ही छत के नीचे पास–पास होकर भी दोनों कोसो दूर थे। हालात इस हद तक बिगड़ गए थे कि दोनों हमेशा के लिए अलग हो जाना चाहते थे, पर बच्चों का ख्याल आते ही हिम्मत जवाब दे जाती थी।

बहुत सोच–विचार कर प्रेम ने फैसला किया कि हमेशा के लिए दूर होने से बेहतर है कुछ दिन के लिए अलग रहकर देखा जाये। शायद कुछ दिन की दूरी फिर से नजदीकी ले आये और इसी उम्मीद में प्रेम ने पुणे में शुरू हुए नए प्रोजेक्ट के लिए गुजारिश कर वहां के लिए ट्रांसफर ले लिया।

"मैं नेक्स्ट वीक पुणे जा रहा हूँ" डाइनिंग टेबल और उसके पास पसरे सन्नाटे को तोड़ते हुए प्रेम ने कहा। "फिर कब आओगे?" भारती का मुख्तसर सा सवाल, शायद सिर्फ फॉर्मेलिटी निभाने के लिए।

"मालूम नहीं"

"मतलब"

"मतलब, मैं वहाँ के प्रोजेक्ट के लिए जा रहा हूँ"

फिर एक लंबी खामोशी, हालांकि भारती का मन कर रहा था कि पूछे 'ट्रांसफर खुद लिया है या फिर उसे ऑफिस की तरफ से भेजा जा रहा है' पर अफसोस उसके मन के ऊपर एक मायूसी भरी खामोशी ने बहुत ही जोर का पहरा लगा रखा था।

"मैं तो हमेशा के लिए अलग होना चाहती हूँ, फिर ये पुणे जा कर अलग रहने का मतलब मुझे समझ में नहीं आता", भारती ने बड़ी दृढ़ता से एक बार फिर अलग होने की बात छेड़ दी।

"तुम्हारे लिए शायद आसान हो पर मैं तुम सबसे अलग रहने की सोच भी नहीं सकता" प्रेम अपना प्रेम जताना चाहता था पर उसकी यह बात अन्दर ही कहीं रास्ता भटक गई और जो बाहर आई वह थी "बच्चों का तो ख्याल करो" और फिर नेक्सट वीक आ गया। बड़े हो रहे बच्चे सब समझते थे पर वे भी अन्जान बने रहना चाहते थे। बच्चों को समझाकर प्रेम निकल आया मानो किसी कैद से रिहा हुआ हो। इधर भारती भी कुछ ऐसा ही महसूस कर रही थी। ट्रेन तय समय पर निकल पड़ी। पटरियों पर सरपट दौड़ रही ट्रेन की खटर–खटर में प्रेम को अपने जीवन की खटर–पटर याद आने लगी। वह सारे हो–हल्ले को भूल जाना चाहता था, उसने सोचा किसी से बातचीत कर सफर काटा जाए पर कम्पार्टमेंट का माहौल भी उसे घर जैसा ही लगा एक दम शून्य सा। ये एसी कम्पार्टमेंट भी न ऐसा लगता है जैसे यहां के लोग किसी और ग्रह से आये हों। किसी को किसी से कोई मतलब नहीं। सब अपने में मस्त–व्यस्त। समय काटने के लिए वह स्नैक्स निकाल कर खाने लगा... उसके बाद फिर पीने को पानी, "पता नहीं भारती ने गर्म पानी दिया भी की नहीं!".... स्वयं में बुदबुदाते हुए पानी की बोतल निकाली। हमेशा की तरह दो बोतलें साथ में थी, मेटल की बोतल में नॉर्मल पानी और दूसरे थर्मोफ्लास्क में गर्म पानी।

उसने नॉर्मल पानी वाली बोतल खोल कर पानी पीना चाहा पर पी ना सका। एसी के टेम्परेचर ने उसे नॉर्मल रहने नहीं दिया था, पानी पूरा ठंडा हो चुका था और ठंडा पानी उसे सख्त मना था। थर्मोफ्लास्क में तो पूरा गरम पानी होगा, अब वह कैसे पिए? भारती पहले हमेशा ठन्डे पानी की बोतल थोड़ी खाली रख कर देती थी। कितनी बार वह गुस्साया भी था कि बोतल पूरी भर कर दिया करे, उसे खरीदनी पड़ जाती है पर फिर भी हमेशा वह मुस्कुरा कर ठन्डे पानी वाली बोतल थोड़ी खाली ही देती थी। प्रेम उसमें थोड़ा गर्म पानी मिला कर पी लिया करता था। इस बार बोतल पूरी भरी हुई थी, उसने पानी के थैले में तलाशा शायद कोई गिलास दिया हो जिससे उसमें ठंडा–गरम मिला कर पी सके पर गिलास नहीं था। गिलास तो पहले भी नहीं रहता था अब भी नहीं था, जरूरत ही नहीं पड़ती थी। हाँ थैले में एक पर्ची जरूर थी। यह भारती की आदतों में शुमार था। सरप्राइज देने के लिए इस तरह की पर्ची अक्सर वह कभी लंच बॉक्स में तो कभी

वॉलेट में डाल दिया करती थी..... "मोबाइल के इस दौर में भी पर्ची लिखने की उसकी आदत गई नहीं अब तक" खुद में बुदबुदाते हुए उसने बड़ी व्याकुलता से पर्ची निकाली, शायद भारती ने जल्दी लौट आने को लिखा हो या फिर अपनी गलती मान ली हो!.... प्रेम ने पढ़ना शुरू किया .....

"गुस्सा आ रहा है न! कोई नई बात तो नहीं है, जब बोतल थोड़ी खाली होती थी तब भी तुम गुस्सा करते थे, आज भरी है आज भी गुस्सा कर रहे होंगे। तुम्हें याद है जब भी तुम सफर पर निकलते थे बोतल खोलते ही गुस्से में फोन करते थे, "कितनी बार कहा है बोतल पूरी भर कर दिया करो", मैं सिर्फ हंस कर रह जाती थी। मैंने सोचा शायद तुम धीरे–धीरे थोड़ी खाली बोतल का मतलब समझ जाओगे, पर अफसोस, इतना वक्त गुजर जाने के बाद भी ऐसा कुछ नहीं हुआ, हां हमारे रिश्तों में बहुत सारे बदलाव जरूर आ गए। सफर में पानी की बोतल खोलने के साथ तुम्हारे फोन आने बंद हो गए और मेरा इंतजार भी। हमने अपने अन्दर के गुस्से और खुशी दोनों को कहीं दफन कर दिया। इन दोनों भरी बोतलों को गौर से देखना, कुछ ऐसा ही रिश्ता हो गया है हमारा, हम हर तरह से भर चुके हैं। दूसरे की गर्माहट अपनाने की ताकत हम दोनों में अब नहीं रह गयी है, बस अब रहने दो, आगे कुछ नहीं लिखूंगी....."

पहले उसकी हर पर्ची के आखिर में "तुम्हारी भारती" जरूर लिखा होता था, पर इस बार ऐसा कुछ नहीं लिखा था। प्रेम दोनों बोतलों को गौर से देखने लगा मानो एक दूसरे की गलती का सारा हिसाब–किताब उस पर लिखा हो, किसकी ज्यादा किसकी कम, वह आखिर तय नहीं कर पा रहा था। पर्ची पढ़ने के बाद उसे ऐसा लगने लगा सारी गलती उसकी ही है। प्रेम बगैर एक पल गंवाए ट्रेन के नल वाले बेसिन के पास जा कर ठंडी बोतल में से थोड़ा पानी खाली करने लगा जिससे जिंदगी की गर्माहट अपनाने की हिम्मत कर सके जो शायद जरूरत भी थी। वापस अपनी बर्थ पर आकर डबडबाई आँखों से उसने सबसे पहले भारती को फोन लगाया "कितनी बार कहा है......"रेल की पटरियों के ऊपर सरपट दौड़ रही ट्रेन की खटर–खटर के बीच प्रेम को अपने जीवन की खटर–पटर एक मधुर संगीत–सी लगने लगी........

मो. शफीक अशरफ
रक्षा सम्पदा कार्यालय, भुवनेश्वर

पीले फूल

अजीब सा शोर गुल था। आसपास हवा और बारिश दोनों उफान पर थे, कुछ तड़–तड़ की आवाज मेरे कानों को छलनी करके दिमाग पर जोर के झटके दे रही थी।

बालकनी के बाहर क्या देखता हूँ कि पौधों की पुलगियाँ बारिश से नहाई हुई हैं, पेड़ों के पत्तों पर पींग बढ़ाती बारिश की बूंदे जिनका वजन हवा से भी हल्का है मेरी आँखों से संभाली तक नहीं जा रही। गोरैया अपने गीले पंखों को झटककर दोबारा ओढ़ रही है पर वक्त ने मेरे पंखों को उगने से पहले ही काट दिया था। बाहर प्रकृति एक स्वर में गा रही थी और मैं नौसिखिया–सा उसकी सदाबहार महफिल में बेराग नजम लेकर बैठा था। जो पीले फूल बचपन में मेरा मन मोह लेते थे वे आज बेरंग हैं। प्रकृति की रमणीयता किस तरह मेरे अन्तःकरण को झकझोर रही थी उसकी उपमा अल्फ़ाजों में दे पाना गुस्ताखी ही होगी।

टकटकी लगाए नजरें बालकनी से सब देख रहीं थी, पर फिल्मी परदे पर आने वाली रीलों की भांति मन दिमाग तो यादों को आगे और पीछे ले जा रहा था। भूत के दृष्टांत वर्तमान में इस तरह बारिश के पानी में दिखायी पडेंगे इसका अंदाजा तो कभी नहीं था। आप बीती ऐसी थी जो मुझे मेरे लड़कपन की गरम हवा और सर्दी का एहसास कराती, पूरी तरह से झकझोर देती। ऊंची उड़ानें मीठे सपने और अंग्रेजी के चार टूटे–फूटे अल्फ़ाज मखौल बन कर रह गए थे और समय आगे भागता गया। मेरी इच्छाएं, सपने सब बड़े–बड़े रियासतदारों की राजनीति के आगे बिखर गए। मेरे आगे बढ़ने की धुन माँ–बाप के साथ ही दम तोड़ गई।

बसंत पंचमी का दिन था। माँ बापू से खेत से सरसों के पीले फूल लाने की जिद्द कर रही थी। ठाकुर मेहता ने

फूलों की चार–दीवारी को बंद कर रखा था। माँ बार–बार ड्योढ़ी तक जाती आस–पास के रसूकवालों के बंगले देखती और मुझे निहारती। एक प्रश्न के रूप में माँ की आवाज सुनते ही अचानक मुंह से निकल गया। माँ क्या हम सच में इतने गरीब हैं कि हमें प्रकृति की उपज का भी मोहताज होना पड़े? शायद माँ इसी प्रश्न का उत्तर ढूँढने में लग गयी। यह बेचैनी माँ की नहीं मेरी थी जो आस–पास के ऊंचे घरों को पीले फूलों की झालरों से लदा देखकर मचल जाता। माँ चुप थी पर उसकी मनोदशा जैसे मुझसे चीत्कार कर बहुत कुछ कहती जा रही थी। माँ बस बापू को खोजते–देखते हुए आगे बढ़ती चली गयी और देखते–देखते कब घर की ड्योढ़ी लांघ खेतों की ओर बढ़ते हुए आँख से ओझल हो गयी पता ही नहीं चला। मैं वही अपने दरवाजे की ड्योढ़ी को कातर आँखों से ताकता और मुड़–मुड़कर अपने चारों ओर फैले संपन्नता के साम्राज्य को देखता और अपनी आर्थिक पंगुता पर शोक जताता बैठा रहा।

तभी दूर से आवाज आई....... गोविंदा, गोबरधन ने लाठियों से मार–मार कर घायल कर दिया है, तेरे बापू को। बहुत खून बह रहा है, मेहता ठाकुर से कहलवा कर हस्पताल ले जाने के लिए मोटर की विनती मांग लो। आवाज दूर से आते–आते पास आ गयी और मौलवी चाचा की आवाज मुझे ड्योढ़ी पर बैठे देख कर हकलाने लगी। मौलवी काका को मैं अपनी हल्की आवाज में कह रहा था कि काका माँ खेत की तरफ गयी है। जब काका ने माँ को आवाज देना बंद किया तब वो मेरी आवाज सुन पाए और सुनते ही खेत की तरफ दौड़ गए। कुछ घंटों बाद कई आदमी दो लोगों को अपने कंधों पर ले कर जा रहे थे। उनके पार्थिव शरीर को मेहता ठाकुर के बगीचे के पीले फूलों की झाड़ियों से ढक कर ले जाया जा रहा था। दूर से लग रहा था जैसे उन्हें पीले फूलों की चादर में लपेटा हुआ था। आस–पास बहुत मजमा लगा हुआ था। मैंने मौलवी काका को रोक कर पूछा, क्या उन्हें माँ–बापू मिले। काका ने बताया माँ, बापू को लेकर अस्पताल गयी हैं, बापू की कुछ तबीयत खराब हो गयी थी। कुछ दिनों में सब वापस आ जाएंगे।

आज बाईस साल हो गए हैं, पीले फूल आज भी मेरे बगीचे में रोज खिलते हैं पर ये वो फूल नहीं थे जिन्हें देख. कर मेरा मन बचपन में मचलता था। बल्कि, उम्र के साथ–साथ समाज में व्याप्त रूढ़िवादिता, पिछड़ापन, जात–पात और दकियानुसी सोच से अब वाकिफ हो गया हूँ। मौलवी काका के गुजर जाने के बाद मैं उनके मदरसे की देख–रेख में पला–बढ़ा और आज उसी मदरसे की देख–रेख में लगा हुआ हूँ। काका के चले जाने के बाद मैंने एक संकल्प लिया कि मदरसा हो या मस्जिद, हिन्दू हो या मुसलमान, गरीब हो या अमीर, ऊंची बिरादरी का हो या नीची, मेरे द्वारा दी गयी शिक्षा में कोई भी भेदभाव नहीं होगा। मेरे शिक्षण का उद्देश्य कर्मठ नागरिकों का निर्माण, उन्हें आत्मनिर्भर बनाना होगा। इस मदरसे की बगिया को अपने अनुभव और शिक्षण से इस तरह तैयार करूंगा कि यहाँ भविष्य में खिले फूलों की महक और रंग पूरे समाज और देश को सरस और समरस भाव से एकसार कर देंगे।

अमन शर्मा
रक्षा सम्पदा कार्यालय, सिकंदराबाद

चिन्तामुक्त

हरप्रीत कौर दो बेटियों की मां थी। परन्तु उसके मन में लड़का ना होने की तड़प वक्त बे वक्त चलती रहती थी। इस सब में उसके पति का रोजगार भी अच्छा न होने का कारण परिवार में पैदा हुई आर्थिक मंदहाली की वजह से बेटियों की पढ़ाई और उनकी शादी पर आने वाले खर्च के बारे में सोच कर वह व्यथित हो जाती। वक्त गुजरता गया, हरप्रीत ने एक जनून की तरह अपनी बड़ी बेटी को पढ़ाया। बेटी भी पढ़ाई में होशियार होने के कारण अच्छे नम्बरों के साथ बी.एस. सी. उत्तीर्ण कर गई। पढ़ाई पूरी होते ही उसकी शादी विदेशी नागरिकता वाले लड़के से हो गई। आगे ससुराल पक्ष भी अच्छी सोच, स्वच्छ मानसिकता और संस्कारों वाले थे। उन्होंने शादी में कोई फालतू खर्च नहीं होने दिया और लड़की से कहा– तुम्हारा कोई भाई नहीं है तो कोई बात नहीं तुम्हें अपने माँ–बाप और बहन का आर्थिक तौर पर सहयोग करने की पूरी आजादी है। शादी के दो वर्ष बाद हरप्रीत की बड़ी बेटी ने सारा खर्चा करके अपनी छोटी बहन को भी पढ़ाई के लिए अपने पास विदेश में बुला लिया।

आज अपनी छोटी बेटी को एयरपोर्ट पर विदा करने आई हरप्रीत के दिल में लड़का ना होने की तड़प और चिंता दोनों खत्म हो गई थी क्यूंकि उसकी बड़ी बेटी समझदारी से अपने सभी फर्ज और जिम्मेदारियां बखूबी निभा रही थी।

परमजीत सिंह
छावनी परिषद, जालंधर

जल

जल को न संजोओगे, तो पाछे पछताओगे।
धूं–धूं कर जले धरा ये, तुम कुछ न कर पाओगे।
नहीं रहेगा जल तो, पेड़ कहां लगाओगे।
बिना वृक्षों के तुम, जीवन न जी पाओगे।

वक्त रहते न सुधरे तुम तो, प्यासे ही मर जाओगे।
झर–झर कर जब भी पड़े वर्षा, बूंद–बूंद संजोलो तुम।
धारा के गर्भ में जल की इक–इक बूंद संजोलो तुम
व्यर्थ न बहने दो इस जल को तुम नालों में,

संचित कर अमृत तुल्य जल को धरा स्वर्ग बना लो तुम
पीने, पकाने, धोने, उगाने व खाने को जल न ये बच पाएगा
फैक्टरियों का विषैला जल नदियों में यू न बहने दो
मानव जाति को कैंसर का दंश न सहने दो

पंच तत्वों में जल का विशेष स्थान है
सकल धरा में 70 प्रतिशत इसी का स्थान है
आज व्यथा दयनीय है जल की, जिसने जहां बनाया है
जिसने पाला है जीवन को, उसे ही दूषित बनाया है

नहीं संभले तो भावी पीढ़ी माफ तुम्हें न करने की
श्रद्धा–तर्पण इसी दूषित जल से तुम्हारा ये करने की
मरने उपरांत संताप तुम्हें ये सतायेगा
वक्त रहते न संजोया जल को, फिर पाछे पछताएगा

फिर से जल को देव समझो, इसका तुम सत्कार करो
माँ तुल्य इस जल को गंगा–सा सत्कार करो
वायदा ये मेरा है तुमसे न जल धारा मरने देगी
रहती दुनिया तक तेरी हस्ती धरा से न हटने देगी।
धरा से न हटने देगी...............

रविकान्त
छावनी परिषद, जालंधर

राजभाषा अनुभाग के कार्यकलाप

रक्षा सम्पदा महानिदेशालय का राजभाषा अनुभाग संगठनात्मक स्तर पर संघ की राजभाषा हिन्दी के प्रगामी प्रयोग की मॉनीटरिंग एवं रक्षा सम्पदा संगठन के अधीनस्थ कार्यालयों में उसके कार्यान्वयन तथा प्रचार–प्रसार पर अपनी नजर बनाए रखता है। संघ की राजभाषा नीति का अनुपालन सुनिश्चित करने की दृष्टि से सरकार द्वारा राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय को अनेक दायित्त्व सौंपे गए हैं जिनमें हिन्दी भाषा का प्रसार और उसका विकास सम्मिलित हैं जिससे कि वह भारत की सामासिक संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके।

राजभाषा अनुभाग संघ की राजभाषा नीति से संबंधित विशेष दायित्वों का निर्वहन करता हैः–

(i) अनुभाग यह सुनिश्चित करता है कि राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 3(3) के अंतर्गत जारी होने वाले सभी कागजात द्विभाषी रूप में ही जारी हों। हालांकि कार्यालयाध्यक्ष द्वारा भी यह सुनिश्चित किया जाता है किन्तु राजभाषा अनुभाग इस कार्य में उनका सहयोग करता है।

(ii) राजभाषा अनुभाग ही मुख्यालय एवं अधीनस्थ कार्यालयी स्तर पर राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम के अन्तर्गत राजभाषा हिन्दी से संबंधित निर्धारित लक्ष्यों का अनुपालन सुनिश्चित करता है।

(iii) महानिदेशालय में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों, हिन्दी कार्यशालाओं एवं हिन्दी पखवाड़े का आयोजन, अधीनस्थ कार्यालयों का राजभाषायी निरीक्षण, केंद्र सरकार द्वारा चलाई जा रही विभिन्न प्रोत्साहन योजनाएं लागू करना आदि कार्य भी राजभाषा अनुभाग द्वारा सफलतापूर्वक किए जाते हैं।

(iv) राजभाषा अनुभाग संसदीय राजभाषा समिति द्वारा किए जाने वाले निरीक्षणों के दौरान संबंधित अधीनस्थ कार्यालयों को मार्गदर्शन एवं समुचित सहायता भी प्रदान करता है।

उपर्युक्त के आलोक में रक्षा सम्पदा महानिदेशालय के राजभाषा अनुभाग द्वारा चालू वर्ष के दौरान किए गए कामकाज का एक विस्तृत ब्यौरा निम्नानुसार हैः–

1. माननीय संसदीय राजभाषा समिति द्वारा दिनांक 22 जनवरी, 2021 को रक्षा सम्पदा महानिदेशालय का राजभाषायी निरीक्षण किया गया जो सफलतापूर्वक सम्पन्न करवाया गया। माननीय समिति की पहली उप–समिति द्वारा रक्षा सम्पदा संगठन के दो अधीनस्थ कार्यालयों, दिल्ली छावनी परिषद और छावनी परिषद कार्यालय, पुणे का राजभाषायी निरीक्षण क्रमशः 12 जुलाई, 2021 और 15 जुलाई, 2021 को किया गया। ये दोनों निरीक्षण भी सफल रहे। इन दोनों कार्यालयों के निरीक्षण के दौरान मुख्यालय के प्रतिनिधियों ने समुचित मार्गदर्शन एवं सहायता प्रदान कर अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

2. रक्षा सम्पदा महानिदेशालय नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, दक्षिण दिल्ली–। के 09 सदस्य कार्यालयों के समूह का नोडल कार्यालय भी है। नराकास की बैठकों में नोडल कार्यालय के रूप में प्रशंसनीय कार्य करने पर महानिदेशालय और राजभाषा अनुभाग की कई बार सराहना की जा चुकी है। राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के साथ–साथ राजभाषा अनुभाग इस समूह के सदस्य कार्यालयों का उचित मार्गदर्शन भी करता है तथा आवश्यकतानुसार उनकी समुचित सहायता भी करता है।

3. रक्षा सम्पदा महानिदेशालय में 14 से 28 सितंबर, 2020 तक हिन्दी पखवाड़े का भव्य आयोजन किया गया। कोरोना महामारी के चलते सामाजिक दूरी का ध्यान रखते हुए केवल लिखित प्रतियोगिताओं का ही आयोजन किया गया। इस दौरान आयोजित विभिन्न हिन्दी प्रतियोगिताओं में अधिकारियों/कर्मचारियों ने बढ–चढ़कर भाग लिया। विजेता प्रतिभागियों

को नकद पुरस्कार एवं प्रशस्ति–पत्र देकर पुरस्कृत किया गया।

4. राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों (जिनमें राजभाषा नीति के कार्यान्वयन की स्थिति का जायजा लेने के लिए समय–समय पर किए जाने वाले राजभाषायी निरीक्षण भी सम्मिलित हैं) के अनुसार मुख्यालय स्तर पर अपने न्यूनतम 25 प्रतिशत अधीनस्थ कार्यालयों अर्थात रक्षा सम्पदा निदेशालयों, निदेम, छावनी परिषद कार्यालयों और रक्षा सम्पदा कार्यालयों का राजभाषायी निरीक्षण किया जाता है। महानिदेशक, रक्षा सम्पदा द्वारा वर्ष 2020–21 एवं 2021–22 के लिए अनुमोदित निरीक्षण कार्यक्रम के अनुसरण में मुख्यालय स्तर पर 23 कार्यालयों का राजभाषायी निरीक्षण कार्य पूर्ण किया गया तथा उनकी निरीक्षण रिपोर्टें संबंधित कार्यालयों और कमानों को अगली आवश्यक कार्रवाई हेतु भेजी गई। कोरोना महामारी के कारण असाधारण हालात के चलते सक्षम प्राधिकारी द्वारा ट्रायल आधार पर अनुमोदित कार्यक्रमानुसार कुछ कार्यालयों का वर्चुअल राजभाषायी निरीक्षण भी किया गया।

5. रक्षा सम्पदा संगठन के सभी अधीनस्थ कार्यालयों में भी हिन्दी पखवाड़ा बड़ी धूमधाम से मनाया गया। विभिन्न हिन्दी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया और विजेताओं को प्रशस्ति–पत्र और नकद पुरस्कार प्रदान किए गए। साथ ही लगभग सभी अधीनस्थ कार्यालयों में समय–समय पर हिन्दी कार्यशालाएं आयोजित की गई, जिनमें अधिक से अधिक अधिकारियों और कर्मचारियों ने भाग लिया। इन कार्यशालाओं के आयोजन से कार्मिकों में हिन्दी में काम करने की झिझक दूर होती है तथा हिन्दी पत्राचार में भी वृद्धि देखने को मिलती है।

6. राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा अनेक प्रोत्साहन योजनाएं परिचालित की जाती हैं। इनमें वर्ष भर में हिन्दी में सर्वाधिक सरकारी कामकाज करने वाले अधिकारियों/कार्मिकों को नकद पुरस्कार से पुरस्कृत की जाने वाली प्रोत्साहन योजना भी शामिल हैं। महानिदेशालय में वर्ष 2019–2020 के दौरान हिन्दी में सर्वाधिक काम करने के लिए निम्नलिखित अधिकारियों/कर्मचारियों को पुरस्कार प्रदान किए गए :–

क्र.सं.	**नाम एवं पदनाम**	**अनुभाग**	**पुरस्कार**
1.	श्री जगदीश बिश्नोई, सहायक महानिदेशक	अधि./किराया	प्रथम
2.	श्री राकेश मीना, कनिष्ठ सचिवालय सहायक	छावनी	प्रथम
3.	सुश्री मंजू मालिक, उच्च श्रेणी लिपिक	प्रशासन	द्वितीय
4.	श्री सोनू पाल, उच्च श्रेणी लिपिक	अधिग्रहण–II	द्वितीय
5.	श्री राजीव कुमार, एसडीओ–II	अधिग्रहण–II	द्वितीय
6.	श्री रवि कुमार, वरिष्ठ सचिवालय सहायक	किराया	तृतीय
7.	श्री यशपाल, वरिष्ठ सचिवालय सहायक	किराया	तृतीय
8.	श्री मुनेश कुमार मीना, सहायक अनुभाग अधिकारी	समन्वय	तृतीय
9.	सुश्री मोनिका रस्तोगी, एसडीओ–II	किराया	तृतीय

7. महानिदेशालय की वार्षिक हिन्दी पत्रिका "सम्पदा भारती" का प्रकाशन भी राजभाषा के प्रचार–प्रसार की दिशा में एक उल्लेखनीय कदम है। इसमें प्रकाशित लेख, कहानी, कविता एवं चुटकुले इत्यादि कार्मिकों की रचनात्मक प्रतिभा को उजागर करने का एक सार्थक एवं सक्रिय मंच है। "सम्पदा भारती" में प्रकाशित रचनाओं के रचनाकारों (प्रत्येक रचनाकार की केवल एक रचना) को गुणवत्ता के आधार पर पारिश्रमिक भी प्रदान किया जाता है।

8. संक्षेप में, राजभाषा अनुभाग हिन्दी के प्रति अपने कर्त्तव्यों के निर्वहन को लेकर काफी गंभीर है। सदैव यह प्रयास रहता है कि सौंपे गए दायित्व को सजगता एवं सावधानी के साथ पूरा किया जाए। इस कार्य में महानिदेशक महोदय के मार्गदर्शन में संबंधित उच्च अधिकारियों के बहुमूल्य सुझावों से हिन्दी के प्रोत्साहन संबंधी सभी नीतिगत निर्णयों का सुचारू रूप से कार्यान्वयन संभव हो पाता है।

''''

संसदीय राजभाषा समिति की पहली उप समिति द्वारा 12-07-2021 को दिल्ली छावनी परिषद का निरीक्षण

विज्ञान भवन, नई दिल्ली में आयोजित निरीक्षण कार्यक्रम

माननीय संयोजक महोदय का सम्मान

संयोजक महोदय प्रशस्ति पत्र प्रदान करते हुए

प्रदर्शन सामग्री का अवलोकन

संसदीय राजभाषा समिति की पहली उप समिति द्वारा 15-07-2021 को पुणे छावनी परिषद का निरीक्षण

माननीय संयोजक महोदय का सम्मान

राजभाषायी निरीक्षण बैठक का दृश्य

अपर महानिदेशक (राजभाषा) बैठक को संबोधित करते हुए

संयोजक महोदय प्रशस्ति पत्र प्रदान करते हुए

राजस्थान परिचय

रेत के टीलों और शाही महलों से घिरा भारत का सबसे बड़ा राज्य, राजस्थान को राजघरानों की भूमि क्यों कहा जाता है, आइए इस पर चर्चा करते हैं।

कन्नौज नरेश 'हर्ष', जिसे 'हर्षवर्धन' के नाम से भी जाना जाता है, की मृत्यु के पश्चात उत्तर भारत में कई छोटे–छोटे राज्यों का उदय हुआ, जहाँ के शासकों ने एक–दूसरे को नीचा दिखाकर राज्य विस्तार को अपनी नीति बना लिया था। इन्हीं छोटे राज्यों में प्रतिहार राजपूतों का जालौर (वर्तमान राजस्थान) में एक छोटा–सा राज्य था। प्रतिहार शासकों ने अपने बलशौर्य से कन्नौज पर कब्ज़ा कर लगभग पूरे उत्तर भारत में अपना राज्य कायम कर लिया था। गुजरात से उत्तरी बंगाल तक तथा हिमालय से नर्मदा तक अपना राज्य विस्तार करने वाले 'नागभट्ट' तथा 'मिहिरभोज' इसी वंश में प्रतापी राजा हुए।

'नागभट्ट' तथा 'मिहिरभोज' ने अरबों के विस्तार को रोका। पूर्वी भारत की शक्ति 'पाल' तथा दक्षिण भारत की शक्ति 'राष्ट्रकूट' से संघर्ष किया। कुछ समय तक इन्होंने उतने ही क्षेत्र पर शासन किया जितने क्षेत्र पर राजा हर्ष ने किया तथा राजपूत शासकों में सर्वोच्च स्थान प्राप्त किया। परन्तु दुर्भाग्यवश इनके समय की कोई इमारत या किताब उपलब्ध न होने के कारण भारत का आम आदमी इनके बारे में बहुत कम जानता है।

तत्पश्चात जब महमूद गजनवी के आक्रमणों ने प्रतिहारों को कमजोर कर दिया, तब प्रतिहार साम्राज्यों के भग्नावशेषों पर कई छोटे–छोटे राज्यों का उदय हुआ, जैसे कन्नौज का राठौड़, शाकम्भरी का चौहान, हिमाचल/दिल्ली के तोमर, ग्वालियर के कछवाह, गुजरात के सोलंकी, बुंदेलखंड के चंदेल, जैसलमेर के भाटी, मेवाड़ के गुहिल, मालवा के परमार तथा मालवा के पूर्व–दक्षिण में कालचूरी। तोमर नरेशों ने 'दिल्लिका' (दिल्ली शहर) का निर्माण किया। भारत का दिल कही जाने वाली दिल्ली के शासकों को इतिहासकारों ने 'भारत के शासक' की संज्ञा दी है। तत्पश्चात राजपूत राजाओं के बीच आपसी मतभेद से उत्त्पन्न हुई लड़ाई का फायदा मोहम्मद गौरी (तत्कालीन भारत के उत्तर–पश्चिम में उठ रही शक्ति) ने उठाया। दिल्ली के तत्कालीन शासक पृथ्वीराज चौहान, कन्नौज नरेश जयचंद, कालिंजर नरेश परिमर्दिदेव तथा सोलंकी नरेश भीमदेव के बीच पड़ी फूट से गौरी को उत्तर भारत में सफलता प्राप्त हुई और लगभग 1206 ई. तक वह भारत में स्थायी मुस्लिम राज्य स्थापित करने में कामयाब रहा। इसी बीच बहुत से राजपूत राजाओं ने अपना राज्य बचाने के पुरजोर प्रयास किए किन्तु वे सफल नहीं हो सके और उन्होंने मैदानी इलाके छोड़ रेतीले क्षेत्र 'राजपूताना' (वर्तमान राजस्थान) में अपने राज्य स्थापित किए।

दिल्ली के सुल्तानों की साम्राज्यवादी नीतियों ने रेतीली राजपूत रियासतों का भी अंत कर दिया। इस संदर्भ में साहसी पठान अल्लाउद्दीन खिलजी का उल्लेख किया जा सकता है। राजपूताने के दो स्तंभ– रणथंभौर व चित्तौड़ भी लगभग 1303 ई. में इसी के अधिकार में चले गए। अल्लाउद्दीन खिलजी की मृत्यु के बाद राजपूत सूरमाओं ने अपनी बल–बुद्धि का परिचय देते हुए पुनःराज्य स्थापित किए। चित्तौड़ के गुहिल शासकों की सिसोदिया शाखा के एक सरदार ने 1326 ई. के आसपास चित्तौड़ को जीता। कुछ समय पश्चात बलिष्ठ, कर्तव्यपरायण तथा बहादुर योद्धा हम्मीर ने दिल्ली के तुगलक सुल्तान से मेवाड़ के अन्य किले भी छीन लिए। चित्तौड़ दुर्ग पुनःप्राप्त करने की खुशी में हम्मीर को 'महाराणा' की पदवी दी गई। महाराणा हम्मीर ने कई पड़ौसी राज्यों को भी जीता तथा उनसे मधुर संबंध स्थापित किए। बाद में महाराणा कुम्भा ने साम्राज्य विस्तार किया तथा मालवा व गुजरात के सुल्तानों को हराया। मालवा विजय की याद में चित्तौड़ के विजय स्तंभ बनवाए गए। भारत की सबसे बड़ी दीवार कहलाने वाला कुम्भलगढ़ दुर्ग का निर्माण भी इन्होंने ही करवाया था। इनके 32 वर्ष शासन करने के बाद इनके पौत्र महाराणा सांगा ने साम्राज्य का विस्तार किया। इतिहासकारों ने इसे योद्धा नरेश की संज्ञा दी है। कहा जाता है कि इनके शरीर पर 80 घाव थे और एक हाथ व एक टांग भी नहीं थी। फिर भी इनके माथे से राजोचित तेज टपकता था। इनकी वीरता की कहानियां आज भी राजस्थान में प्रचलित हैं। बाबर के अनुसार यह तत्कालीन उत्तर भारत का सर्वाधिक शक्तिशाली शासक था। इनके समकालीन ही मारवाड़ में जोधा नामक यशस्वी शासक ने जोधपुर

शहर बसाया। इनके ही एक पुत्र बीखा ने पृथक राज्य की स्थापना की और बीकानेर शहर बसाया। परन्तु दुर्भाग्यवश, महाराणा सांगा 1527 ई. में कनवाह के युद्ध में बाबर से पराजित हुआ, इसके साथ ही राजपूतों का दिल्ली की गद्दी हथियाने का सपना चूर–चूर हो गया। राणा सांगा की हार से राजपूताना में मुग़लों का प्रभाव बढ़ गया।

बाबर की मृत्यु के बाद उसका उत्तराधिकारी हुमायूँ बना जो कि एक कायर शासक था। इसका फायदा मारवाड़ नरेश मालदेव ने उठाया और राजपूताना के बहुत बड़े हिस्से पर कब्ज़ा कर लिया। इनका साम्राज्य सिंध में उमरकोट से लेकर वर्तमान हरियाणा के नारनौल तक फैला हुआ था। वर्तमान गुजरात का भी कुछ हिस्सा उसके अधीन था। परन्तु उसी समय बिहार में एक महत्वाकांक्षी शक्ति शेरशाह का उदय हुआ। इतिहासकारों ने उसे अंग्रेज़ो से भी ज्यादा योग्य शासक माना है। मालदेव शेरशाह से पराजित हुआ और उसका राठौड़ों का साम्राज्य स्थापित करने का सपना चूर–चूर हो गया। कालिंजर के घेरे में शेरशाह की 1545 ई. में हुई मृत्यु से मालदेव को पुनः अवसर मिला परंतु स्फूर्ति न होने के कारण वह इस अवसर का लाभ नहीं उठा सका और 1562 ई. में मृत्यु को प्राप्त हुआ।

शेरशाह से हार के बाद हुमायूँ ईरान चला गया और वहां के सफविद बादशाह तहमस्प की मदद से शेरशाह की मृत्यु के बाद भारत वापस आ गया। परन्तु हुमायूँ एक वर्ष ही सत्ता भोग सका और इसके बाद उसके पुत्र अकबर ने कूटनीति से सभी राजपूत नरेशों को अपने अधीन कर लिया। मेवाड़ का राणा प्रताप ही एकमात्र ऐसा शासक था जो आजीवन अकबर से संघर्ष करता रहा। जहांगीर के समय में यह संघर्ष समाप्त हो गया और 1624 ई. में महाराणा प्रताप के पुत्र अमरसिंह ने मुग़लों के सामने सशर्त समर्पण कर दिया।

अब राजपूत नरेश मुग़लों के सामंत बन गए थे परन्तु जैसा कि प्रकृति का नियम है, औरंगजेब की मृत्यु के बाद राजपूत शासकों ने राजपूताना को मुग़लों से आज़ाद करवा लिया। 1720 ई. के आसपास राजपूताना से मुग़ल प्रभाव समाप्त–सा हो गया और इस कार्य में दुर्गादास राठौड़ का सबसे बड़ा योगदान रहा। राजपूत रियासतों के आपसी मतभेद के कारण राजपूताना में मराठों का दखल रहा और 1761 ई. में मराठों की हार के बाद इस इलाके में सिंधिया और होल्कर का प्रवेश हुआ। 1803 ई. में अंग्रेज़ों ने दिल्ली में कदम रखा और उसके बाद 1818 ई. के आसपास सारा क्षेत्र अंग्रेजों के कब्ज़े में आ गया। इसी के साथ राजपूताना में विकास का दौर शुरू हुआ। स्कूल–कालेज खोले गए, मोटर, रेल व हवाई जहाज़ों के साथ ही प्रगतिशील विचारों एवं वैज्ञानिक युग की शुरुआत हुई। 15 अगस्त, 1947 को देश की आज़ादी के साथ ही राजपूताना के स्थान पर राजस्थान के निर्माण का दौर शुरू हुआ।

स्वतंत्रता प्राप्ति के समय तत्कालीन राजपूताना में 19 रजवाड़े, 3 रियासतें और एक केंद्र शासित प्रदेश था। 3 बड़ी रियासतों में उदयपुर, जयपुर व जोधपुर थी जो क्रमशः महाराणा भूपाल सिंह, महाराणा मानसिंह तथा महाराणा हनुमंत सिंह के अधीन थी। सभी राजाओं ने धीरे–धीरे अपनी रियासतें स्वतंत्र भारत को सौंप दी तथा केंद्र सरकार ने राजस्थान की निर्माण प्रक्रिया प्रारम्भ कर दी। एक नवम्बर, 1956 को राजस्थान का वर्तमान स्वरूप सामने आया। इसके निर्माण में तत्कालीन गृह मंत्री सरदार वल्लभभाई पटेल, रियासती मंत्रालय के सचिव वी.पी. मेनन, महाराणा उदयपुर तथा महाराणा जयपुर का विशेष योगदान रहा। राजस्थान की भूमि वीरों को जन्म देने वाली भूमि है। बप्पा रावल से लेकर दुर्गादास राठौड़ तक वीरों की एक लंबी फेहरिस्त है। इसी भूमि पर भारत सरकार ने 18 मई, 1974 को पोखरण में शक्ति पूजा का एक नया अध्याय शुरू किया। यह नया अध्याय था– भारत का पहला परमाणु परीक्षण।

राहुल कुमार
रक्षा सम्पदा महानिदेशालय

नारी

सिर्फ चंचलता की लहर नहीं,
तू दृढ़ता का आगाज़ है।
सिर्फ अबला की मूरत नहीं,
तू जीवन का एक राग है।

तू है स्नेह की परिभाषा,
तू ममता का सार है।
जो यमराज को भी झुका दे,
तू सावित्री का वो प्यार है।

जो बसे हृदय में नारायण के,
तू उस नर की नारायणी है।
जो लगे अधूरे बिना तेरे,
तू उस शिव की अर्धांगिनी है।

तू है दुनिया की आधी आबादी,
तू जीवन का आधार है,
तू कदम बढ़ा हिम्मत दिखा,
ये दुनिया खड़ी तेरे साथ है।

जो जकड सके तेरे पैरों को,
वो जंज़ीर ना अब तक बन पाई।
तेरे आंचल की छांव में,
ये धरती ही तो लहराई।

तू लगा ज़ोर दिखला दे सबको,
तुझमें भी एक आग है।
तू थके नहीं तू रुके नहीं,
तू खूद में एक विश्वास है।

तू खूद में एक विश्वास है।
तू खूद में एक विश्वास है।

————————

नया नजरिया

अँधेरों के बादल छट गए हैं,
जिंदगी में नया सवेरा आया है।
कुछ नए शौक पाले हैं,
कुछ नए सपने बुने हैं।

माथे की लकीरें मिटी हैं,
चेहरे की मुस्कान लौटी है।
मंजिल पाने की नई तरकीबें हैं,
रास्तों पर चलने का नया हौसला है।

खुद के वजूद की तलाश में पहला कदम है,
जिंदगी जीने का नया नजरिया है।
अँधेरों के बादल छट गए हैं,
जिंदगी में नया सवेरा आया है।

——————

उड़ान

हौसलों की उड़ान अभी बाकी है,
मंजिल का मकाम अभी बाकी है।
सूरज की तेज चमक ना सही,
पर किरणों का सलाम अभी बाकी है।

मिट गई यादें सैलाब के साथ,
पर कहीं तो पैरों के निशां अभी बाकी है।
ऊँची उड़ान का खिताब ना सही,
पर आसमां में उड़ने का अरमान अभी बाकी है।

कुछ करने की चाह ही तो है,
तभी तो मुरदे में जान अभी बाकी है।
हौसलों की उड़ान अभी बाकी है,
मंजिल का मकाम अभी बाकी है।

——————

धीरेंद्र तिवारी
रक्षा सम्पदा महानिदेशालय

नकाब

रूपाली को बड़े लाड़–दुलार से पाला गया था। आखिर अपने संयुक्त परिवार में सब बच्चों में वो अकेली बेटी थी। चार भाईयों के बीच अकेली बहन। घर वाले तो उसे सिर आँखों पर बिठा कर रखते थे। रूपाली की फर्माइश करते ही उसकी पसंदीदा चीज उसके सामने हाजिर। रूपाली तो बस अपने सपनों की दुनिया में मस्त रहती। उसे किसी बात की फ़िक्र ना थी। फ़िक्र करने के लिए आखिर उसके घर में इतने सारे चाहने वाले जो थे। रूपाली का भाग्य कहे या कुछ और कालेज में भी सब उसके आगे पीछे रहते थे। रूपाली पढ़ने में तो साधारण थी परंतु देखने में किसी फिल्म की हीरोइन से कम भी ना थी। उसका तो सीधा–सा हिसाब था– ज्यादा पढ़ कर क्या करना है, घरवाले एक हीरो टाइप लड़का देखकर उसकी शादी तो कर ही देंगे फिर जैसे घर में सब उसके नखरे उठाते हैं फिर वो उठाएगा। रूपाली अक्सर कहती, "इतना किताबों में क्या सिर खपाना, मैं ही सब करुँगी तो मेरा लाइफ पार्टनर क्या करेगा, आखिर वो किसके लिए कमाएगा, उसके पैसे खर्च करने के लिए भी तो कोई होना चाहिए", और इतना कहकर वो ज़ोरों से हँस देती। रूपाली की जिंदगी तो बस मानो एक परी कथा हो, इंतजार था तो बस घोड़े पर आने वाले उस सुंदर से राजकुमार का जो उसे अपने घोड़े पर बैठा कर बादलों की सैर कराए।

रूपाली का कालेज खत्म होने को है। अब तो उसके घर वालों ने रिश्ते भी देखने शुरू कर दिए। रूपाली के पिता जी के दूर के रिश्तेदार तरुण का रिश्ता रूपाली के लिए लेकर आए। रूपाली के पिताजी और चाचाजी ने बनारस जाकर तरुण के बारे में जाकर जांच–पड़ताल की। घर के आस–पड़ोस में, दफ्तर में, सब जगह पता करने पर तरुण उनकी उम्मीदों पर एकदम खरा उतरा। रूपाली के पिताजी ने तरुण के पिताजी को सपरिवार घर आ का निमंत्रण दिया ताकि इस औपचारिक मुलाकात में रूपाली और तरुण भी एक–दूसरे को समझ सके। अगले हफ्ते के रविवार का दिन नियत हुआ, रूपाली के पिताजी ज़रा भी समय नहीं गंवाना चाहते थे, आखिर इतना सुशील और सरकारी नौकरी में कार्यरत अधिकारी लड़का अपने हाथ से कैसे जाने देते। घर आकर रूपाली के पिताजी ने सबको रिश्ते की बात बताई, सब बहुत खुश हुए, आखिर रिश्ते था भी तो इतना अच्छा। आखिर वो दिन आ ही गया। रविवार के दिन सुबह से ही घर में अफरा–तफरी मच गई। कोई कहता कि ये क्या गंदगी फैला रखी है, जल्दी से सब साफ करो, तो कोई कहता कि अभी तक मिठाई क्यूँ नहीं आई, लड़के वाले आने वाले ही होंगे। "रूपाली को इन सब से मतलब ना था, वो तो बस अपना राजकुमार के ख्यालों में गुम थी। उसकी बेस्ट फ्रेंड पूजा ने चुटकी लेते हुए कहा", "ये देखो राजकुमारी को अभी राजकुमार उर्फ तरुण के दीदार भी ना हुए और ये लगी है अपने ख्याली पुलाव पकाने"। ठीक पांच बजे लड़के वाले आ गए। सब लोग बैठकर बातें करने लगे। लड़के की माँ ने कहा कि अब जरा हमें भी तो रूपाली से मिलने का अवसर दीजिए। रूपाली को लेने उसकी चाची ऊपर वाले कमरे में गयी। हल्की गुलाबी सिल्क की साड़ी में रूपाली एकदम स्वर्गलोक से उतरी अप्सरा लग रही थी। रूपाली नज़रें झुकाए सोफे पर जाकर बैठ गई और तरुण की माँ के द्वारा पूछे गए सवालों के जवाब देने लगी। उसका जी कर रहा था कि बस वो एक नजर चुराकर अपने सपनों के राजकुमार को देख ले, पर सब क्या सोचेंगे कि कितनी बेशर्म है वो, बस यही सोचकर वो हिम्मत ना कर पायी। वो अपने ख्यालों में ही थी कि तभी तरुण के पिताजी की आवाज उसके कानों तक पहुंची हमारी बातें तो होती ही रहेंगी अब दोनों बच्चों को भी एक दूसरे को जानने–समझने का मौका दीजिए। रूपाली की चाची दोनों को घर की छत पर लेकर गई और उन्हें बात करने के लिए अकेला छोड़ दिया गया। रूपाली ने हिम्मत जुटाकर नज़रें ऊपर उठाई। नज़रें उठाते ही उसे ऐसा लगा मानो वो सातवें आसमान पर हो और किसी ने उसे जोर से धक्का देकर नीचे गिरा दिया हो। तरुण रंग–रूप में उसके सपनों के राजकुमार की पैरों की धूल भी ना था। सांवला चेहरा, उस पर नूडल्स जैसे बाल। अगर बालों में कोई मक्खी गलती से चली जाए तो बस वो वहीं कैद होकर रह जाए और बाहर निकलने की जद्दोजहद में ही अपना दम तोड़ दे, कद भी तो रूपाली से बस एक इंच ही ज्यादा था। रूपाली तरुण की बातों का बड़ा नपा–तुला सा जवाब देती। तरुण को लगा कि शायद वो थोड़ी शर्मीली स्वभाव की है। थोड़ी देर बाद चाची उन्हें नीचे ले चलने के लिए आयी।

तरुण के पिताजी ने सबसे चलने की अनुमति मांगी और कहा कि वो शाम को फोन करके जवाब देंगे। सबके जाने के बाद रूपाली अपने कमरे में भागती हुई गयी, घरवालों से सोचा कि वो शरमा रही है। पर चाची को थोड़ा शक हुआ वो रूपाली के कमरे में गयी तब रूपाली ने उन्हें सबकुछ बता दिया कि उसे तरुण बिल्कुल पसंद नहीं है। चाची ने उसे किसी से कुछ ना कहने की सलाह दी और समझाया कि अभी रिश्ता पक्का नहीं हुआ है। आखिर हुआ वही जिसका डर था। तरुण के पिताजी ने शाम को फोन करके रिश्ता तो पक्का कर ही लिया और साथ ही साथ अगले महीने की पांचवीं तारीख को सगाई भी तय कर दी। रूपाली का तो सोच–सोच कर बुरा हाल था कि क्या सोचा था और क्या हो गया, उसके सारे सपनों पर पानी फिर गया। उसे चिंता थी तो बस इस बात की कि अब कैसे वो अपनी सहेलियों का सामना करेंगी। वो तो बस उसे यह कहकर चिढ़ायेंगी कि कैसी ब्लैक एंड व्हाइट टी.वी. जैसी जोड़ी है। रूपाली ने कई बार अपने पिताजी से इस बारे में बात करने की कोशिश की मगर उसके पिताजी ने यह कहकर उसकी बात नकार दी कि केवल सूरत के चक्कर में वो इतना गुणवान लड़के का रिश्ता नहीं ठुकरा सकते। वो अक्सर कहते, लड़का हीरा है हीरा। रूपाली बच्चे! तुम उसकी सूरत नहीं सीरत देखो फिर तुम्हें भी वो पसंद आ ही जाएगा और वैसे भी मुझे अच्छे से पता है कि मेरी रानी बिटिया की खुशी किसमें है। तुम बस मुझपर भरोसा रखो और ये सब फालतू बातें सोचना बंद कर दो। आखिर सगाई का दिन भी आ गया। रूपाली ने अनमने मन से सगाई कर ली। सगाई के बाद जब कभी तरुण का फोन आता तो वो कुछ–ना–कुछ बहाना करके उससे बात करने से मना कर देती। वो तो बस इसी उम्मीद में थी कि भगवान कोई चमत्कार करें और उसे इस रिश्ते से छुटकारा मिले।

सगाई के एक हफ्ते बाद तरुण के पिताजी ने लेन–देन की बात करने के लिए रूपाली के पिताजी को घर पर बुलाया और उनके सामने 25 लाख रूपए दहेज की मांग रखी। तरुण भी तब वहीं मौजूद था परंतु उसने तो बस चुप्पी साध ली। रूपाली के पिताजी ने अपनी असमर्थता जतायी कि वे इतना नहीं कर सकते परंतु तरुण के पिताजी ने कहा, ये तो हमारे समाज की परंपरा रही है समधी जी और समाज में हमारा भी एक रुतबा है। जब सब रिश्तेदार पूछेंगे कि दहेज में क्या मिला तब हम सबको क्या जवाब देंगे। हमने तरुण की पढ़ाई पर बहुत खर्च किया है, उसके सामने तो ये कुछ भी नहीं है। आपकी भी तो बस एक ही बिटिया है। मुझे लगा कि आप खुद समझदार हैं, आप स्वयं ही सब समझ जाएंगे परंतु मुझे ही आपको सब बताना पड़ रहा है। पर कोई बात नहीं आखिर हम सब हैं तो एक ही परिवार। रूपाली के पिताजी सिर झुकाए सबकुछ चुपचाप सुन रहे थे। फिर वे अपना उदास चेहरा लेकर वापस घर आ गए। यहां किसी की कुछ समझ नहीं आ रहा था कि अब क्या किया जाए। इतने रूपयों का इन्तज़ाम कैसे किया जाए। अब तो शादी तोड़ने की भी कोई गुंजाइश नहीं रही। सगाई हो चुकी है और तो और घर की कितनी बदनामी होगी। सब तो यही सोचेंगे कि जरूर रूपाली में ही कोई खोट है, तभी तो सगाई के बाद वर पक्ष ने रिश्ता ठुकरा दिया। रूपाली भी चुपके से ये सब बातें सुन रही थी। उसे तरुण और उसके परिवार पर बहुत गुस्सा आ रहा था। उसका मन कर रहा था कि वो तरुण के घर जाकर सबको फटकार लगाए और कहे कि कोयले की शक्ल वाले आपके लड़के का मन भी कोयले जैसा है। बस मेरे सीधे–सादे पिताजी ही कोयले को हीरा समझ बैठे। फोन की घंटी सुनकर रूपाली अपने ख्यालों से बाहर निकली। फोन के दूसरी तरफ तरुण था, उसने शाम को आने की बात कही।

घर में एकदम शांति का माहौल था, सन्नाटा तो इतना की एक सुई भी गिरे तो उसकी भी आवाज़ सबको सुनाई दे जाए। शाम को सात बजे तरुण आया, उसके हाथ में एक सूटकेस था। सब लोग सोफे पर बैठ गए। तरुण ने ही चुप्पी तोड़ी। तरुण ने कहा, सुबह मेरे घर पर जो कुछ भी हुआ उसके लिए मैं क्षमाप्रार्थी हूँ। मेरी चुप्पी को आप सब अन्यथा ना लें। मैं दहेज का समर्थक नहीं हूँ। तरुण ने सूटकेस रूपाली के पिताजी की तरफ बढ़ाते हुए कहा, ये रहे वो पच्चीस लाख रूपए जिनकी मेरे पिता जी ने आपसे मांग की थी। इन्हें आप अपनी तरफ से मेरे पिताजी को दे दीजिएगा। रूपाली के घरवालों को समझ नहीं आ रहा था कि आखिर ये सब क्या हो रहा है। सब बस एकटक तरुण की तरफ देख रहे थे। तरुण ने अपनी बात जारी रखी, मेरे माता–पिता पुराने ख्यालों के हैं। मैं उन्हें जरूर समझाता कि दहेज लेना–देना एक अपराध है और दहेज एक सामाजिक बुराई है परंतु मेरे पिताजी को दिल की बीमारी है और मैं ऐसी कोई भी बात

नहीं करना चाहता जो उन्हें नागवार हो और जिससे उनके मन को जरा भी ठेस पहुँचे। आप ये बिल्कुल ना सोचिए कि मैं यह सब करके कोई महान काम कर रहा हूँ। मैं तो बस खुद को उस बाजार में बिकने से बचा रहा हूँ, जहां लड़के की काबिलियत तो चंद रूपयों में तौला जाता है और फिर उसी का सौदा करके शादी जैसे पवित्र बंधन पर दाग लगाया जाता है। तरुण ने अपनी बात खत्म की। सब तरुण की बातें सुनकर स्तब्ध थे। किसी की कुछ समझ में नहीं आ रहा था कि वे क्या कहें। रूपाली के पिताजी ने अपनी आँखों से बहते हुए आँसुओं को पोछा और तरुण के सिर पर हाथ रखते हुए कहा, भगवान तुम जैसा बेटा सबको दे। हम सब तुम्हारे साथ अपनी बिटिया का रिश्ता जोड़कर धन्य हो गए। तरुण वापस जा चुका था, रूपाली जो चुपके से इस वाक्य की साक्षी बन बैठी थी, भीगी पलकों से तरुण के जाते हुए देख रही थी और सोच रही थी कि कितनी बेवकूफ थी वो जो कोहिनूर को कांच का टुकड़ा समझ बैठी थी।

शादी का दिन नजदीक आ गया। सब तरफ बस खुशियाँ ही खुशियाँ थी। म्यूजिक प्लेयर पर संगीत बज रहा था, मेहंदी है रचने वाली......। रूपाली अपने हाथों में मेहंदी के बीच में लिखे तरुण के नाम को देखकर मुस्करा रही थी और एक बार फिर वो अपने सपनों की दुनियाँ में गुम हो गई, अन्तर बस इतना था कि इस बार सपनें में कोई घोड़े पर सवार राजकुमार नहीं था बल्कि उसकी जगह होंठों पर मुस्कान और आँखों में ढेर सारा प्यार लिए तरुण था ......

जितेन्द्र डडवाल
रक्षा सम्पदा महानिदेशालय

स्मृति शेष

कविता में संगीत जैसा प्रभाव लाने वाले कवि मंगलेश डबराल का जन्म 16 मई, 1948 को उतराखंड में हुआ। शुरू से ही पत्रकारिता में हाथ आजमाई के ख्वाहिशमंद थे। इसी सिलसिले में अन्यों के अतिरिक्त 'जनसत्ता' में वरिष्ठ सहायक संपादक भी रहे। इनकी रचनाओं में जीवन, संवेदना और विचार क्षेत्र में उन अगम्य स्थानों पर जाने की उत्कट चाह है, जिन्हें समय ने स्थूल यथार्थ के हाशिए पर ला खड़ा किया है। कविता संग्रह–पहाड़ पर लालटेन (1981), घर का रास्ता (1988), हम जो देखते हैं (1995) और आवाज़ भी एक जगह है (2000) इनमें उल्लेखनीय हैं। इसके अतिरिक्त गद्य में भी लेखन कार्य के साथ–साथ सभी भारतीय भाषाओं के अलावा अंग्रेजी, रूसी, जर्मन, फ्रांसीसी, इतावली से अनुवाद। अनेक पुरस्कारः– ओमप्रकाश स्मृति सम्मान (1982), श्रीकांत वर्मा पुरस्कार (1989), शमशेर सम्मान (1995), पहला सम्मान (1996)। 'हम जो देखते हैं' के लिए वर्ष 2000 का साहित्य अकादमी पुरस्कार। हिन्दी अकादमी, दिल्ली का साहित्यकार सम्मान। 09 दिसम्बर, 2020 को मृत्यु हुई।

यहां श्रद्धांजलि रूप में इनकी चार बड़ी और एक छोटी कविता पाठकों के समक्ष प्रस्तुत है।

छुपम छुपाई

बच्चे खेल रहे थे छुपम छुपाई का खेल
उन्हीं में से कभी किसी ने खोजा होगा इसे अनायास
इस तरह छिपने में भी पैदा हुई एक कला
एक परिचित जगह में उन्होंने खोज लिये कई अज्ञात दुर्गम कोने
रोजमर्रा की सपाट दुनिया में भर दिये रहस्य
दरवाजे की जरा–सी ओट में या मेज कुर्सी पलंग के नीचे
कभी किसी पर्दे को आड़ बनाते हुए
किसी पौधे के पीछे किताबों के अंबार की बगल में
कभी मां की साड़ी की छोर में छिपते हुए
छिपने वाला कभी खोजने वाले की पीठ को ही ओट बना लेता है
अकसर वह आवाज भी देता है कि आ जाओ अब मैं
अच्छी तरह छिप गया हूँ खोजे जाने के लिए तैयार
यह एक संकेत है कि जिसे तुम आसान समझते हो
वह दरअसल काफी कठिन है
और आवाज भी एक जगह है जहां छिपा जा सकता है
अपने कुतूहल कल्पना और सहजबुद्धि के सहारे
आगे बढ़ता बच्चा खोज ही लेता है छिपे हुए को
कुछ देर के ऊहापोह के बाद वही होता है एक सघन उल्लास का क्षण
जब रहस्य और यथार्थ चमकदार आँखों से एक–दूसरे से टकराते हैं
मैंने देखा है यह छिपने और खोजने का खेल
और जब कोई सुराग पाने की कोशिश में कोई बच्चा
पूछता है कि आपने कहीं देखा मेरी दीदी को
मैं कहता हूँ देखा नहीं क्योंकि मैं छिपाये रहता हूँ खुद को
अपनी खाल के कवज में धूल होते कागजों में खामोशी में
बचता चला आया हूँ यहां तक अपमान और अन्याय से
छिपा दूर–दूर तक कि यह भांपना कठिन हो कहां छिपा हूँ
बहुत दिन हुए खोज नहीं पाया कुछ
गया नहीं किसी अनजान दुर्गम जगह की ओर
छुपम छुपाई खेलते बच्चों से कहता हूँ दौड़ो नहीं
तुम्हें चोट लग सकती है जगह–जगह नुकीले कोने हैं
कहीं कीलें भी निकली हुई हैं
घ्यान रखो आराम से खेलो खोजने का खेल।

दृश्य

जिनसे मिलना संभव नहीं हुआ
उनकी भी एक याद बनी रहती है जीवन में
जिनसे मुलाक़ात होने में कुछ ही पल की देर हुई
और उन वजहों की भी जो मिलने के रास्ते में आयीं
ज़रा ग़ौर से सुनें तो जिनसे कभी बात ही नहीं हुई
उनकी धीमी आवाज़ें भी सुन पड़ती हैं कानों में

वे कहते दिखते हैं कुछ
इस तरह कि हम अनजाने ही उसमें शामिल हो लें
और कुछ दूर चलें पैदल
जैसे जाते हों उनसे मिलने
चलते–चलते दिख जाता है कोई और बग़ल में चलता
और अंधेरे में भी लगता है कोई हाथ प्रेम से भरा
हमारी ओर बढ़ रहा है आहिस्ता
आते दिखते हैं कई अजनबी राहगीर
पूछते हुए पता अदेखी जगहों का
कहीं आसपास है वह जगह जहां हम गये नहीं
उसकी खुशबू आती रहती है हम तक
गौर से देखें तो दिखती हैं नदिया चौड़ी नीली
तटों पर उनके झुके हुए बादल
जिनके चेहरे पानी पर बहते जाते हैं
और सिहरन से भरे हुए वे अनजाने पुल
जिन पर तेज हवाओं की आवाजाही है
जिन्हें पार नहीं किया हमने जो छूट गये हमसे
उनकी रोशनियां जैसे स्वप्नों में जलती रहती हैं
एक अकेलापन है जिसकी याद किसी और
अकेलेपन में आती है
वह दृश्य बचा रहता है जो चारों तरफ
अदृश्य हुआ जाता है।

———————————

सात दिन का सफ़र

पहले एक साफ धुली हुई चादर की तरह सोमवार प्रकट होता है
और उम्मीद बंधती है कि इस लंबे सफर में
कुछ नये सिरे से किया जा सकता है
हम रास्ते की दिक्कतों और उन्हें लांघने की इच्छा का खाका बनाते हैं
मंगलवार एक चट्टान की तरह है
एक दुविधापूर्ण स्थिति जहां यह पता नहीं चलता
कि आगे कौन–सा मोड़ या कैसी ढलान है
और उसके लिए कितना उत्साह या
सावधानी हम में होनी चाहिए
बुधवार के पारदर्शी कांच से हम कुछ दूर तक देख सकते हैं
कि कुछ भी उस तरह आसान नहीं है जैसा हम सोचते थे
और असमंजस अनिश्चय धुंधलका पहले की ही तरह है
अगला दिन गुरुवार एक पड़ाव की तरह लगता है
क्योंकि हम आधे रास्ते तक आ गये हैं
और जान सकते हैं कि इन दुर्दिनों में
हमारी ठीक–ठीक स्थिति क्या है
और शायद इसी में से कोई रास्ता निकलता है
इसी रास्ते पर शुक्रवार सांत्वना देता हुआ आता है
लेकिन यह तय है कि हम अभी तक कुछ नहीं कर पाये हैं
और अब समय बहुत कम रह गया है
और हमने किसी को चिठ्ठी तक नहीं लिखी
इसी घबराहट में हम शनिवार में प्रवेश करते हैं
जोकि दरअसल एक तहखाना है जहां यह कहना कठिन है
कि हम चल रहे हैं या रुके हुए हैं
और जब कोई पूछता है कि क्या हाल हैं
तो हम कहते हैं बतलाने के लिए कुछ खास नहीं है
अगली सुबह इतवार आ जाता है
यह छुट्टी का दिन है चीजें अपनी प्रागैतिहासिक
निश्चेष्टता में पड़ी हैं किताबें औंधी रखी हैं
चाय ठंडी हो चुकी है सामने गंदे कपड़ों का अंबार लगा है
और बाहर दरवाजे पर किसी की धीमी दस्तक है।

तुम्हारे भीतर

एक स्त्री के कारण तुम्हें मिल गया एक कोना
तुम्हारा भी हुआ इंतज़ार
एक स्त्री के कारण तुम्हें दिखा आकाश
और उसमें उड़ता चिड़ियों का संसार

एक स्त्री के कारण तुम बार–बार चकित हुए
तुम्हारी देह नहीं गयी बेकार
एक स्त्री के कारण तुम्हारा रास्ता अंधेरे में नहीं कटा
रोशनी दिखी इधर–उधर
एक स्त्री के कारण एक स्त्री
बची रही तुम्हारे भीतर।

घर की काया

एक आईने में चलते–चलते झलक जाता है
हरेक का अकेलापन
यहां एक पुराना दरवाज़ा है
जिसे खोलने पर मनुष्य की–सी एक आवाज़ आती है
पर्दे लंबे समय से एक ही जगह
टंगे रहने की थकान में सोये हुए हैं
कुछ आगे बैठने के लिए कुछ कुर्सियां हैं
ताकि यहां लोगों को खड़े–खड़े जीवन न बिताना पड़े
मेज़ पर रखा है एक गिलास पानी
नमक और खाने के लिए कुछ
इस घर की काया में रहते आये हैं हम
बरसों से आत्मा की तरह
हम चुकाते आये किराया समय पर
सारे पैसे हमारे ख़र्च हुए इसी घर में
हमसे कहा गया दीवारें साफ़ रखें
इसमें अपना कुछ न जोड़ें कुछ न घटायें
तब भी यहां हर वक्त कोई ठकठक होती रही
कुछ था शायद कोई चौखट कोई कील
जैसा ठीक किया जाता रहा
कोई खिड़की जिसे खोलने की कोशिश होती रही
बिस्तर और तकियों के नीचे निवास करते हैं
इस घर के रोग शोक जरा मरण
किराये के घर में इकट्ठा हुए कितने ही रहस्य
कोई मेहमान यहां भूल गया अपना तौलिया या रूमाल
किसी का चश्मा पड़ा है यहां
घिसी हुई पेंसिलें बिना ढक्कन की शीशियां
इस्तेमाल की जा चुकी चीज़ों
के खोल दिख जाते हैं जब–तब
एक खिलौना गाड़ी से अलग हुआ पहिया
अचानक चलता हुआ दिख जाता है
एक गौरेया यहां बुनने में लगी रहती है अपना नीड़
एक पुकार यहां हमेशा बनी रहती है
कोई हमेशा लौट आता है
यह जानते हुए कि उसे चले जाना है
चंद्रमा और तारे रोज़ लौटते हैं इसकी छत पर
किराये के घर में हम आत्मा को झाड़ते–पोंछते रहते हैं
खुशी रात में एक फूल की तरह खिली होती है
प्रेम रात के गमले में एक पौधे की तरह उगता रहता है
जिसे रोज़ पानी देना होता है धूप में रखना होता है
बेचैनी एक बिल्ली की तरह घूमती है
कभी–कभी दिखती है
उसकी ओझल होती हुई पूंछ।

———————————

स्मृति–शेष

दिलीप कुमार : एक याद

दिलीप कुमार (1922–2021) एक ऐसी शख्सियत जिन्हें सिनेमा जगत में कभी भुलाया नहीं जा सकता। वे न केवल सर्वाधिक ख्याति प्राप्त अभिनेताओं में एक थे वरन अपने आप में एक संस्था थे।

दिलीप कुमार का वास्तविक नाम युसुफ खान था। इनका जन्म 11 दिसंबर, 1922 को पेशावर पाकिस्तान में हुआ। बचपन से ही युसुफ को अभिनय का शौक था। यही शौक उन्हें मुंबई ले आया। जहां बॉम्बे टॉकीज की मालकिन देविका रानी ने उनकी प्रतिभा को पहचाना और पहली हिन्दी फिल्म 'ज्वारभाटा' (1944) ऑफर की। उन्होंने ही उन्हें 'दिलीप कुमार' नाम दिया। दिलीप कुमार की पहली हिट हिन्दी फिल्म 'जुगनू' (1947) थी जिसका एक गाना बड़ा प्रसिद्ध हुआ।

''यहाँ बदला वफा का बेवफ़ाई के सिवाय क्या है।
मोहब्बत करके भी देखा, मोहब्बत में भी धोखा है।''

शुरुआती दौर में उनकी रोमांटिक फिल्में 'अंदाज' (1949) और 'आन' (1952) काफी हिट रही। बाद में इनका रुझान ट्रेजडी की ओर हुआ। 'दीदार' (1951), 'दाग' (1952) और 'देवदास' (1955) जैसी फिल्मों से तो इन्हें 'ट्रेजडी किंग' कहा जाने लगा। कॉमेडी *genre* में 'राम और श्याम' (1967) और 'गोपी' (1970) उल्लेखनीय है। 'मधुमती' (1957), 'नया दौर' (1957), 'पैगाम' (1959), 'मुगले आजम' (1960), 'गंगा जमना' (1961), 'आदमी' (1968), 'शक्ति' (1982) और 'मशाल' (1984) इनकी कुछ प्रसिद्ध फिल्में हैं जो अलग–अलग दौर को दर्शाती हैं।

दिलीप कुमार का विवाह मशहूर अभिनेत्री 'सायरा बनो' से हुआ। फिल्मों में योगदान के लिए भारत सरकार ने इन्हें अनेक पुरस्कार एवं सम्मान से नवाजा। इनमें प्रमुख हैं– 1991 में 'पदम भूषण' और 2015 में 'पदम विभूषण'। 1994 में भारत सरकार ने इन्हें 'दादा साहेब फाल्के' पुरस्कार से सम्मानित किया। पाकिस्तान सरकार ने इन्हें अपने सर्वोच्च सिविलियन सम्मान 'निशान–ए–इम्तियाज़' से नवाजा जिसे प्राप्त करने वाले ये एकमात्र भारतीय हैं।

अपने फिल्मी कैरियर के अलावा दिलीप कुमार राजनीतिक और सामाजिक क्षेत्रों में भी सक्रिय रहे। वे 2000 से 2006 तक राज्य सभा के सदस्य थे। अनेक अस्पताल, चौरिटेबल संस्थाओं को उनकी ओर से हमेशा मदद मिलती रही।

आज दिलीप कुमार सशरीर हमारे बीच मौजूद नहीं है। लेकिन उनकी उपस्थिति हमें हमेशा महसूस होती रहेगी। 07 जुलाई 2021 को लंबी बीमारी के बाद इनका देहांत मुंबई में हो गया। कुछ पंक्तियाँ जो हालांकि इनके ओज के साथ मेल नहीं खाती पर मौजूदा स्थिति को बड़े बेहतर तरीके से बयां करती हैं:–

''वक्त के साथ मट्टी का सफर सदियों से
किसको मालूम, कहाँ के हैं, किधर के हम हैं''।

प्रस्तुतिः
दीपक कुमार ऋषि
रक्षा सम्पदा महानिदेशालय

'आपके सरोकार'

(1)

"सम्पदा भारती" के 13वें अंक की प्रतियां प्राप्त हुई जिसके लिए धन्यवाद। उक्त अंक में उत्कृष्ट लेखों, कविताओं व रक्षा सम्पदा संगठन से संबंधित ज्ञानवर्धक जानकारियों का समावेश किया गया है, जो कि अत्यंत रोचक है। उक्त रंगारंग पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु संपादक मंडल बधाई के पात्र हैं।

एस. प्रबाकरन
उप निदेशक (राजभाषा)
प्रधान निदेशक, पुणे

(2)

हमें अति प्रसन्नता हुई कि आपने इस कार्यालय द्वारा भेजी गई स्वरचित रचना को "सम्पदा भारती" के 13वें अंक में प्रकाशित किया, इसके लिए आपको एवं संरक्षक, मुख्य संपादक, संपादक मंडल समेत पत्रिका के प्रकाशन में सहयोग प्रदान करने वाले सभी कर्मियों को धन्यवाद। "सम्पदा भारती" का यह अंक इस कार्यालय के अधिकारी एवं सभी कर्मचारियों द्वारा सराहा और पसंद किया गया। इसमें प्रकाशित लेख, कविता, संस्मरण एवं कहानियाँ ज्ञानवर्धक एवं रोचक हैं। अन्य लेखकों ने भी रचनाओं के प्रस्तुतिकरण में अपूर्व कौशल का परिचय दिया है। इनके लेखकों को हमारा साधुवाद।

विश्वास है कि इस कार्यालय के रचनाओं को प्रकाशित करने में आपका यह प्रयास निरंतर जारी रहेगा और "सम्पदा भारती" किरण के रूप में इस गृह–पत्रिका की एक प्रति हमें भविष्य में भी अबाध रूप से प्राप्त होती रहेगी।

रॉबिन बलेजा, भा.र.स.से.
रक्षा सम्पदा अधिकारी, कोलकाता

(3)

"सम्पदा भारती" के 13वें अंक की प्राप्ति दिनांक 28 सितम्बर, 2020 को हुई। पत्रिका में प्रकाशित लेख, कहानियाँ तथा कविताएं ज्ञानवर्धक एवं रोचकपूर्ण जानकारी प्रस्तुत करते हैं। पत्रिका के शब्द सरल एवं सुबोध हैं। पत्रिका में प्रकाशित रचनाएं प्रासंगिक होने के साथ–साथ मर्मस्पर्शी भी हैं।

जहां 'दिल्ली–लद्दाख यात्रा संस्मरण' एवं 'लेह–लद्दाख' (लेख) के प्राकृतिक सौन्दर्य का वर्णन अतुलनीय है, वहीं समस्तीपुर–कोलकाता यात्रा संस्मरण का वर्णन भी बेहद ही मर्मस्पर्शी है। पत्रिका में 'कर्तव्य पालन और त्याग' शीर्षक लेख तथा 'अभ्यास का महत्व' शार्षक कहानी से हमें त्याग एवं नैतिकता की भावना की सुन्दर सीख मिलती है। 'पर्यावरण और भाषा बदलते परिवेश में भाषा परिवर्तन और देश का विकास' नामक लेख भाषा के महत्व को दर्शाते हैं। इसके अतिरिक्त पत्रिका में पर्यावरण के महत्व एवं उपयोगिता का वर्णन ज्ञानवर्धक है। रक्षा सम्पदा महानिदेशालय की विभिन्न गतिविधियों की फोटो के माध्यम से जीवंत प्रस्तुति सराहनीय है।

राजभाषा हिन्दी को लोकप्रिय बनाने में इस पत्रिका का प्रकाशन एक सराहनीय प्रयास है। पत्रिका से संबंधित सभी रचनाकार और संपादक मंडल बधाई के पात्र हैं। आशा है कि पत्रिका के भावी अंक भी इसी भांति रचनाकारों और पाठकों का उत्साहवर्धन करते रहेंगे।

राजेश्वर प्रसाद
उप निदेशक (राजभाषा)
एकीकृत मुख्यालय (नौसेना)

(4)

"सम्पदा भारती" के 13वें अंक की प्रति प्राप्त हुई। हर अंक की भांति इस अंक में भी लेखन की विविध विधाओं को समुचित स्थान दिया गया है। स्त्री अधिकारों की पैरोकार 'इस्मत चुगताई' की जीवनी से संबंधित स्तंभ काफी ज्ञानवर्धक

एवं प्रेरक है। 'पेड़ों की महत्ता' में पारिस्थितिक संतुलन बनाए रखने में पेड़ों के संरक्षण के महत्व को बखूबी समझाया गया है। 'मृत्युंजय' कविता देश–भक्ति भाव से सराबोर कर देती है। 'अनपढ़ माँ – एक कड़वा सच' पढ़कर एक बार फिर हम में माँ के समक्ष नतमस्तक होने का भाव पैदा होता है। 'छांव में आना, छांव में जाना' कहानी काफी रोचक लगी। 'आम का पेड़ और वह बालक', कहानी मन को छू जाती है। 'कागज की कश्ती' में भौतिकतावादी लक्ष्यों को पाने की अंधी दौड़ में व्यस्त आधुनिक जीवन के यथार्थ को बहुत ही सहजता से दर्शाया गया है। कुल मिलाकर पत्रिका की विषय – वस्तु अत्यंत ज्ञानवर्धक, उपयोगी व उच्च कोटि की है। आशा है कि आप संघ की राजभाषा हिन्दी के सम्यक प्रचार–प्रसार की दिशा में इसी तरह आगे बढ़ते रहेंगे। पत्रिका के उज्जवल भविष्य के लिए असीम शुभकामनाएं।

जनक सेहरा
सहायक निदेशक (राजभाषा), एम.टी. 17

(5)

"सम्पदा भारती" का 13वां अंक प्राप्त हुआ इसके लिए सहर्ष धन्यवाद। यह अंक अपने कलेवर, साज–सज्जा, मुद्रण स्पष्टता के कारण बहुत ही आकर्षक और मनोहरी बन पड़ा है। पत्रिका में सम्मिलित सामग्री उच्च स्तर की है। विभिन्न प्रकार की रचनाओं से सजी आपकी पत्रिका हिन्दी कार्यान्वयन की दिशा में एक स्वर्णिम प्रयास है। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं उच्च कोटि की अत्यंत रोचक, ज्ञानवर्धक, मनोरंजक, पठनीय एवं सराहनीय है। इस अंक में प्रकाशित आलेख, कविताएं, कहानियाँ, संस्मरण आदि अत्यंत स्तरीय एवं ज्ञानवर्धक हैं। राजभाषा हिन्दी के प्रचार–प्रसार में विभागीय रचनाकारों को उत्कृष्ट सृजनात्मक मंच प्रदान करने में आपकी इस पत्रिका की भूमिका महत्वपूर्ण बन रही है। यह बहुत ही सकारात्मक प्रक्रम है। पत्रिका भविष्य में और बेहतर करे यही कामना है। पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

सुभाष चंद यादव, हिन्दी अधिकारी
महालेखाकार कार्यालय, चेन्नैई तमिलनाडु

(6)

"सम्पदा भारती" के 13वां अंक प्राप्त हुआ, आभार। इसे पढ़ने के बाद मैं इस निष्कर्ष पर पहुंचा हूँ कि "सम्पदा भारती" का यह अंक सर्वश्रेष्ठ 02 अंकों में से एक है। इसका आवरण पृष्ठ बहुत ही आकर्षक है। इसका नया कलेवर मन को छू लेता है। इसके सभी लेख एवं कविताएं भी इतने अद्वितीय हैं कि उनमें से कुछ का चयन करना मुश्किल कार्य हैं। लेकिन मुझे जो लेख और कविता सर्वाधिक पसंद आए, वे निम्नलिखित हैः– 'पर्यावरण और भाषा', 'ग्लोबल वार्मिंग', 'अनपढ़ माँ–एक कड़वा सच', 'कागज की कश्ती', 'पेड़ों का महत्व', 'बचपन का मन', 'आधी आबादी–भारतीय परिपरेक्ष्य', 'पेड़ ही जीवन', 'विदाई', 'आम का पेड़ और वह बालक'।

इसके बोलते चित्र रक्षा सम्पदा संगठन में हो रहे कार्यों को स्वतः ही प्रकट करते हैं। हिन्दी पखवाड़े के दौरान आयोजित हिन्दी प्रतियोगिताओं के सफल प्रतियोगियों की सूची दर्शाती है कि रक्षा सम्पदा संगठन में सरकार की राजभाषा नीति को प्रभावी रूप से कार्यान्वित करने के लिए हिन्दी जानने वाले अधिकारियों व कर्मचारियों की काफी संख्या है। माननीय संपादक जी से अनुरोध है कि वे अगले अंक में 20 हजार शब्द हिन्दी में लिखने वाली प्रतियोगिता के सफल अधिकारियों /पदाधिकारियों का नाम भी प्रकाशित करने की कृपा करें।

मैं "सम्पदा भारती" के इस अंक को सर्वोत्तम अंक बनाने के लिए प्रधान संरक्षक माननीय महानिदेशक महोदया और संरक्षक एवं परामर्शदाता मण्डल को उनके मार्गदर्शन एवं प्रेरणा तथा किसी पत्रिका की रीढ़ उसके संपादक एवं सम्पादन सहयोगियों को उनकी समर्पित सेवा के लिए हार्दिक धन्यवाद देता हूँ। आशा करता हूँ कि अगला अंक इससे भी बेहतर होगा।

धनसिंह वर्मा
पूर्व सहायक निदेशक (राजभाषा)

रक्षा सम्पदा भवन
RAKSHA SAMPADA BHAWAN